www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ... | पत्र नहीं; मित्र | संपर्क : deshbandhubpl1@yahoo.co.in

देशबन्धु

वर्ष – 34 I अंक – 256 I भोपाल, शनिवार 16 सितंबर 2023 I पृष्ठ–8 I मूल्य – 3.00 रुपए

पटरियों पर काम कर रहे गैंगमेन से टकराया इंजन, मौके पर हुई मौत पृष्ठ 2

- जनता के सवालों के लिए शाहरुख ने बॉलीवुड में बनाई नई राह
- क्या है इंडिया गठबंधन साझेदारों के बीच सीट बंटवारे का सबसे अच्छा तरीका? पृष्ठ 4

- भारी बारिश से नदी-नाले उफान पर, पारसढोह बांध के 4 गेट खोले पृष्ठ 6

राज्यपाल पटेल लंदन में अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित पृष्ठ 8

माखनलाल पत्रकारिता विवि के दीक्षांत समारोह में बोले उपराष्ट्रपति

प्रेस की स्वतंत्रता के साथ उसका जिम्मेदार होना भी महत्वपूर्ण

विश्वविद्यालय के नए परिसर का लोकार्पण

भोपाल, देशबन्धु। स्वतंत्र प्रेस लोकतांत्रिक राष्ट्र की रीढ़ है। प्रेस की स्वतंत्रता के साथ प्रेस का ज़िम्मेदार होना भी महत्वपूर्ण है। सकारात्मक समाचार को तरजीह देना आवश्यक है। इससे समाज में हो रहे सकारात्मक बदलाव को गति प्राप्त होती है। यह बात उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कही। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के चतुर्थ स्तंभ के रूप में मीडिया का कार्य शासन के सभी अंगों को सचेत करना, सच्चाई, सटीकता एवं निष्पक्षता के साथ जनमानस तक जानकारी देना है। श्री धनखड़ आज यहां माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। वे विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष भी है। उपराष्ट्रपति ने बिशनखेड़ी स्थित नवीन परिसर का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में जनसम्पर्क एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री राजेन्द्र शुक्ल और उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री धनखड़ ने समारोह में विश्वविद्यालय के 2018 से 2023 तक के 23 शोधार्थियों को उपराष्ट्रपति द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गयी। इसके साथ ही मीडिया, मीडिया प्रबंधन, कंप्यूटर एवं सूचना प्रोद्योगिकी पाठ्यक्रम के लगभग 450 विद्यार्थियों को विभिन्न विधाओं में उपाधि प्रदान की गई।

उपराष्ट्रपति के हाथों हुआ सम्मान

उपराष्ट्रपति द्वारा सत्र 2020–22 में विश्वविद्यालय के फ़िल्म प्रोडक्शन में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए सुश्री वागेश्वरी नंदिनी को स्व. डॉ. अनिल चौबे स्मृति पदक, 21 हज़ार रुपये का चेक एवं प्रमाण पत्र, सत्र 2020–22 में एम.ए. विज्ञापन एवं जनसंपर्क पाठ्यक्रम में सर्वोच्च सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए सुश्री श्वेता रानी को स्व. अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव स्मृति पदक एवं प्रमाण पत्र और सत्र 2021–23 में विश्वविद्यालय के पत्रकारिता स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए सुश्री अंजलि को स्व. डॉ. रामेश्वर दयाल तिवारी स्मृति पदक, 11 हज़ार रुपये का चेक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय का किया प्रतिवेदन प्रस्तुत

विवि. के कुलपति डॉ. के.जी. सुरेश ने विश्वविद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं आगामी कार्ययोजना की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। कुलपति द्वारा उपाधि प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों को दीक्षोपदेश प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तकनीकी व्यवधान के कारण कार्यक्रम में वर्चुअल रूप से शामिल नहीं हो सके। सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, विधायक पी.सी. शर्मा एवं विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, विद्यार्थी उपस्थित थे। मंच संचालन विवेक सावरीकर ने किया। इस दौरान उपराष्ट्रपति श्री धनखड़ ने पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ के साथ विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में कदंब के पौधों का रोपण किया।

मुख्यमंत्री ने टीकमगढ़ की सभा को वर्चुअली संबोधित कर योजना का किया शुभारंभ

अब साढ़े 4 सौ में हर माह मिलेगा रसोई गैस सिलेंडर

टीकमगढ़, देशबन्धु। अब लाड़ली बहनों को सिर्फ साढ़े 4 सौ रुपए में रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध होगा, आज सिलेंडर रिफिलिंग योजना का शुभारंभ हुआ। साई हॉकी स्टेडियम टीकमगढ़ में आयोजित कार्यक्रम को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ओंकारेश्वर से वर्चुअली संबोधित किया। श्री चौहान निरंतर हो रही वर्षा के कारण कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं हो पाए। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी लाड़ली बहनों से राखी पर 450 रूपए में गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने का वादा किया था, यह भी कहा था कि यह सुविधा जारी रखी जाएगी। मैंने वह वचन पूरा करते हुए इसके लिए योजना लागू कर दी है। अब लाड़ली बहनों और उज्जवला योजना की हितग्राही बहनों को प्रतिमाह एक सिलेंडर 450 रूपए की दर पर उपलब्ध होगा।

योजना की पहली लाभार्थी टीकमगढ़ जिले की जतारा तहसील के बिलगांय गांव की श्रीमती लक्ष्मी रैकवार योजना की पहली हितग्राही बन गई है। केन्द्रीय सामाजिक न्याय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार और वन राज्य मंत्री राहुल सिंह ने श्रीमती लक्ष्मी रैकवार से 450 रुपए में घरेलू गैस सिलेंडर प्राप्त करने के लिए आवेदन की प्रक्रिया पूरी करवाई। इसी प्रकार टीकमगढ़ के वार्ड नं. 26 की निवासी योजना की दूसरी उज्जवला योजना की हितग्राही श्रीमती अभिलाषा साहू से पंजीयन प्रक्रिया की पूर्ति करवाई। श्री चौहान ने टीकमगढ़ में 268 करोड़ की लागत से निर्मित होने वाले नवीन चिकित्सा महाविद्यालय निर्माण का भूमि-पूजन किया।

मुख्यमंत्री ने ओंकारेश्वर में की पूजा-अर्चना

शंकराचार्य की 108 फीट ऊंची प्रतिमा का 18 को करेंगे अनावरण

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान 18 सितंबर को ओंकारेश्वर में 108 फीट ऊंची आदि गुरु शंकराचार्य की बहु धातु की प्रतिमा का अनावरण करेंगे। मुख्यमंत्री ने आज ओंकारेश्वर में आदिगुरु शकराचार्य की मूर्ति के अनावरण कार्यक्रम के लिए वैदिक रीति-रिवाज से पूजा-अर्चना की और संतों के साथ यज्ञ शाला में आहुति अर्पित कर विशेष धार्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ किया।

प्रियंका गांधी की केंद्र सरकार से मांग

हिमाचल में राष्ट्रीय आपदा घोषित करें

- केदारनाथ की तर्ज पर की जाए आर्थिक मदद
- मोदी को पत्र लिख आर्थिक मदद देने का किया आग्रह

शिमला, देशबन्धु। हिमाचल प्रदेश से लौटने के बाद कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है। इसमें उन्होंने प्रधानमंत्री से हिमाचल को आपदा की इस घड़ी में आर्थिक मदद देने का आग्रह किया और साल 2013 में केदारनाथ त्रासदी की तर्ज पर हिमाचल में भी राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग प्रधानमंत्री से की। उन्होंने कहा कि देवभूमि हिमाचल में प्राकृतिक आपदा से भारी तबाही हुई है। पहाड़ के लोग अभूतपूर्व संकट का सामना कर रहे हैं।

प्रियंका ने लिखा कि पिछले दिनों वह शिमला, कुल्लू, मनाली और मंडी में आपदा पीड़ितों से मिली। हर तरफ हुई तबाही देखकर बहुत दु:ख हुआ। प्रियंका गांधी का यह पत्र वेस्ट उत्तर प्रदेश कांग्रेस सेवादल के ट्वीटर अकाउंट से भी पोस्ट किया गया है। यह लेटर सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। दैनिक भास्कर इसकी पुष्टि नहीं करता।

आपदा में 428 लोग गंवा चुके जान

अब तक इस आपदा में 428 लोगों ने जान चली गई है। कई ऐसे परिवार हैं जिनके सभी सदस्य इस आपदा में संसार छोड़ गए है। राज्य में 16,000 से ज्यादा पालतू मवेशी भी इस आपदा का शिकार हुए हैं। इनमें 10,000 से अधिक पोल्ट्री बर्ड और 6,000 से अधिक गाय, भैंसे व अन्य पालतू जानवर हैं। 13,000 से ज्यादा घर और मकान पूरी तरह या आंशिक रूप क्षतिग्रस्त हुए हैं। शिमला से परवाणू एनएच और कुल्लू-मनाली-लेह हाईवे पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए हैं। प्रदेश में भारी बारिश से करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ है। इस तबाही से निपटने के लिए राज्य सरकार अपने स्तर पर हर संभव प्रयास कर रही है।

सुक्खू ने मिसाल पेश की

हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू ने आपदा में मिसाल पेश की है। मुख्यमंत्री ने अपने निजी खाते से 51 लाख रुपए की राशि मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष-2023 में दान की है। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी कमलेश ठाकुर के साथ मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना को यह चेक भेंट किया। मुख्यमंत्री सुक्खू ने कहा कि जब छोटे-छोटे बच्चे अपने गुल्लक से राहत राशि में पैसा दे सकते हैं, तो वह अपनी जमा नकदी क्यों नहीं दे सकते। प्रदेश को इस वक्त सबकी मदद की जरूरत है। इसे देखते हुए उन्होंने अपने खाते में जमा राशि आपदा राहत कोष में देने का निर्णय लिया है। इससे पहले भी मुख्यमंत्री सुक्खू इस तरह से मदद करते रहे हैं।

गुल्लक से राहत कोष में दान कर रहे छोटे बच्चे

प्रियंका गांधी ने लिखा कि हिमाचल की जनता को राज्य सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संकट का सामना करते हुए देखा है। लोग श्रमदान करके सड़कें बहाल कर रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे अपने गुल्लक से दान देकर मुख्यमंत्री राहत कोष में सहायता कर रहे हैं। मोदी को लिखे पत्र में प्रियंका ने आगे लिखा की पहाड़ों की जनता की इस भावना को देखते हुए उन्होंने पत्र लिखने का फैसला किया।

शैलचित्रों पर डॉ. मीनाक्षी के काम की चर्चा होती है दुनिया भर में

चित्रकला में गहरी रुचि के चलते डॉ. मीनाक्षी दुबे पाठक गुफाओं और शैलाश्रयों में जा पहुंची, हजारों साल पहले जहां आदिमानव रहा करते थे और अपने क्रियाकलाप, अपने आसपास के दृश्य चट्टानों पर उकेरा करते थे। शैलचित्रों को ढूंढना और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए प्रयास करना उनके जीवन का मकसद बन गया है। पिछले 35 सालों से वे भारतीय शैलचित्रों की खोज और अध्ययन के साथ ही संरक्षण, उन पर आयोजित कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों में शामिल होती रही हैं। मीनाक्षी जी की कोशिशों से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के अनेक शैलाश्रयों का पता चला। पचमढ़ी के निकट सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान के 10 शैलाश्रयों को वन विभाग, मप्र की मदद से उन्होंने संरक्षित करवाया। उनके एक फ्रेंच साथी पुरातत्वविद स्टीफन ने उनके अनुसन्धान पर आधारित 'सेन्ट्रल इन्डियन रॉक आर्ट एण्ड ट्राइबल आर्ट' विषय पर फिल्म बनाई, जिसका प्रदर्शन 'इंटरनेशनल अर्कियोलॉजी फिल्म फेस्टिवल, नियोन (स्विट्ज़रलैंड) में किया गया, जहाँ इसे न केवल पुरस्कृत किया गया, बल्कि मीनाक्षी जी को पर्चा पढ़ने के लिए भी वहां आमंत्रित किया गया। कुछ समय पहले **स्वयंसिद्धा डॉट कॉम** के लिए डॉ. मीनाक्षी से **सारिका ठाकुर** की चर्चा हुई, प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश :

• ***शैलचित्रों से लगाव कैसे हुआ?***

लगाव की शुरुआत तो पहाड़ और जंगलों से हुई। पिताजी (पुरुषोत्तम दास दुबे) सरकारी अधिकारी थे। उनके तबादलों के कारण मुझे भी अलग-अलग जगहों पर घूमने के मौके खूब मिले। छुट्टियों में वे अक्सर किसी जंगल के आसपास पिकनिक के लिए लेकर जाते। जंगलों और पहाड़ों से उसी समय मेरी दोस्ती हो गई।

• ***शैलचित्रों की खोज और उनका विश्लेषण जिस तरह आप कर रही हैं, क्या इसलिए कोई ख़ास तैयारी करनी पड़ी?***

तैयारी तो कोई तब करे जब पता हो कि करना क्या है। कोई बच्चा जिस तरह डॉक्टर या इंजीनियर बनने की कोशिश करता है, वैसे नहीं बल्कि धीरे-धीरे ये शौक मेरी ज़िन्दगी में शामिल हुआ, फिर ज़िन्दगी का ज़रुरी हिस्सा बन गया। अब यह मेरे लिए काम से कहीं ज़्यादा अहमियत रखता है।

• ***और यह सब किस तरह हुआ?***

मैंने मानविकी (ह्यूमैनिटीज) के विषय लेकर इटारसी के सेंट जोसेफ़ कॉन्वेंट से हायर सेकेण्डरी किया। 1983-85 में जबलपुर होम साइंस कॉलेज से मनोविज्ञान, भूगोल एवं फ़ाइन आर्ट लेकर ग्रेजुएशन किया, जिसके बाद खैरागढ़ विश्वविद्यालय से 'फाइन आर्ट्स' में मास्टर्स किया। चित्रकला की गहराई समझती थी और तब तक शैलचित्रों से से भी कुछ-कुछ परिचय तो हो ही चुका था। मन में उन्हें और करीब से देखने, जानने और समझने इच्छा थी।

• ***फिर!***

फिर मैंने नेशनल फेलोशिप की परीक्षा पास की और 'स्टडी ऑफ़ प्री हिस्टोरिक रॉक पेंटिंग्स ऑफ़ पचमढ़ी' विषय पर शोध करने लगी। इस काम में मुझे खैरागढ़ में चित्रकला प्रोफ़ेसर उमेश मिश्र जी और फिर डॉ. वाकणकर का मार्गदर्शन मिला। इस विषय पर शोध करना और ऐसे विभूतियों का मार्गदर्शन मिलना सचमुच मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी। इस शोधकार्य के दौरान ही जैसे महसूस होने लगा था कि मैं इसी काम के लिए बनी हूँ।

• ***तब तो आगे क्या करना है, ये बिलकुल साफ़ हो गया होगा?***

कह सकते हैं भविष्य की धुंधली तस्वीर साफ़ हो गयी लेकिन हालात बदल गए। उसी समय वाकणकर सर का निधन हो गया। मैं लम्बे समय तक सदमें में रही थी। फिर जीवन में भी बदलाव हुए। मेरी शादी हो गयी। मेरे पति सेना में अधिकारी थे। कई कॉलेजों से पढ़ाने के लिए ऑफर भी आए लेकिन आप जानती हैं फौजी तो एक जगह टिककर रहते नहीं तो नौकरी के बारे में तो मैं सोच भी नहीं सकती थी।

• ***फिर रास्ता कैसे निकाला?***

कुछ कोशिश और कुछ किस्मत ने साथ दिया और रास्ते मिलते चलते गए। 1990 की बात है, मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा इटली में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें मैं भी आमंत्रित थी। वहां जाकर बहुत अच्छा लगा। फिर मुझे लगा कि फौजी की पत्नी होने के नाते जो मुझे अवसर मिल रहे हैं उसका फायदा उठाया जाए।

• ***समझ में नहीं आया, फौजी की पत्नी होने का क्या फायदा मिला आपको?***

जहाँ-जहाँ मेरे पति की पदस्थापना होती, मैं वहां के आसपास वाले जंगलों और पहाड़ों में शैलचित्र ढूंढती, रिकॉर्डिंग करती, तस्वीरें लेती और उन पर लेख लिखकर दुनिया के प्रतिष्ठित संस्थानों को भेजती। एक फौजी की पत्नी होने के नाते मैं अपने अध्ययन कार्य के लिए उन सुदूर क्षेत्रों में भी पहुँच जाती जहाँ तक आम नागरिकों की पहुँच नहीं होती। बाद में तो कई बार मेरी दोनों बच्चियां भी साथ होतीं, जो या तो खेलतीं या शैलाश्रयों आदि के नाप जोख में मेरी मदद करतीं।

• ***ये तो गज़ब सोच थी आपकी....***

हाँ, बिलकुल और जल्दी ही इसके नतीजे भी मिलने शुरू हो गए। शुरुआती दौर में ही मुझे एप्को (पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन) की ओर से एक प्रोजेक्ट मिल गया जिसमें मुझे सतपुड़ा बायोस्फियर के शैलचित्रों का दस्तावेजीकरण करना था। उनके अनुसंधान कार्य के बाद 10 शैलाश्रयों को संरक्षित किया गया। रखरखाव के बाद सैलानी भी आने लगे, जिससे विभाग को आमदनी भी होने लगी। एप्को के सौजन्य से ही पचमढ़ी के ऐतिहासिक भवनों के दस्तावेजीकरण का काम भी मैंने आगे चलकर किया। इस तरह गृहस्थी और शैलाश्रयों - दोनों का साथ मैं निभाने लगी।

• ***अपने कुछ और महत्वपूर्ण खोजों के बारे में बताएं।***

2000 से 2004 तक मेरे पति की पोस्टिंग लेह, लद्दाख में रही। वहां सैन्य अधिकारी परिवार साथ नहीं रख सकते, लेकिन मुझे पांच महीने पति के साथ रहने की इजाज़त मिल गई। इस दौरान वहां के पहाड़ों में क्षतिग्रस्त हो रहे कई शैलचित्र मुझे मिले जिन्हें मैंने संरक्षित भी करवाया। ये शैलचित्र पाकिस्तान और चीनी सीमा के आसपास स्थित पहाड़ों की गुफा और कंदराओं में बने हुए हैं। भारतीय सेना की मदद से लेह के 'कारू' नामक जगह पर मेरी कोशिशों की वजह से 'त्रिशूल पेट्रोग्लिफ्स पार्क' की स्थापना हुई। वहां स्थापित सेंटर ऑफ़ बुद्धिस्ट स्टडीज़ की सेमिनारों में भी मैं जाया करती थीं। एक बार ऐसे ही एक सेमिनार में दलाई लामा से मेरी भेंट हुई। यह भेंट आज भी मेरी स्मृतियों में अंकित है।

इसके अलावा 2015 से 2017 तक मैंने पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ की एक परियोजना के अंतर्गत वहां के शैलचित्रों पर गहन शोधकार्य किये। इस अध्ययन के निष्कर्षों को मैंने अपनी तीसरी पुस्तक के रूप में आकार दिया। राज्य सरकार इस शोधकार्य की मदद से छत्तीसगढ़ के कई शैलाश्रयों को संरक्षित करने की योजना बना रही है, साथ ही इसकी मदद से शैलचित्रों से सम्बंधित कई भ्रांतियां भी दूर हुईं। फिर 2017 से 2019 तक मैं इंटेक (इन्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चर), नई दिल्ली से जुड़कर मध्यप्रदेश के शैलाश्रयों व शैलचित्रों पर काम करती रही। मेरा मानना है कि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में इक्का-दुक्का अपवादों को छोड़ दिया जाए तो एक भी ज़िला ऐसा नहीं जहाँ शैलचित्र न मिलते हों।

• ***शैलाश्रयों और शैलचित्रों की विशेषज्ञता को लेकर तो विदेशों में भी आपके काम की चर्चा होती है, इसकी शुरुआत कैसे हुई?***

वर्ष 2009 में ब्रेडशॉ फाउंडेशन की तरफ से मुझे सन्देश मिला कि वे मेरे शोधकार्यों का विवरण अपनी वेबसाइट पर डालना चाहते हैं। फाउंडेशन से जुड़ने के दो-तीन साल बाद मैं उस संस्था में सलाहकार समिति की सदस्य बन गई। यह फाउंडेशन दुनिया भर के पुरातात्विक स्थलों और शैलचित्रों पर काम करती है। तब तक बच्चे भी बड़े हो गए थे और काम करने मैं ज्यादा समय निकाल पा रही थी। 2010 में मुझे फ्रांस में आयोजित होने वाले सम्मेलन में भेजा गया जिसे इन्डियन कौंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस ने प्रायोजित किया था। इसी सम्मेलन में मेरी भेंट प्रागैतिहासकार डॉ. जॉन क्लॉट से हुई। हम दोनों ही एक दूसरे के काम और अनुभव से प्रभावित हुए और दोनों साथ मिलकर काम करने लगे। इसके बाद मेरे काम में और भी विविधता आई।

• ***विविधता से क्या आशय है आपक? शैलचित्रों के अलावा किसी अन्य क्षेत्र में प्रवेश कर गईं आप?***

शैलचित्र मात्र चित्र नहीं है यह प्रागैतिहासिक मानव की संस्कृति है और यकीन मानिये कई आदिवासी समुदायों में आज भी इनकी झलक मिलती है। मैं उनके दिमाग को पढ़ना चाहती थी। वर्ष 2011 से मैं डॉ. क्लॉट के साथ मिलकर शैलचित्रों के साथ-साथ आदिवासी जीवन में निहित सांस्कृतिक विशिष्टताओं और उनकी प्रकृति का अध्ययन करने लगी। दो साल की कड़ी मेहनत के बाद यह शोध 'इमेजेज़ ऑफ़ गॉड' नाम से फ्रांस के एक प्रकाशन से प्रकाशित हुआ, जिसके लोकार्पण के लिए फ्रांसीसी दूतावास, दिल्ली ने मुझे आमंत्रित किया। वर्ष 2014 में मुझे फ्रांस सरकार के संस्कृति मंत्रालय एवं संचार विभाग से 'शेवेलियर डेस आर्ट्स एट लेट्रेस'-नाईट इन द नेशनल आर्डर ऑफ़ आर्ट्स एण्ड लेटर्स' के सम्मान से नवाज़ा गया। शैलचित्रों के विषय पर यह सम्मान प्राप्त करने वाली मैं पहली भारतीय हूँ।

• ***अपनी किताबों के बारे में कुछ बताएं।***

मेरी अब तक पांच किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं, छठवीं पर काम चल रहा है।

देश के दिल मध्यप्रदेश में अनगिनत ऐसी स्त्रियाँ हैं, जिन्होंने अपने संघर्ष, परिश्रम और प्रतिभा के बल पर एक ख़ास मुकाम हासिल किया है। इस साप्ताहिक श्रंखला में आप प्रदेश की उन महिलाओं से परिचित हो सकेंगे, जिनके बारे में आपने पहले शायद कभी सुना या पढ़ा नहीं होगा।

कॉपीराइट : www.swayamsiddhaa.com

सार समाचार

जन आशीर्वाद यात्रा को लेकर चांचौड़ा में हुई बैठक

गुना, देशबन्धु। जनआशीर्वाद यात्रा की आगमनी की तैयारियों को लेकर विधानसभा चांचौड़ा के भाजपा कार्यालय में बैठक संपन्न हुई। बैठक में बीनागंज एवं कुम्भराज मण्डल के कार्यकर्ता शामिल हुए। इस दौरान बैठक में भाजपा प्रत्याशी प्रियंका पैंची ने शामिल होकर यात्रा की तैयारियों का जायजा लिया। इसी बीच भाजपा की नीतियों से प्रभावित होकर नगर परिषद चांचौड़ा-बीनागंज के वार्ड 14 से निर्दलीय पार्षद गेंदी बाई पटलन ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

इस अवसर पर पार्टी के सभी लोगो द्वारा उनका स्वागत किया गया। साथ ही बैठक में जनआशीर्वाद यात्रा को सफल बनाने और व्यवस्थाओं के संदर्भ में सभी से चर्चा की। बैठक में उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए प्रियंका पैंची ने कहा कि क्षेत्र में जनआशीर्वाद यात्रा को आप सभी के सहयोग से भव्य रूप प्रदान करना है। इस जन आशीर्वाद में असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा एवं राज्यसभा सांसद डॉ किरोड़ी लाल मीणा मुख्य रूप से यात्रा के दौरान क्षेत्रवासियों को संबोधित करेंगे। यह यात्रा ऐतिहासिक होनी चाहिए। यह बहुत खुशी की बात है कि यात्राओं के दौरान एक दिन में कई सभाएं हो रही हैं। जिससे सभी से क्षेत्र की जनता से रूबरू होने का शोभाग्य भी सभी को प्राप्त हो रहा है। इस दौरान विधासभा के मंडलों के सभी मोर्चे के पदाधिकारी,कार्यकर्ता सहित वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता, सदस्य मौजूद रहे।

रोटरी रॉयल क्लब ने मनाया अभियंता दिवस, संस्था सदस्यों को किया सम्मानित

गुना, देशबन्धु। भारत रत्न इं.मोक्षगुंद्दम विश्वेसरैया की जयंती के अवसर पर रोटरी क्लब गुना रॉयल ने अभियंता दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया। संस्था अध्यक्ष रोट अजय राठौर ने बताया कि संस्था ने अभियंता दिवस पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। जिसमें राष्ट्र निर्माण और उसके विकास में अभियंताओं के योगदान पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में अभियंता सदस्य अजिताभ श्रीवास्तव, पंकज जैन, धर्मेंद्र बांझल, अंकुर श्रीवास्तव, अमित सिंह ठाकुर, अमन जैन, निखिल छतरपुरिया को पुष्पहार एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर रोटरी रॉयल के सदस्य महावीर जैन, अवधेश रघुवंशी, सुदीप जैन, सोनू पाटनी, रितेश जैन, सुयश देव जितेंद्र वर्मा आदि उपस्थित रहे। आभार सचिव विशाल श्रीवास्तव द्वारा व्यक्त किया गया।

आदतन अपराधी धर्मेन्द्र लोधा हुआ जिलाबदर

गुना, देशबन्धु। कलेक्टर तरुण राठी द्वारा जिले में शांति व्यवस्था एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु पुलिस अधीक्षक के प्रतिवेदन अनुसार विभिन्न अपराधों में लिप्त एक अपराधी को जिला बदर किये जाने हेतु आदेश जारी कियागया हैं । जारी आदेशानुसार अनावेदिक धर्मेन्द्र लोधा उर्फ मुर्गा पुत्र तोरन सिंह लोधा निवासी ग्राम उमरिया थाना कैंट जिला गुना के विरूद्ध विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज होने पर तीन माह की कालावधि के लिए जिला बदर किया गया हैं। अनावेदिक जिला बदर की अवधि में गुना जिले से लगे हुए समीपवर्ती जिला अशोकनगर, शिवपुरी, विदिशा एवं राजगढ़ की भौगौलिक सीमाओं से निष्कासित करने एवं बिना किसी विधि संगत एवं सक्षम आदेश/अनुमति के गुना जिले की सीमाओं के अंदर प्रवेश नही कर सकेगा ।

समाजसेवी और प्रशासन की टीम ने छुड़ाए 13 मरीज

मानसिक बीमारों को बंधुआ मजदूर बनाकर दबंग कर रहे थे शोषण

गुना, देशबन्धु। कुंभराज थाना क्षेत्र के अनेकों गांवों में मानसिक रूप से अस्वस्थ्य लोगों को गांवों के दबंगों द्वारा बंधक बंधुआ मजदूर बनाकर काम कराए जाने का मामला सामने आया है। मात्र रोटी-पानी के नाम पर ही इन मानसिक दिव्यांगों के साथ लोगों ने क्रूरता की हदें पार करते हुए जमकर शोषण किया जाता है।

शुक्रवार को समाजसेवी प्रमोद भार्गव के साथ पुलिस, राजस्व एवं श्रम विभाग की टीम ने एक ही गांव से करीब 13 लोगों को रेस्क्यू कर इन दबंगों के कब्जे से छुड़ाया है। यहां से इन सभी को जिला मुख्यालय लाया गया। जहां उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थ्य का चेकअप कर पड़ोसी जिले शिवपुरी के अपना घर आश्रम भेजा जाएगा। दरअसल कुंभराज, चांचौड़ा क्षेत्र के अनेकों गांवों में मानसिक रूप से कमजोर एवं अस्वस्थ्य लोगों को दबंगों ने बंधक बना रखा है। यह दबंग इनसे बंधुआ मजदूरों की तरह सिर्फ रोटी-पानी के बदले जी तोड़ काम कराते हैं। इन भटके मानसिक स्वस्थ्य लोगों में चांचौड़ा के आसपास गांवों के अलावा राजस्थान, उप्र के भी पीड़ित शामिल हैं। शुक्रवार को कुंभराज थाने के मानकपुर चौक से ही 13 ऐसे पीड़ितों को रेक्स्यू कर दबंगों के चंगुल से छुड़ाया गया। जब इनका उपचार एवं जाचें जिला अस्पताल में चल रही हैं। इस बारे में समाजसेवी प्रमोद भार्गव ने पूर्व में कई बार प्रशासन को अवगत कराया। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक से चर्चा कर कार्रवाई की मांग की। जिसके बाद शुक्रवार को वह स्वयं एवं पुलिस, राजस्व तथा श्रम विभाग की टीम ने मानकपुर चौक गांव में दबिश देकर विभिन्न घरों से ऐसे 13 बंधुआ मानसिक विक्षिप्त लोगों से छुड़ाया। जिनका जिला अस्पताल में मेडिकल कराया, और भोजन की व्यवस्था की गई। श्री भार्गव के अनुसार कुछ लोगों को शिवपुरी आश्रम के लिए भेजा जाएगा वहीं कुछ लोगों के परिजनों के पास भेजा जाएगा। इस दौरान श्रमिक रामकुमार पिता गोरे लाल राव निवासी रायसेन, लखन गौढ नि. लोरमी बिलासपुर, गुर्जर सिंह नि. रूठियाई गुना, रामजीवन पिता धनलाल नि. ग्राम दोबा जंजाली तह. राघौगढ़ जिला गुना, लल्लीराम पिता देवचंद अहिरवार निवासी बरावदा जिला बारां राजथान, कोमल पिता रणजीत सिंह चौहान, वीरेन्द्र चन्द्र शर्मा नि. राठी गया बिहार, अमर नि. ग्राम सीतापुर गोंडा उ.प्र., तातम पिता भूण्डिया मानकर नि.ग्राम पंचायत अगावा तहसील कुच्छी जिला धार, अशोक कुमार कुशवाह नि. कुनुक्कू चंनेरा फिरोजाबाद यूपी, बाबूलाल आदिवासी पिता हानाजी नि. भूआले डोंगरपुर राजस्थान आदि शामिल हैं।

इनका कहना है

जिले के कुंभराज क्षेत्र में मानसिक रूप से विक्षिप्त श्रमिकों की जानकारी प्राप्त हुई थी। जिस पर कलेक्टर तरूण राठी के निर्देशन में रेस्क्यू करने हेतु टीम गठित करने के आदेश दिए गए थे। जिसके तहत श्रम विभाग एवं प्रमोद भार्गव वरदान सेवा समिति संयोजक गुना एवं थाना प्रभारी कुम्भराज दीपक राजोरिया की संयुक्त टीम द्वारा ग्राम मानक चौक तहसील कुम्भराज जिला गुना से घर से भटके हुए विभिन्न 13 विक्षिप्त श्रमिकों को नियोजकों के यहां से सामान्य रूप से विमुक्त कराया जाकर उनकी जानकारी पुलिस पोर्टल पर अपलोड कराई गई। डॉ.भाटी मनोचिकित्सक की सहायता से सभी का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं अध्यक्ष, अपना घर आश्रम शिवपुरी, जिला शिवपुरी को सुपुर्द किया गया है।

अशीष कुमार तिवारी,
सहायक श्रम पदाधिकारी

पटरियों पर काम रहे गैंगमैन से टकराया इंजन, मौके पर हुई मौत

गुना, देशबन्धु। ग्राम तरावटा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से टकराने के कारण एक गैंगमैनकर्मी की दर्दनाक मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार मूलत: राजस्थान निवासी छुन्दीराम मीणा (43) रेलवे में गैंगमैन के पद पर कार्यरत है। जो शहर की भगत सिंह कॉलोनी में रहता था। मीना जिला मुख्यालय के निकट ग्राम तरावटा के पास में रेलवे पटरी पर गैंगमैन का काम कर रहा था। इसी दौरान एक कार्यरत इंजन उससे टकरा गया। जिससे उके सिर में गंभीर चोट आने की वजह से उसने घटना स्थल पर ही दम तोड़ दिया। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर कैंट एवं जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची। जिसके बाद शव को पहले रेलवे कर्मचारियों के अस्पताल लाया गया था। बाद में उसका जिला अस्पाल में पोस्टमार्टम करा कर शव परिजन को सौंप दिया है। शव लेकर परिजन एवं कर्मचारी राजस्थान के लिए रवाना हुए। फिलहाल रेलवे पटरियों पर काम करने वाले गैंगमैन कर्मचारियों के लिए चिंता की बात है कि यहां कार्यरत इंजन की टक्कर से कर्मचारी की मौत है। कर्मचारियों ने इसकी लापरवाही करने वालों पर सख्त कार्रवाई करने एवं मुआवजा दिलाने की मांग की है।

महावीर आईसक्रीम और जय अंबे कचौड़ी केन्द्र पर 10-10 हजार व लोधा बेकरी पर 25 हजार का जुर्माना

गुना, देशबन्धु। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा शहर में निरंतर कार्यवाही की जा रही है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी नवीन जैन, रवि शिवहरे एवं लखन लाल कोरी द्वारा फर्म पप्पू मिष्ठान भण्डार कर्नलगंज का निरीक्षण कर बूँदी के लड्डू, नमकीन सेव, बर्फी एवं दही, फर्म चन्देन डेयरी घोसीपुरा से दूध, दही एवं पनीर, फर्म तान्या दूध डेयरी से बेसन के लड्डू, दही एवं पेड़ा, फर्म राठौर किराना स्टोर विकास नगर से जीरावन मसाला, तुअर दाल एवं छिलका मूँग दाल के नमूने जाँच हेतु लिए। उक्त नमूनों को जाँच हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजा गया है। संजू यादव फर्म पूनम दूध डेयरी भार्गव कॉलोनी गुना के विरूद्ध विभाग द्वारा बिना खाद्य पंजीयन का प्रकरण एडीएम कोर्ट गुना में दायर किया गया है। फर्म महावीर आइसक्रीम गुना प्रो. मुकेश कुमार पारीक एवं फर्म जय अम्बे कचौड़ी सेन्टर गुना प्रो0 विष्णु सोनी खाद्य कारोबारकर्ताओं द्वारा बिना खाद्य पंजीयन के कारोबार संचालन पर एडीएम कोर्ट गुना द्वारा 10-10 हजार रूपये का अर्थदण्ड एवं फर्म लोधा बेकरी गुना प्रो0 मानसिंह लोधा पर अमानक टोस्ट विक्रय किये जाने से मा0 न्यायालय द्वारा 25 हजार रूपये का अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया है।

मंडी कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी भी हड़ताल की राह पर

गुना, देशबन्धु। मंडी में व्यापारियों के बाद अब कृषि उपज मंडी कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी अपनी विभिन्न मांगों को लेकर हड़ताल पर जाने की तैयारी में हैं। अपनी विभिन्न लंबित मांगों को पूरा नहीं किए जाने पर कर्मचारी 16 सितंबर से काली पट्टी बांधकर आंदोलन का शंखनाद करेंगे। वहीं 18 सितंबर से लंबित मांगों पर उचित कार्यवाही क्रियान्वयन होने तक प्रथम चरण में जिले की समस्त मंडियों एवं उपमंडियां बन्द कर मंडियों के समस्त क्रियाकलाप बन्द करेंगे। जिसकी समस्त जिम्मेदारी शासन/मंडी बोर्ड प्रशसन की होगी। उल्लेखनीय है कि संयुक्त संघर्ष मोर्चा मप्र मंडी बोर्ड भोपाल के आह्वान पर मंडी समिति एवं मंडी बोर्ड की विगत 3 वर्षों से लम्बित मांगों का निराकरण हेतु मुख्यमंत्री द्वारा 4 अगस्त 23 को मंडी बोर्ड के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर की गई घोषणा पर कार्यवाही नहीं की जाने से कर्मचारियों, अधिकारियों में असंतोष एवं रोष व्याप्त है।

धरना स्थल पर पहुंचकर दिया आश्वासन

पटवारियों की हड़ताल को मिला पंचायत मंत्री का समर्थन

गुना, देशबन्धु। अपनी मांगों को लेकर कामबंद हड़ताल और धरना प्रदर्शन पर डटे पटवारियों को शुक्रवार को पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री महेंद्र सिंह सिसौदिया का समर्थन भी प्राप्त हुआ। पंचायत मंत्री श्री सिसौदिया पटवारियों के धरना स्थल पहुंचे और उनकी मांगों का समर्थन करते हुए कहा कि मैं इस मामले में घोषणा करने में तो सक्षम नहीं हूं। लेकिन आप सबको इतना आश्वासन जरुर देता हूं कि मैं आज भोपाल जा रहा हूं और आपकी मांगों को मुख्यमंत्री के समक्ष रखूंगा। श्री सिसौदिया ने भरोसा जताया कि जिस तरह मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश के हजारों कर्मचारियों की मांगों को समझा और उन्हें पूरा किया उसी तरह वे पटवारियों की मांगों को भी मानेंगे और पूरा करेंगे। पंचायत मंत्री ने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बहनें हैं या फिर पंचायत सचिव और रोजगार सहायक सभी की मांगों को हमारी सरकार ने माना है। मंत्री श्रीसिसौदिया ने पटवारियों से कहा कि मैं मानता हूं कि ग्रामीण क्षेत्र में पटवारी एक महत्वपूर्ण इकाई है और उसका महत्व पूर्ण कार्य है। इसलिए मैं सभी पटवारियों से आग्रह करता हूं कि वे अपने काम पर वापस जाएं। धरना प्रदर्शन, हड़ताल करना आपका अधिकार है। लेकिन आपके प्रदर्शन से हजारों लोगों के कार्य प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि वे पटवारियों के प्रतिनिधिमंडल के साथ मुख्यमंत्री के पास जाने को भी तैयार हैं।

नगरपालिका ने आवारा घूम रहे पशुओं को गौशाला तक पहुंचाया

आष्टा, देशबन्धु। नगरीय क्षेत्र आष्टा में काफी अधिक संख्या में गौमाता की संख्या रोड़ों पर होने से अनुविभागीय अधिकारी आनंद राजावत से विधिवत निकाय द्वारा पत्र जारी कर नगरीय क्षेत्र आष्टा अंतर्गत गौशाला में गौमाताओं को छोड़ने के लिए स्वीकृति प्राप्त की, तदुपरांत संपूर्ण आष्टा नगर में मुनादी के माध्यम से पशुपालकों को अवगत कराया कि वे अपनी गौमाताओं को सुरक्षित स्थान पर रखें। निरंतर मुनादी के उपरांत भी जब गौमाताएं रोड़ पर लावारिश पाई गई तब सीएमओ राजेश सक्सेना द्वारा नपाध्यक्ष श्रीमती हेमकुंवर एवं विधायक प्रतिनिधि रायसिंह मेवाड़ा से लावारिश गौमाताओं को गौशाला में छोड़े जाने के लिए मुहिम 15 सितंबर को सुबह 9 बजे से ले जाने के लिए सहमति प्राप्त की गई। सीएमओ राजेश सक्सेना द्वारा 14 सितंबर की रात 8 बजे कार्यालय में एक बैठक आहूत की गई। जिसमें निकाय के सभी कर्मचारियों के साथ-साथ सफाई मित्रों को भी बैठक में बुलाया। साथ ही संपूर्ण क्षेत्र आष्टा के लिए क्षेत्रवार दल का गठन किया गया। बैठक में नपाध्यक्ष प्रतिनिधि रायसिंह मेवाड़ा, सीएमओ राजेश सक्सेना, पार्षद रवि शर्मा एवं निकाय के सभी अधिकारी, कर्मचारी, सफाई मित्रों के साथ दल को शहर के चारों तरफ गौमाताओं को सुरक्षित गौशाला तक पहुंचाने के कार्य का शुभारंभ किया। शाम 5 बजे तक संपूर्ण शहर आष्टा से ग्राम पंचायत रूपेटा एवं कल्याणपुरा स्थित गौशाला में लगभग 89 गौमाताओं को बछड़ों सहित दोनों गौशाला में सकुशल निर्धारित दलों द्वारा पैदल जाकर छोड़ा गया।

हड़ताल पटवारियों का प्रदर्शन जारी, आज निकाली चुनरी यात्रा

सीहोर, देशबन्धु। अपनी मांग को मनवाने के लिए पटवारी सुंदरकाण्ड पाठ, तिरंगा यात्रा सहित अनेक तरह के प्रयास कर चुके हैं। फिर भी सरकार और शासन इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है, शुक्रवार को जिले भर के पटवारी मध्यप्रदेश पटवारी संघ के आह्वान पर रेहटी से सलकनपुर तक करीब 7 किलोमीटर बारिश के मध्य डीजे और बाजे के साथ मां के दरबार में पहुंचे और पूजा अर्चना के बाद अपनी मांगों को लेकर करीब 111 मीटर लंबी चुनरी समर्पित की। इस संबंध में मध्यप्रदेश पटवारी संघ के जिलाध्यक्ष संजय राठौर ने बताया कि लंबे समय से अपनी मांगों को लेकर धरना और प्रदर्शन किया जा रहा है, वहीं शुक्रवार को जिले भर के करीब 3 सौ से अधिक पटवारी जिले के रेहटी में पहुंचे और सात किलोमीटर दूर पर जाकर मां के दरबार में मांगों के समर्थन में चुनरी अर्पित की है।

9 सूत्रीय मांगों को लेकर सफाई कर्मचारी महासंघ ने दिया ज्ञापन

गुना, देशबन्धु। मप्र सफाई कर्मचारी महासंघ द्वारा शुक्रवार को विभिन्न नौ सूत्रीय मांगों को लेकर एसडीएम कार्यालय पहुंचकर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई कि नपा में एमपीकॉन में कार्यरत घर-घर कचरा कनेक्शन करने वाले वाहन चालकों एवं ह्यमून मेट्रिक्स सेक्सुराईट एनजीओ में लगे समस्त गीला सूखा कचरे की मॉनीटिरिंग करने वाले सभी कर्मचारियों को नपा में विलय किया जाएं। इसके अलावा समस्त दैवेभो को विनियमित करने, विनियमित हुए सफाई कर्मचारियों को नियमित करने, मेडिकल के आधार पर अनफिट घोषित कर उनके परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने की मांग की। इसके अलावा मप्र के सफाई ठेका एवं आउटसोर्स पूर्णतः प्रतिबंधित करने, सफाई कर्मचारियों को दुर्घटना एवं स्वास्थ्य लाभ बीमा भत्ता देने, सफाई कर्मचारियों को अंशकालीन को पूर्ण कालीन करने तथा सत्ता एवं संगठन में उचित भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग की।

सौ छात्रों की क्षमता वाले कक्षाओं में ठूंसे जा रहे 3 -3 सौ विद्यार्थी

गुना देशबन्धु। समस्त पात्र छात्रों को अविलंब छात्रवृत्ति, आवास योजना की राशि का भुगतान किए जाने, नियमित तौर पर कक्षाएं लगाई जाने सहित अन्य मांगों को लेकर छात्र संगठन डीएसओ ने प्रदर्शन कर प्राचार्य को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान डीएसओ ने पिछले सत्र की छात्रवृत्ति एवं कॉलेज की मूलभूत सुविधाएं जैसे किताबें, छात्रों के बैठने के लिए पर्याप्त स्थान, सभी कक्षाओं में साउंड सिस्टम आदि मांगों को लेकर जमकर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए डीएसओ के देवेंद्र सेन ने कहा कि डीएसओ लंबे समय से कॉलेज में व्याप्त समस्याओं को लेकर आंदोलन कर रहा है। कई बार छात्र प्राचार्य को ज्ञापन दे चुके है, कलेक्ट्रेट के कई चक्कर काट चुके हैं, लेकिन अभी तक छात्रों की समस्याओं का समाधान नहीं हुआ है। पिछले सत्र की छात्रवृत्ति जो परीक्षा से पूर्व छात्रों के खातों में डाल देना चाहिए थी, उसे अभी तक मुहैया नहीं कराया गया है। अब कि वह छात्र द्वितीय वर्ष में आ चुके हैं और कई सारे छात्र तो ऐसे हैं जो छात्रवृत्ति के भरोसे ही अपनी पढ़ाई कर पा रहे हैं और छात्रवृत्ति न मिलने के कारण वह पढ़ाई छोडने को मजबूर है। श्री सेन ने बताया कि छात्रों की बड़ी संख्या पढने के लिए आ रही है लेकिन उनकी बैठक व्यवस्था महाविद्यालय में नहीं है। 100 छात्रों की क्षमता वाले कक्षाओं में 300-300 छात्रों को जबरन ठूसा जा रहा है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में कांग्रेस पार्टी ने अभूतपूर्व कार्य किए : ठाकुर

आष्टा, देशबन्धु। देश की स्वतंत्रता पूर्व से लेकर देश की आजादी के बाद तक कांग्रेस पार्टी ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किए हैं फिर चाहे महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकारों की बात हो या सामाजिक राजनीतिक स्वतंत्रता की बात हो महिला सम्मान की बात हो या फिर महिलाओं को भागीदारी देने की बात कांग्रेस पार्टी ने सदैव लिंग भेद से उपर उठकर कार्य किए हैं। यह विचार अखिल भारतीय महिला कांग्रेस के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला महिला कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती गुलाब बाई ठाकुर ने व्यक्त किए महिला कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती विभा पटेल के निर्देश पर नगर पालिका के कम्युनिटी हॉल में महिला कांग्रेस का 40 वां स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण के साथ की गई। इस अवसर पर वरिष्ठ महिला नेत्रियों ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। उपरोक्त कार्यक्रम में नगर परिषद कोठरी की अध्यक्षा श्रीमती नगीना राधेश्याम दलपती, श्रीमती हेमलता चौहान, श्रीमती प्रेमलता माहेश्वरी, श्रीमती तेज कुंवर चौहान, श्रीमती अकीला बाई दवारिया, श्रीमती बिंदा बाम्बे, श्रीमती तेजू सोलंकी, पूजा मालवीय, देवकन्या अजनोटिया, अरुणा सोलंकी, गीता अजनोटीया, शीतल मालवीय, शीतल सोलंकी सहित अनेक महिला शक्ति के साथ कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता कमलसिंह चौहान, राधेश्याम दलपती, जाहिद गुड्डू, सनव्वर खान, नरेन्द्र कुशवाह, कमल सिंह ठाकुर बडलियां, देवराज परमार, अर्जुन सिंह अजय, सहित, मनोज परमाल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

जेसीआई गुना पायनियर ने किया सीसीटीवी प्रभारी का सम्मान

गुना देशबनधु। आज शहर सुरक्षित है, अपराधी अपराध के 24 घंटे में पकड़े जा रहे हैं। तो इन सबके पीछे एक ऐसे व्यक्ति का हाथ है। जिसको जेसीआई सप्ताह के दौरान जेसीआई पायोनियर ने सम्मानित किया। जेसीआई वीक 2023 में शुक्रवार को सप्ताह के छठवें दिन सेल्यूट द साइलेंट स्टार प्रोग्राम के अंतर्गत गुना सिटी के सीसीटीवी प्रभारी भूपेंद्र सिंह सेंगर (एएसआई) एवं उनकी पूरी टीम का सम्मान सीसीटीवी कंट्रोल रूम में किया गया। इस अवसर पर भूपेंद्र सिंह को शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह देकर उनका सम्मान किया एवं उनकी पूरी टीम को माल्यार्पण कर एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया।

राजधानी

सार समाचार

भोपाल, देशबन्धु। श्री हिंदू उत्सव समिति के श्री राम मंदिर गुरु बख्श की तलैया स्थित पंजीकृत कार्यालय का शुभारंभ आज अध्यक्ष संतोष साहू लखपति और पूर्व अध्यक्ष नारायण सिंह कुशवाह ने विधि विधान के साथ पूजा अर्चना कर किया । इस अवसर पर समिति के समिति के संस्थापक पं.ओम मेहता, कोषाध्यक्ष कैलाश साहू, शिव यादव, बद्री यादव, संतोष गुप्ता ,दिनेश सेन, निहाल साहू आदि मौजूद थे।

मतदान अधिकारियों का दक्षता मूल्यांकन कार्यक्रम संपन्न

भोपाल, देशबन्धु। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश द्वारा जारी आदेशानुसार कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री आशीष सिंह के निर्देशानुसार आज भोपाल जिले के सभी रिटर्निंग ऑफिसर एवं सहायक रिटर्निंग ऑफिसर का दक्षता मूल्यांकन कार्यक्रम शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सभी आरओ एवं एआरओ की लिखित परीक्षा भी आयोजित की गई।

अवकाश के दिनों में भी खुले रहेंगे बिजली बिल भुगतान केन्द्र

भोपाल, देशबन्धु। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत सितम्बर माह में 16,23,30 (सभी शनिवार), 17,24 सितम्बर (सभी रविवार), 19 सितम्बर (गणेश चतुर्थी) एवं 28 सितम्बर (मिलाद-उन-नबी, अनंत चतुर्दशी) को बिजली बिल भुगतान केन्द्र सामान्य कार्य दिवसों की तरह कार्य करते रहेंगे। भोपाल शहर वृत्त के अंतर्गत चारों शहर संभाग यथा पश्चिम, पूर्व, दक्षिण तथा उत्तर संभाग के अंतर्गत सभी जोनल कार्यालय और दानिश नगर, मिसरोद, मण्डीदीप में बिल भुगतान केन्द्र उक्त छुट्टी के दिन भी सामान्य कार्य दिवस की तरह खुले रहेंगे।

एमपी यूथ गेम्स संबंधी बैठक सम्पन्न

भोपाल, देशबन्धु। खेलों एमपी यूथ गेम्स-2023 के अंतर्गत ब्लाक, जिला एवं संभाग स्तरीय 24 स्पर्धाओं के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए रूपरेखा तैयार करने संबंधी बैठक कलेक्टर सभागार में संपन्न हुई। बैठक में सभी खेल स्पर्धाओं के कोच, खेल संघों के पदाधिकारी, तकनीकी अधिकारी आदि मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा कराए गए विगत माह मध्यप्रदेश में खेलों इंडिया के सफलतापूर्वक आयोजन के बाद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने खेलों एमपी यूथ गेम्स के आयोजन के निर्देश दिए हैं।

कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ

भोपाल, देशबन्धु। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूलों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में जनप्रतिनिधियों द्वारा बच्चों को एल्बेंडाजोल की गोली खिलाकर किया गया। कार्यक्रम के तहत एक से 19 साल के बच्चों को ये गोली खिलाई गई। साथ ही 20 वर्ष से 49 वर्ष की प्रजननकालीन उम्र की महिलाओं को भी एल्बेंडाजोल गोली का सेवन करवाया गया। जिले में लगभग 1 लाख 74 हजार महिलाओं को एल्बेंडाजोल गोली खिलाई जाएगी। इसी तरह एक से 19 साल के लगभग 9 लाख 57 हजार बच्चों को दवा का सेवन करवाया जायेगा।

खाद्य सामग्री के नमूने लिए गए

भोपाल, देशबन्धु। राजस्व, आबकारी तथा खाद्य सुरक्षा प्रशासन के संयुक्त दलों द्वारा अयोध्या बाईपास स्थित वीरा द ढ़ाबा से पनीर, गेहूँ का आटा, मक्के का आटा तथा खाद्य तेल, राजदरबार फैमिली रेस्टोरेंट से पनीर तथा आटा, हमीदिया रोड़ स्थित होटल संगम से पनीर, धनिया पाउडर, हल्दी पाउडर, होटल खजुराहो रीजेंसी से ग्रेवी तथा चावल, तथा बावड़िया कला स्थित 2 स्टेट्स रिसॉर्ट से पनीर तथा धनिया पाउडर के नमूने परीक्षण के लिए गए हैं। नमूनों को विश्लेषण हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला प्रेषित किया गया है। नमूनों के परिणाम प्राप्त होने पर खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार दोषियों पर विधिक कार्यवाही की जायेगी।

भोपाल, इंदौर सहित कई जिलों में भारी बारिश की संभावना

भोपाल, देशबन्धु। *गहरा कम दबाव का क्षेत्र पूर्वी मध्य प्रदेश में आ गया है। मानसून द्रोणिका भी इस मौसमी सिस्टमों से होकर जा रही है। शनिवार को भोपाल, नर्मदापुरम, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, सागर संभाग के जिलों में भारी बारिश होने की संभावना है। इस दौरान कहीं-कहीं अति भारी बारिश भी हो सकती है।*

मौसम विज्ञान केंद्र से मिली जानकारी के मुताबिक उत्तरी छत्तीसगढ़ पर बना गहरा कम दबाव का क्षेत्र वर्तमान में पूर्वी मप्र पर सक्रिय हो गया है। वहीं मानसून द्रोणिका बीकानेर, कोटा से पूर्वी मप्र पर बने कम दबाव के क्षेत्र से होकर संबलपुर, दीघा से होते हुए बंगाल की खाड़ी तक बनी हुई है। एक अन्य द्रोणिका दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान से लेकर कम दबाव के क्षेत्र से होकर उत्तरी ओडिशा तट तक जा रही है, जबकि एक द्रोणिका दक्षिणी कोंकण से कम दबाव के क्षेत्र से होकर मध्य महाराष्ट्र तक बनी हुई है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी हरियाणा में हवा के ऊपरी भाग में एक चक्रवात बना हुआ है। इन मौसमी सिस्टमों के असर से पूरे मप्र में झमाझम बारिश होने की संभावना बन गई है। रुक-रुककर बारिश का सिलसिला एक सप्ताह तक बना रह सकता है।

उधर, शुक्रवार सुबह से शाम तक पचमढ़ी में 146 मिमी यानी करीब छह इंच बारिश हुई है, जो कि नौ घंटे में दर्ज की है। वहीं बैतूल में 89,

नर्मदापुरम में 87, सिवनी में 65, छिंदवाड़ा में 55, नरसिंहपुर में 38, रायसेन में 28, सागर में 27, इंदौर में 12, जबलपुर में 10.2, मलाजखंड एवं रतलाम में 10, सतना एवं सीधी में आठ, रीवा में सात, दमोह में छह, खंडवा में पांच, मंडला में चार, खजुराहो में 1.2, उज्जैन में एक, धार में 0.5, गुना में 0.2 मिलीमीटर बारिश हुई।

अब सामान्य से सिर्फ 10 प्रतिशत कम रह गई बारिश

मौसम विज्ञानियों के मुताबिक इस सीजन में एक जून से लेकर शुक्रवार तक मप्र में 805.7 मिलीमीटर बारिश हुई है, जो सामान्य वर्षा (894.4 मिलीमीटर) की तुलना में 10 प्रतिशत कम है। पूर्वी मप्र में 926.5 मिलीमीटर बारिश हुई है, जो सामान्य वर्षा (983.2 मिलीमीटर) के मुकाबले छह प्रतिशत कम है। पश्चिमी मप्र में 712.9 मिलीमीटर बारिश हुई है, जो सामान्य (826.1 मिलीमीटर) की तुलना में 14 प्रतिशत कम है। पांच सितंबर को मप्र में औसत से 19 प्रतिशत कम वर्षा हुई थी, लेकिन 10 दिन से रुक-रुककर जारी बारिश के कारण अब सामान्य से सिर्फ 10 प्रतिशत कम बारिश रह गई है।

खेतों में पानी के निकास की व्यवस्था करें

कृषि विशेषज्ञ एवं पूर्व संचालक कृषि डा. जीएस कौशल ने बताया कि धान की फसल के लिए यह बारिश अमृत की तरह है। लेकिन लगातार बारिश होने से खेतों में पानी भरने लगा है। इससे सोयाबीन, उड़द, मूंग आदि की फसल के गलने का खतरा है। लिहाजा किसानों को चाहिए कि वह खेतों में पानी के निकास की व्यवस्था करें।

भोपाल में 9 घंटे में 1 इंच पानी गिरा

राजधानी भोपाल में शुक्रवार सुबह से ही रुक-रुककर तेज बारिश हो रही है। सुबह से शाम तक 9 घंटे में भोपाल में करीब 1 इंच बारिश हो गई। वहीं, जिले में यह आंकड़ा 2 इंच तक पहुंच गया। राजधानी में शुक्रवार सुबह साढ़े 6 बजे से रिमझिम बारिश शुरू हो गई, जबकि 8 बजे तेज बारिश होने लगी। इससे कई इलाकों में जलभराव की स्थिति बन गई। वहीं दोपहर 2 बजे के बाद फिर से तेज बारिश शुरू हो गई, जो काफी देर तक जारी रही। इसी तरह शाम को भी तेज बारिश हुई इस बीच श्यामला हिल्स इलाके में तेज बारिश के दौरान ट्रक के ऊपर पेड़ गिर गया। मौसम विभाग ने शनिवार को भी यहां अति भारी बारिश होने की चेतावनी जारी की है। उधर भोपाल में रुक-रुककर हो रही तेज बारिश से शहर की जीवन दायिनी बड़ी झील में भी पानी बढ़ गया। आज शाम तक झील में 0.20 फीट पानी की बढ़ोतरी हुई है जलस्तर 1664.35 फीट पहुंच गया। अब 2.45 फीट ही खाली है । वहीं कोलार-कलियासोत बांध में भी पानी की मामूली बढ़ोतरी हुई है ।

विज्ञान मेला शुरू, मॉडल में दिखे नवाचार और उन्नत तकनीकें

आदित्य एल 1 और चंद्रयान-3 बना आकर्षण का केंद्र

भोपाल, देशबन्धु। नई पीढ़ी को नवाचारों से परिचित कराने के उद्देश्य से 10वां विज्ञान मेला शुक्रवार को भेल दशहरा मैदान में आयोजित किया गया। इस चार दिवसीय इस मेले का शुभारंभ चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ओमप्रकाश सकलेचा ने की। म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद और विज्ञान भारती के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस मेले का विषय साइंस, टेक्नोलॉजी एवं इनोवेशन अमृतकाल रखी गई है।

विज्ञान भारती के अध्यक्ष अमोघ गुप्ता ने बताया कि मेले में परमाणु ऊर्जा, इसरो, डीआरडीओ ब्रम्होस, एनटीपीसी, सीएसआईआर, आईसीएमआर, आईसीएआर, एम्प्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् तथा उद्योगों द्वारा किए गए नवाचारों का प्रदर्शन गया। इसके साथ ही मैदानी

मेले में छात्रों ने मॉडल भी प्रदर्शित किए।

नवाचार एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए छात्रों द्वारा बनाए गए मॉडल की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा, जिसमें छात्रों द्वारा तैयार किये गये नवाचार वाले मॉडल्स प्रदर्शित किए। मेले में प्रतिदिन सांस्कृतिक गतिविधियां भी आयोजित होंगी। मेले में आज बड़ी संख्या में छात्र, शोधार्थी, शिक्षक, कारीगर, किसान, उद्यमी, वैज्ञानिक आदि उपस्थित रहे।

मेले में आए रीजनल रिमोर्ट सेंसिंग सर्विस नागपुर में कार्यरत वैज्ञानिक अरुण सूर्यवंशी ने बताया हालांकि बारिश की वजह से आज यहां थोड़े कमी छात्र आए, मगर जो आए उनमें बहुत अधिक उत्सुकता थी कि वह आदित्य एल 1 और चंद्रयान 3 के बारे में भी समझें, इसके अलावा हमने यहां छात्रों को इसरो के सभी मिशन और उनकी तकनीक के बारे में भी बताया। हमने यहां छात्रों को चंद्रयान मिशन, मार्स मिशन आदि के बारे में बताया। वहीं हमने स्पेस क्राफ्ट और आदित्य एल वन के बारे में छात्रों को बताया कि यह सूर्य के वहां अध्ययन के लिए एल कक्षा में स्थापित होगा, वहां से वो सूर्य का सतह पर प्रतिक्रिया का अध्ययन करेगा। हमने इसरो की सभी उपलब्धियों के बारे में भी छात्रों को समझाया।

इनका होगा सम्मान

विज्ञान मेले के दौरान शीर्ष वैज्ञानिक चंद्रयान- 3 के मिशन डायरेक्टर डॉ. पी. वीरामुथुवेल, वन्दे भारत के चीफ आर्किटेक्ट सुधांशु मनी के साथ ही एम्स दिल्ली की डॉ. रमा जयासुंदर को विज्ञान प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

विंध्याचल एक्सप्रेस समेत 6 जोड़ी ट्रेनें निरस्त रहेंगी

भोपाल, देशबन्धु। पश्चिम मध्य रेल में चल रहे मरम्मत काम के कारण रेलवे ने 6 जोड़ी ट्रेनों के निरस्त करने का निर्णय लिया है। इसमें मुख्य रूप से भोपाल-इटारसी विंध्याचल एक्सप्रेस सहित भुसावल-कटनी, इटारसी-कटनी मेमू और बीना-कटनी मेमू ट्रेन शामिल हैं। ये ट्रेनें 16 सितंबर से अलग-अलग तारीखों में 3 से 8 दिन तक निरस्त रहेंगी। भोपाल रेल मंडल के प्रवक्ता सूबेदार सिंह ने बताया कि भोपाल-इटारसी-भोपाल विंध्याचल एक्सप्रेस 16 से 23 सितंबर तक दोनों दिशाओं में निरस्त रहेगी। इसी प्रकार बिलासपुर-भोपाल एक्सप्रेस 16 से 18 सितंबर तक निरस्त रहेगी, जबकि भोपाल-बिलासपुर एक्सप्रेस 18 से 20 सितंबर तक निरस्त रहेगी। भुसावल-कटनी एक्सप्रेस 16 से 23 सितम्बर तक, कटनी-भुसावल एक्सप्रेस 17 से 24 सितंबर तक निरस्त रहेगी। इसी तरह कटनी-चिरमिरी मेमू स्पेशल 16 से 19 सितंबर तक और चिरमिरी-कटनी मेमू स्पेशल 17 से 20 सितंबर तक निरस्त रहेगी। जबकि इटारसी-कटनी-इटारसी मेमू स्पेशल 16 से 23 सितंबर तक और बीना-कटनी मुड़वारा-बीना मेमू स्पेशल 16 से 23 सितंबर तक निरस्त रहेगी।

नगर निगम कल भानपुर खंती में कराएगा योग

भोपाल, देशबन्धु। नगर निगम भानपुर खंती में 17 सितंबर को सुबह 9 बजे योग कार्यक्रम कराएगा, जिसमें स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी भी शामिल रहेंगे। इंडियन स्वच्छता लीग 2.0 के तहत यह आयोजन होगा। महापौर मालती राय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। गौरतलब है कि 37 एकड़ में फैली इस खंती में कभी कचरे का पहाड़ था, लेकिन नगर निगम ने कचरा साफ कर दिया।

महापौर राय ने बताया कि 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन भी है। लिहाजा योग कार्यक्रम के बाद जन्मदिन भी मनाएंगे। वहीं, 18 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सफाई मित्रों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर लगाएंगे। शिविर में सभी सफाई मित्रों के स्वास्थ्य की जांच की जाएगी। इन शिविरों में सरकार की विभिन्न योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री जन आरोग्य, आयुष्मान, उज्जवला, अटल पेंशन एवं प्रधानमंत्री जनधन योजना के बारे में जानकारी भी दी जाएगी।उन्होंने बताया, इंडियन स्वच्छता लीग का मुख्य उद्देश्य शहर में युवाओं को कचरा प्रबंधन के प्रति जागरूकता, स्वच्छता की जिम्मेदारी और भागीदारी के लिए संगठित करना है। इस कार्यक्रम में क्यूआर कोड और लिंक के माध्यम से लोगों का रजिस्ट्रेशन किया जा रहा है। कार्यक्रम का मूल्यांकन केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय करेगा। यह एक प्रतिस्पर्धा है। भानपुर खंती का चुनाव इस कार्यक्रम के लिए किया गया है। ताकि, हम स्वच्छता का संदेश को पूरे देश में भेज सकें।

बैरसिया में हुआ आयुष्मान भव स्वास्थ्य मेला

बैरसिया, देशबन्धु। आयुष्मान भव अंतर्गत विकासखंड स्तरीय स्वास्थ्य मेला सिविल अस्पताल बैरसिया में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मंत्री, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग डॉ प्रभुराम चौधरी एवं विधायक बैरसिया विष्णु खत्री सहित जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

इस अवसर पर डॉ. चौधरी ने कहा कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं का निरंतर विस्तार किया जा रहा है। प्रदेश में 860 उपस्वास्थ्य केंद्रों का उन्नयन किया गया है। नवीन क्रियाशील हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर में 126 प्रकार की दवाइयां उपलब्ध है । इन केंद्रों में असंचारी रोगों के उपचार की सुविधा के साथ वेलनेस गतिविधियां भी आयोजित की जा रही हैं। श्री खत्री ने कहा कि लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग हेल्थ एंड वेलनेस केंद्रों से लोगों को उपचार की मूलभूत सुविधाएं घर के

नजदीक ही मिल रही हैं। आयुष्मान निरामयम योजना से सभी पात्र हितग्राहियों को जोड़ा गया है।

आयुष्मान भव स्वास्थ्य मेले में मेडिकल कॉलेज के चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा दो हजार से अधिक लोगों का कैंसर, बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी, श्वास रोग, नेत्र रोग, ई एन टी, त्वचा रोग, मानसिक रोग, अस्थि रोग सेवाएं प्रदान की गई। इसके साथ ही संचारी एवं असंचारी बीमारियों की रोकथाम एवं स्वास्थ्य जागरूकता, बीमारियों के प्रारंभिक स्तर पर पहचान हेतु स्क्रीनिंग एवं निदान हेतु बुनियादी जांच, दवाइयां, टेलीकंसल्टेशन सेवा प्रदान की गई। इस अवसर पर आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत हितग्राहियों की विशिष्ट स्वास्थ्य आईडी आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट (आभा आईडी), प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत पात्र हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड एवं मेडिकल बोर्ड द्वारा दिव्यांगता प्रमाण पत्र भी बनाए गए।

50 बिस्तरीय भवन का हुआ भूमिपूजन

इस अवसर पर बैरसिया सिविल अस्पताल के नवीन 50 बिस्तरीय भवन का भूमि पूजन किया गया। नवीन 50 बिस्तरीय अस्पताल के निर्माण के लिए 24 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है। यह 4 मंजिला अस्पताल 15 माह की अवधि में बनकर तैयार होगा। जिसमें मॉड्यूलर ओ टी सहित एडवांस चिकित्सा सुविधाएं मिल पाएगी।

स्पष्टीकरण

शुक्रवार दि. **15.09.23** को देशबन्धु के भोपाल एवं सागर संस्करण में प्रकाशित बीना तेल शोधक संयंत्र के समाचार में भारत पेट्रोलियम कंपनी लिमिटेड - जो संयंत्र की संचालक है और जिसने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संयंत्र के विस्तार कार्यक्रम के उद्घाटन का आयोजन किया था, का नामोल्लेख नहीं हुआ है। पाठकों से अनुरोध है कि कृपया उक्त समाचार को बीपीसीएल के नाम के साथ पढ़ने का कष्ट करें।

15 सितम्बर को ही मुंबई हवाई अड्डे पर हादसा शीर्षक से प्रकाशित समाचार में विमान को दिलीप बिल्डकॉन, भोपाल के नाम पर रजिस्टर्ड होना बताया गया है। वास्तव में दुर्घटनाग्रस्त विमान वीएसआर वेन्चर्स, नई दिल्ली का है।

इन दोनों चूकों के लिए हम खेद व्यक्त करते हैं।

शिक्षक ही विद्यार्थी के जीवन का श्रेष्ठ शिल्पकार : ज्ञानचंदानी

नवयुवक परिषद के शिक्षक-शिक्षिकाओं हेतु सम्मान समारोह काआयोजन

संत हिरदाराम नगर, देशबन्धु। नवयुवक परिषद द्वारा संचालित नि:शुल्क कोचिंग कक्षाओं में पढ़ाने वाले शिक्षकों का सम्मान समारोह साधु वासवानी स्कूल स्थित नंदवानी ऑडिटोरियम में पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नवयुवक परिषद की सहयोगी इकाइयों स्वामी विवेकानंद कॅरियर एकेडमी के शिक्षकों, भगवान कला केंद्र में कम्प्यूटर, सिलाई, फैशन डिजाइनिंग समेत संचालित होने वाले विभिन्न कोर्सेस के ट्रेनर्स, इंस्ट्रक्टर्स एवं नीतू महतानी मेमोरियल लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन समेत सभी इकाइयों के ऑफिस स्टॉफ को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर परिषद के वरिष्ठ मार्गदर्शक हीरो ज्ञानचंदानी ने समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं को शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए कहा कि शिक्षक ही विद्यार्थी के जीवन का श्रेष्ठ शिल्पकार है, जो अपनी जीवनदायिनी तेजस्विता से छात्र, समाज और राष्ट्र को सुसज्जित करता है। उन्होंने शिक्षकों को अपने कर्तव्यों को पूरा करने को कहा। इसके साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि विद्यार्थी-जीवन तप, संयम, समय प्रबंधन और सतत् परिश्रम करने का समय है, इसे गंभीरता

से लें ताकि आपके जीवन में ज्ञान ऊर्जा का प्रवाह बना रहे। विद्या अर्जन ही विद्यार्थी की शक्ति है। छात्र-छात्राएं इसी शक्ति के बलबूते गगनचुम्बी लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अभावग्रस्त जीवन लक्ष्य प्राप्ति में बाधक नहीं बन सकता। संस्था के उपाध्यक्ष एसी साधवानी ने कहा कि परिषद का कार्य अपने आप में अनूठा है। यह पूरी तरह से कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित संस्था है। आपने परिषद की शुरुआत कैसे हुई, इसकी भी जानकारी प्रदान की। उन्होने कहा कि सदैव परोपकार की भावना रखनी चाहिए, जिससे आप स्वयं सुखी एवं समृद्ध बनेंगे। इस अवसर पर परिषद के पदाधिकारियों द्वारा शिक्षक-शिक्षिकाओं उपहार भेंट किए गए। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ शिक्षिका सुश्री लता आसनानी, श्रीमती नीतू आहूजा ने और आभार प्रदर्शन सुश्री शालू वरलानी द्वारा व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में नवयुवक परिषद के महेश दयारामानी, थावर वरलानी, घनश्याम बूलचंदानी, भगवान दामानी, वासदेव मोतियानी, रमेश लालवानी, मनोहर लाल आसवानी, गोपाल गिरधानी, पलाश रिझवानी, सुश्री शालू वरलानी, श्रीमती दुर्गेश सेन, श्रीमती प्रीति आहूजा समेत समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहीं।

छात्र- छात्राओं ने प्रकट की कृतज्ञता

इस अवसर पर नवयुवक परिषद की छात्रङ्क छात्राओं मुस्कान अवतानी, चित्रा भोजवानी, सौरव वासवानी, मन्नत आहूजा, हर्षित नरवानी, जीतेश आसवानी ,कोमल गुनवानी, कशिश बसवानी, खुशबू, कोमल नागदेव, पायल गिदवानी, प्रिया केसवानी, दीपेश राजपाल, भूमि नामदेव, खुशी लीलानी, डिंकी गुरनानी, मेघा मनवानी एवं डिंकी मेंघानी ने गुरु वंदना, कविता एवं विचारों के माध्यम से शिक्षकों के प्रति अपने सम्मान एवं कृतज्ञता के भाव प्रकट करते हुए सभागार में उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया।

नवोदय में राष्ट्रीय शतरंज प्रतिस्पर्धा का शुभारंभ

भोपाल, देशबन्धु। जवाहर नवोदय विद्यालय में तीन दिवसीय चौदहवीं राष्ट्रीय शतरंज समागम प्रतिस्पर्धा का शुभारंभ मार्च पास्ट एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुमताज खान उपाध्यक्ष एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, विशेष अतिथि संजय भारद्वाज द्रोणाचार्य, अवॉर्डी मनीष बिल्लोरे प्रिंसीपल सिस टैक कॉलेज भोपाल एवं कार्यक्रम की अध्यक्ष सहायक आयुक्त श्रीमती गीतिका शर्मा, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल संभाग थी। शुभारंभ कार्यक्रम में क्लस्टर इंचार्ज सहायक आयुक्त श्रीमती टी. जयश्री, प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय भोपाल श्रीमती ज्योति सिंह, प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय रायसेन जितेंद्र कुमार मिश्रा, उप प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय सीहोर श्रीमती रीता खत्री, उप प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय भोपाल श्रीमती पुष्पा सिंह एवं सभी नवोदय विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की वरिष्ठ शिक्षका श्रीमती काव्य दुबे एवं डॉ. उपमा सिंह द्वारा किया गया । प्रतिस्पर्धा में नवोदय विद्यालय समिति के आठ रीजन चंडीगढ़, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, पटना, पुणे, शिलांग, भोपाल ने सहभागिता की, जिसमें भोपाल रीजन ने मेजवानी की।

अभिमत

बॉलीवुड एक ऐसी जगह है जो गीत और नृत्य के लिए जानी जाती है जिसका घोषवाक्य मनोरंजन और ग्लैमर हैं। बॉलीवुड हमेशा एक जीतने वाला फॉर्मूला पसंद करता है, खासकर बड़े बजट की फिल्मों में जो मोटी फीस लेने वाले रॉकिंग सितारों से भरी होती हैं। क्या 'जवान' की सफलता के साथ यहां से यह बदल जाएगा? हमारे पास बॉलीवुड के लिए एक नए रास्ते का प्रस्ताव है, एक ऐसा रास्ता जो अपनी विशाल और बेजोड़ सॉफ्ट पावर का उपयोग करके इस तरह के कुछ महत्वपूर्ण संदेशों को घर-घर तक पहुंचा सकता है और एक तरह से बड़े बजट के असाधारण आयोजन में इस तरह का संदेश पहुंचाने का शायद ही कभी ऐसा प्रयास किया गया हो।

जनता के सवालों के लिए शाहरुख ने बॉलीवुड में बनाई नई राह

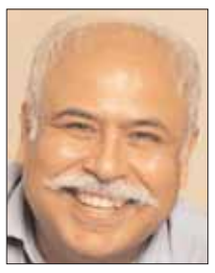

जगदीश रत्तनानी

किंग खान और एसआरके के नामों से भी मशहूर शाहरुख खान अपनी फिल्म 'जवान' के साथ बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रहे हैं। पिछले हफ्ते रिलीज़ हुई इस फिल्म ने कथित तौर पर सप्ताहांत तक 350 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई की जिसे बॉलीवुड फिल्म इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी ओपनिंग कहा जा रहा है। कुछ लोग जो सोचते थे कि शाहरुख का करियर गिरावट पर है वे देख सकते हैं कि वह एक बड़े धमाके के साथ लौट आया है। शाहरुख के जादू में इस बार दक्षिण भारतीय फिल्मों की नायिका नयनतारा, दक्षिण के ही कलाकार विजय सेतुपति और निर्देशक एटली कुमार जैसे तमिल सिनेमा के सितारों ने उत्तर और दक्षिण की प्रतिभाओं को एक पैकेज में जोड़ा है जिसे पूरे देश के दर्शकों द्वारा पसंद किया जा रहा है। पौने तीन घंटे लंबी फिल्म का वर्णन निर्माता कंपनी रेड चिलीज़ एंटरटेनमेंट इन शब्दों में करती है- 'एक हाई-ऑक्टेन एक्शन थ्रिलर, एक ऐसे व्यक्ति की भावनात्मक यात्रा को रेखांकित करती है जो समाज में गलतियों को सुधारने के लिए तैयार है।'

कहने की जरूरत नहीं है, इसमें से बहुत कुछ ठेठ बॉलीवुड बड़बोलापन है। लेकिन इसमें 'समाज में हुई गलतियों' को रेखांकित किया गया है जो 'जवान' को अलग-अलग राजनीतिक रंग के साथ एक साहसिक कदम बनाता है। इसे कई लोग इस समय के विशेष राजनीतिक माहौल में बड़े जोखिम के रूप में देखेंगे जो आगामी चुनावों से और गर्म हो जाएगा। यह फिल्म एक सार्वजनिक अस्पताल में ऑक्सीजन सिलेंडर की कमी के कारण मरीजों की मौत, किसानों की आत्महत्या, घटिया उपकरणों के खराब सौदे जो हमारे सैनिकों की जान को खतरे में डालते हैं, पानी और हवा को प्रदूषित करने वाले हमारे कारखानों या चुनिंदा व्यवसायियों, व्हीलर-डीलरों की सुरक्षा पर प्रकाश डालती है।

इसमें, फिल्म समाज की बुराइयों के खिलाफ सामान्य निंदा से परे जाती है क्योंकि वे अपना हक पाने के लिए संघर्ष करते हैं जिसे आम तौर पर दुष्ट बिचौलिए, भ्रष्ट राजनेता या रोजमर्रा के लोगों की परेशानियों की रूढ़ियों में चित्रित किया जाता है। यह सही है कि 'जवान' में अभी भी बहुत सारी सामान्य बातें हैं लेकिन उचित विषयों को भी उछाला गया है। इस लिहाज से शाहरुख और उनकी टीम ने बेहिचक वास्तविक मुद्दों को खोला है और पलायनवादी मसाला इस्तेमाल करते हुए उन ज्वलंत राजनीतिक सवालों को उभारा है जिन्हें कई लोग देख सकते हैं लेकिन वर्तमान राजनीतिक माहौल में बॉलीवुड के कुछ ही लोग ऐसे सवाल पूछने की हिम्मत करेंगे।

बहुत पहले यह माना जाता था कि बॉलीवुड इसलिए काम करता है क्योंकि हल्के- फुल्के गानों और नृत्यों से मिला मनोरंजन लाखों लोगों के लिए रोजमर्रा की जिंदगी के दुख से मुक्ति दिलाता है। पिछले कुछ दशकों में यह बदल गया। शुरुआती दौर की रोमांटिक कहानियों और अमीर-गरीब टिप्पणी से लेकर एंग्री-यंग-मैन, बोल्ड रोमांस वाली फिल्मों और फिर उदारीकरण के बाद कम लागत वाली फिल्मों का आगमन हुआ जिन्होंने नए विषयों के साथ प्रयोग किया। बदलते समय ने बड़े पर्दे पर आधुनिक समय के मुद्दों को और अधिक मुखर किया जैसे लिव-इन रिलेशनशिप, एलजीबीटीक्यू+अधिकार और उनके वैवाहिक संबंध, जातीय संघर्ष, 'मुठभेड़' हत्याएं, ग्रामीण-शहरी विभाजन, ऑटिज़्म, अकेलापन, मानसिक स्वास्थ्य आदि। पिछले कुछ वर्षों में कई फिल्मों में राजनीतिक संदेश भी रहे हैं और इस अर्थ में बॉलीवुड हमेशा राजनीतिक था लेकिन अप्रत्यक्ष तरीके से। यह ज्यादातर सुरक्षित क्षेत्र में खेला जाता था- बहुत से लोगों ने प्रतिष्ठान की आंखों में नहीं देखा लेकिन विषय पर झुकाव के साथ अपनी बात कही।

बॉलीवुड एक ऐसी जगह है जो गीत और नृत्य के लिए जानी जाती है जिसका घोषवाक्य मनोरंजन और ग्लैमर हैं। बॉलीवुड हमेशा एक जीतने वाला फॉर्मूला पसंद करता है, खासकर बड़े बजट की फिल्मों में जो मोटी फीस लेने वाले रॉकिंग सितारों से भरी होती हैं। क्या 'जवान' की सफलता के साथ यहां से यह बदल जाएगा? हमारे पास बॉलीवुड के लिए एक नए रास्ते का प्रस्ताव है, एक ऐसा रास्ता जो अपनी विशाल और बेजोड़ सॉफ्ट पावर का उपयोग करके इस तरह के कुछ महत्वपूर्ण संदेशों को घर-घर तक पहुंचा सकता है और एक तरह से बड़े बजट के असाधारण आयोजन में इस तरह का संदेश पहुंचाने का शायद ही कभी ऐसा प्रयास किया गया हो। इन अर्थों में, फिल्म सभी को सतर्क रखती है और नई कल्पनाओं तथा संभावनाओं को खोलती है कि खतरनाक राजनीतिक स्थानों में घुसने के बाद बॉलीवुड क्या कर सकता है।

फिल्म का मुख्य आकर्षण एक भाषण है जिसमें शाहरुख खान प्रत्याशी से पूछता है- 'प्रिय उम्मीदवार, आप अगले पांच वर्षों में हमारे लिए क्या करेंगे? अगर परिवार में कोई बीमार पड़ता है, तो आप उनके इलाज के लिए क्या करेंगे? मुझे नौकरी दिलाने के लिए आप क्या करेंगे? और यह सवाल उठाने के बाद नागरिकों से यह चुनने के लिए कहता है कि वे किसे वोट देंगे?'

फिल्म का संदेश स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरियों के क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन और सेवा के वितरण की मांग करना है। धर्म, नस्ल या जाति के नाम पर ध्यान भंग नहीं करना है। ये बिल्कुल ऐसे सवाल और मुद्दे हैं जो आज के भारत में फोकस में नहीं हैं। फिल्म में इन सवालों और मुद्दों को एक सफल मसाला प्रारूप में प्रस्तुत कर उन्हें किसी भी अन्य माध्यम की तुलना में जनता तक ले जाया गया है। इन ज्वलंत मुद्दों में से किसी पर गहराई से टिप्पणी नहीं की गई है। गहराई में न जाकर मुद्दों को उठाने का यह वही खेल है जो सत्तापक्ष ने किया है। इस रूप में 'जवान' की टक्कर वही रास्ता अपनाकर, उछल-कूद करके जनता के सामने दूसरा पक्ष रख रही है।

जनता तक इस संदेश की सुपुर्दगी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों की पृष्ठभूमि में आती है जो 2024 के चुनावों के बहुत ही जीवंत संदर्भ में है।

इनमें से कोई भी प्रगतिशील संदेश नहीं है या हमारे समय के जटिल राजनीतिक मुद्दों की एक महत्वपूर्ण परीक्षा नहीं है। यह एक आधारभूत शैली है लेकिन इसका महत्व यह है कि इसे वितरित किया गया था और इसकी सफलता- इसकी व्यापक पहुंच, इसके स्लीक पैकेज और इसके बड़े सवालों में है।

यह विडंबना पूर्ण है कि यह उन लोगों के अपरिष्कृत दृष्टिकोण से मेल खाता है जिन्होंने राष्ट्रीय एजेंडे को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है, राजनीतिक विमर्श को बदल दिया है और अब जो लोग सभी प्रकार के कनेक्शन खींचकर फिल्म का बहिष्कार करने के बेताब आह्वान के साथ सामने आए हैं- सनातन धर्म पर टिप्पणी के वर्तमान विवाद से लेकर शाहरुख खान की हालिया तिरुपति मंदिर की यात्रा तक।

हिंदी फिल्म उद्योग एक ऐसी जगह है जहां का चलन, काम की गुणवत्ता और दर्शकों द्वारा स्वीकृति है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दिवंगत सुशांत सिंह राजपूत के नाम पर क्या कहा गया है। हिंदू, मुस्लिम और अन्य सभी धर्मों के कलाकार और टेक्निशियन दर्शकों को सपनों की दुनिया में ले जाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

बॉलीवुड एक कुशल व्यवसाय मशीन है जहां आप चाहे किसी भी विभाग से जुड़े हों, जो आपको हर दिन खुद को साबित करने के लिए चुनौती देती है। पैसा कमाने और सफलता की सीढ़ियां चढ़ने का आनंद लेना खुद को चुनौती देना है, न कि राजनीतिक प्रतिष्ठान को चुनौती देना। शाहरुख की 'जवान' ने बात कहने के लिए उस जगह का विस्तार किया है। इस प्रयास को संरक्षित और पोषित किया जाना चाहिए और बढ़ने का अवसर दिया जाना चाहिए। इसलिए फिल्म की सफलता अच्छी खबर है लेकिन यह देखा जाना बाकी है कि आगे क्या होगा और बॉलीवुड इस नई राह को कैसे अपना सकता है या कैसे इसका अनुसरण करेगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। सिंडिकेट: दी बिलियन प्रेस)

हिंदी फिल्म उद्योग एक ऐसी जगह है जहां का चलन, काम की गुणवत्ता और दर्शकों द्वारा स्वीकृति है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दिवंगत सुशांत सिंह राजपूत के नाम पर क्या कहा गया है। हिंदू, मुस्लिम और अन्य सभी धर्मों के कलाकार और टेक्निशियन दर्शकों को सपनों की दुनिया में ले जाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

बीता सप्ताह

9 सितंबर
- जी-20 शिखर सम्मेलन में शामिल होने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक तथा जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा सहित कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष दिल्ली पहुंचे।
- टाइम पत्रिका की पहली शीर्ष सौ एआई सूची में अमेरिकी स्नेहा रेवनूर सबसे युवा रहीं।
- हांगकांग में 140 साल के इतिहास में सबसे ज्यादा बारिश हुई।
- 107 अल शबाब लड़ाकों ने सोमाली सरकार के सामने आत्मसमर्पण किया।

10 सितंबर
- जी-20 नई दिल्ली घोषणा पत्र आम सहमति से पारित हुआ।
- आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू भ्रष्टाचार के मामले गिरफ्तार किए गए।
- मोरक्को में बीती रात 6.8 तीव्रता वाले भूकंप आने से 1 हजार से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई।
- दक्षिण अफ्रीकी के कद्दावर नेता मुखर राजनीतिज्ञ जुलु प्रमुख मैगो बुथेलेजी का निधन हो गया।

11 सितंबर
- शांति के संदेश के साथ जी-20 सम्मेलन का समापन हुआ।
- आदित्य मिशन एल-1 ने तीसरी कक्षा में प्रवेश किया।
- बलूचिस्तान के डेटा बुगती जिले में छ: फुटबॉल खिलाड़ियों का अपहरण कर लिया गया।
- शोधकर्ता तुर्की के तीन हजार फीट नीचे गुफा में फंसे।

12 सितंबर
- एशिया कप-2023 के वन डे मैच में पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने सबसे बड़ी जीत दर्ज की।
- बॉलीवुड के जाने माने लेखक, गीतकार और कवि जावेद अख्तर को लंदन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज की ओर से डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।
- नाइजीरिया में नाव पलटने से 26 लोगों की मौत हो गई।
- केंद्र सरकार ने धान खरीदी के लिए बायोमीट्रिक प्रणाली को अनिवार्य किया।

13 सितंबर
- संसद भवन कर्मचारियों को नई ड्रेस की घोषणा की गई जिसमें कमल के फूल और खाकी रंग को जगह दी गई और गुलाबी रंग की नेहरू जैकेट।
- जम्मू-कश्मीर में राजौरी में सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया।
- नूंह हिंसा के भड़काऊ पोस्ट के लिए मोनू मानेसर को गिरफ्तार कर लिया गया।
- टीएमसी सांसद नुसरत जहां फ्लैट घोटाला मामले में ईडी के सामने पेश हुईं।
- एशिया कप सुपर फोर मुकाबले में श्रीलंका के खिलाफ भारत ने 213 रन बनाए।

14 सितंबर
- जम्मू-कश्मीर के अनंत नाग में आतंकियों और सेना के बीच मुठभेड़ में कर्नल मेजर व डीएसपी शहीद हो गए।
- श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त गोपाल वागले को आस्ट्रेलिया में नये भारतीय उच्चायुक्त नियुक्त किया गया है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल के कार्यालय को हिंदूजा समूह द्वारा लग्जरी होटल बनाया गया जिसका शुभारंभ 20 सितंबर को होगा।
- फेटएक्स कार्पोरेशन के भारतीय अध्यक्ष व सीईओ राज सुब्रमण्यम को 2023 का पिनेकल अर्वाड दिया जाएगा। जो 2023 आउसोर्सिंग 50 एशियन अमेरिकन्स इन बिजनेस अर्वाड में दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

15 सितंबर
- छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में प्रधानमंत्री मोदी ने एक कार्यक्रम के भाषण में कहा- छत्तीसगढ़ पावर हाउस के समान, जंगल, जमीन की रक्षा के साथ इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास करेंगे।
- इंडिया गठबंधन ने 10 चैनल्स के 14 एंकर्स का बहिष्कार करने का फैसला लिया।
- बॉलीवुड अभिनेता रियो कपाड़िया का निधन हो गया।
- बिहार में बागमती नदी में छात्रों से भरी नाव पलटने से 12 छात्र लापता हो गए।

क्या है इंडिया गठबंधन साझेदारों के बीच सीट बंटवारे का सबसे अच्छा तरीका?

■ नित्य चक्रवर्ती

28 विपक्षी दलों के इंडिया ब्लॉक की पहली समन्वय समिति ने आखिरकार साल के अंत में होने वाले दोनों राज्यों के विधानसभा चुनावों और 2024 की शुरुआत में होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए सीट बंटवारे की प्रक्रिया शुरू करने का फैसला किया है। प्रवक्ता केसी वेणुगोपाल ने बाद में यह स्पष्ट किया 13 सितंबर को समन्वय समिति की बैठक में कहा गया कि राज्य स्तरीय चर्चा को 30अक्टूबर तक पूरा करने का भरसक प्रयास किया जायेगा। प्रक्रिया इतनी जटिल है कि अगर 30अक्टूबर तक सीट बंटवारे की बातचीत पूरी नहीं भी हो तो भी कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों के नाम तय करने के लिए पर्याप्त समय है।

भाजपा खेमे से जुड़े कई टिप्पणीकार विपक्षी दलों की एकता और 543 लोकसभा सीटों में से प्रत्येक पर भाजपा और उसके सहयोगियों के खिलाफ गठबंधन से संयुक्त उम्मीदवार खड़ा करने के उनके दृढ़ संकल्प की सफलता पर संदेह करते हैं। उनका तर्क है कि ये अलग-अलग दल अपने परस्पर विरोधी राजनीतिक हितों के कारण कभी भी सीटों के बंटवारे पर सहमत नहीं हो पायेंगे।

हां, मतभेद हैं क्योंकि राजनीतिक दलों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, लेकिन वे एकजुट हैं तथा भाजपा के खिलाफ वन ऑन वन सीट शेयरिंग फॉर्मूले पर राजी हैं। एक बार जब यह भावना आ गई, तो सीट बंटवारे पर बातचीत निश्चित रूप से आसान हो जायेगी। 543 लोकसभा सीटों पर गौर करने पर पता चलता है कि लगभग 400 लोकसभा सीटों पर, भारत के साझेदार पहले से ही एक ब्लॉक के रूप में काम कर रहे हैं और केवल अन्य 143सीटों पर दावों पर मतभेदों को कम करने के लिए व्यापक बातचीत की आवश्यकता होगी।

कुल मिलाकर, लगभग 140 से 150 सीटों पर सीट बंटवारे की प्रक्रिया काफी समय लेने वाली होगी, लेकिन धैर्य और दृढ़ संकल्प से एक साथ लड़ने के लिए, इसे सफलता पूर्वक सम्पन्न करना होगा। केंद्रीय नेताओं को मुख्यालय में एक तंत्र बनाना होगा। यदि राज्य स्तर पर बातचीत रुक जाती है, तो केंद्र के पास इस मुद्दे को सुलझाने में मदद करने की शक्तियां होंगी। सीट बंटवारे की प्रक्रिया में यह एक बड़ा सूत्रधार होगा।

गठबंधन की बातचीत की बड़ी समस्या गुजरात, पंजाब, दिल्ली, असम और देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश को लेकर होगी। इन सभी राज्यों में कुल मिलाकर 140 सीटें हैं। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर में 6 सीटें हैं जिन पर भारत के तीन शक्तिशाली सहयोगियों कांग्रेस, नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी के बीच बातचीत होनी है। दिल्ली और पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और कांग्रेस मिलकर ज्यादातर सीटों पर भाजपा को हराने की क्षमता रखती हैं। आप भले ही इन दोनों राज्यों में खुद को कांग्रेस के मुकाबले बड़ी राजनीतिक पार्टी समझ रही हो, लेकिन लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को फायदा मिलेगा और आप को इस बारे में सोचना होगा।

गुजरात में कांग्रेस के पास शून्य और भाजपा के पास सभी 26 सीटें हैं। इस बात के कोई संकेत नहीं हैं कि 2019 के लोकसभा चुनावों के बाद सत्तारूढ़ भाजपा के मुकाबले कांग्रेस अपने समर्थन आधार में उल्लेखनीय सुधार कर पाई है, जबकि आपने गुजरात के कई शहरों में अपना आधार बढ़ाया है। भाजपा के खिलाफ कांग्रेस और आप का गठबंधन भाजपा की झोली में सीटों की कमी सुनिश्चित कर सकता है।

80सीटों वाला उत्तर प्रदेश भारत के लिए असली समस्या है। समाजवादी पार्टी और आरएलडी दोनों इंडिया गठबंधन के सक्रिय सदस्य हैं और लोकसभा चुनाव में भाजपा से लड़ने के लिए कांग्रेस के साथ पूर्ण गठबंधन करना अच्छी राजनीतिक समझ है। इस महीने की शुरुआत में घोसी उपचुनाव में समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार की जीत इस बात की पुष्टि है कि अगर इंडिया गठबंधन के सहयोगी एकजुट हो जायें तो वे उत्तर प्रदेश में भी बड़ी संख्या में सीटों पर भाजपा को हरा सकते हैं।

चार राज्य हैं, तमिलनाडु, बिहार, झारखंड और महाराष्ट्र जहां पहले से ही गठबंधन की पार्टियां मिलकर काम कर रही हैं। पहले तीन सत्तारूढ़ गठबंधन हैं। इन चारों राज्यों में 141 सीटें हैं। मानदंड तय है और इसे केवल बेहतर करने की आवश्यकता होगी।

त्रिपुरा को छोड़कर मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, हिमाचल, हरियाणा, उत्तराखंड और उत्तर पूर्वी राज्यों में सीट बंटवारे के संबंध में कांग्रेस निर्णायक पार्टी होगी। कुछ राज्यों में जहां कांग्रेस निर्णायक है, वहां सपा, सीपीआई और सीपीआई (एम) हैं जिनके पास कुछ समर्थन आधार है। कांग्रेस को इस बात पर विचार करना होगा कि 2024 के लोकसभा चुनावों में और यदि संभव हो तो विधानसभा चुनावों में भी भाजपा के खिलाफ विपक्ष की कुल लामबंदी सुनिश्चित करने के लिए इन इंडिया साझेदारों के समर्थन का उपयोग कैसे करे।

आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा में भी कांग्रेस अपने दम पर भाजपा और क्षेत्रीय पार्टियों से मुकाबला करेगी। इन तीन राज्यों में सीपीआई और सीपीआई (एम) दोनों का प्रभाव है। आंध्र प्रदेश में वाईएसआरसीपी और ओडिशा में बीजेडीएनडीए या भारत के किसी भी मोर्चे से जुड़े नहीं हैं, लेकिन बीआरएस के नेतृत्व वाला तेलंगाना एक अलग श्रेणी का है। पश्चिम बंगाल और केरल एक अलग श्रेणी के हैं। केरल में, कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ बनाम सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले एलडीएफ का वर्तमान पैटर्न जारी रहेगा क्योंकि केरल की 20 लोकसभा सीटों में से भाजपा के पास कोई सीट नहीं है। जो भी यूडीएफ या एलडीएफ से जीतता है वह इंडिया गठबंधन का है।

बंगाल में, सीपीआई (एम) के पास राज्य से कोई लोकसभा सीट नहीं है, जबकि कांग्रेस के पास दो सीटें हैं। इस बात की पूरी संभावना है कि ममता बनर्जी कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे पर राष्ट्रीय समझौते पर बातचीत करेंगी। इसके तहत, तृणमूल कांग्रेस को कुल 42सीटों में से चार या पांच सीटों की पेशकश करेगी, जबकि केंद्रीय स्तर पर कांग्रेस को असम में टीएमसी को एक सीट, मेघालय में एक सीट और मणिपुर में एक सीट पर सहमत होना होगा।

त्रिपुरा में, लोकसभा चुनाव में सीपीआई (एम) के पास अभी भी कुछ संभावनाएं हैं और कांग्रेस और टिपरामोथा के साथ स्थिर मोर्चा बन सकता है। हाल के विधानसभा उपचुनाव में, सीपीआई (एम) दोनों सीटों पर भाजपा उम्मीदवारों से हार गई। राज्य पार्टी ने भाजपा द्वारा बड़े पैमाने पर धांधली की शिकायत की और मतगणना का बहिष्कार किया। पार्टी के पास सुनहरा मौका था क्योंकि आदिवासियों की पार्टी टिपरामोथा ने सीपीआई (एम) उम्मीदवारों का समर्थन किया था। प्रचार के आखिरी दिनों में कांग्रेस और टीएम के साथ सीपीआई (एम) के बीच बहुत कम समन्वय था।

कांग्रेस और टीएम दोनों के नेता राज्य सीपीआई (एम) की संगठनात्मक विफलता से चिंतित हैं। इसे ठीक करना होगा। त्रिपुरा में लोकसभा की दो सीटें हैं। यदि कांग्रेस और टीएम के साथ सीपीआई(एम) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे का मजबूत गठबंधन होता है, तो भारत की लोकसभा सीटें जीतने की संभावना उज्ज्वल है।

पूर्वोत्तर भारत में असम की 14सीटों सहित 25 सीटें हैं। असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में कांग्रेस निर्णायक पार्टी होगी। कांग्रेस को भाजपा विरोधी क्षेत्रीय दलों, एआईडीयूएफ, तृणमूल कांग्रेस के साथ-साथ सीपीआई और सीपीआई (एम) के साथ मिलकर एक स्थिर मोर्चा बनाना होगा, जिनके कुछ प्रभाव क्षेत्र हैं। इसी तरह कांग्रेस को उन गैर-एनडीए दलों से भी संवाद करना होगा जो राज्यों में सक्रिय हैं। मणिपुर घटनाक्रम के बाद पूर्वोत्तर राज्यों में भाजपा विरोधी भावना है।

कुल मिलाकर, लगभग 140 से 150 सीटों पर सीट बंटवारे की प्रक्रिया काफी समय लेने वाली होगी, लेकिन धैर्य और दृढ़ संकल्प से एक साथ लड़ने के लिए, इसे सफलता पूर्वक सम्पन्न करना होगा। केंद्रीय नेताओं को मुख्यालय में एक तंत्र बनाना होगा। यदि राज्य स्तर पर बातचीत रुक जाती है, तो केंद्र के पास इस मुद्दे को सुलझाने में मदद करने की शक्तियां होंगी। सीट बंटवारे की प्रक्रिया में यह एक बड़ा सूत्रधार होगा। समय बीत रहा है। लोकसभा चुनाव समय से पहले हो सकते हैं। इंडिया गठबंधन के साझेदारों को भाजपा और उसके सहयोगियों से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जोशीमठ के जख्म

■ श्रुति जैन

जोशीमठ में भू-धंसाव की खबर ने सबका ध्यान खींचा था। इससे उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों के अलावा, दूसरे हिमालयी राज्यों में भी भय और चिंता पैदा हो गई थी कि कहीं उनका भी ऐसा ही हश्र न हो जाए। अधिकांश हिमालयी इलाके जोशीमठ क्षेत्र की तरह एक ऐसे 'विकास' के शिकार हैं, जिसने पहाड़ को खुर्द-बुर्द, खोखला और तबाह कर रखा है। यही वजह है कि इन इलाकों में आपदाओं की आशंका हमेशा बनी रहती है।

जोशीमठ का धंसना अभी रुका नहीं है। घरों और खेतों में नई दरारें आ रही हैं और पुरानी दरारें चौड़ी होती जा रही हैं। यहां के लोगों को डर है कि भारी बारिश में ज़मीन के बड़े-बड़े हिस्से नीचे खिसक सकते हैं। पुनर्वास की मांग को लेकर उनका धरना जनवरी से अप्रैल की शुरुआत तक जारी रहा। तब उन्हें त्वरित कार्रवाई का आश्वासन देते हुए धरना बंद करने के लिए कहा गया।

इसकी एक बड़ी वजह सरकार की तरफ से बद्रीनाथ यात्रा को बिना किसी झंझट के शुरू करना था। स्थानीय लोग विरोध प्रदर्शन फिर से शुरू करने की तैयारी में हैं क्योंकि उचित पुनर्वास योजना के अभाव में उनके पास अपने क्षतिग्रस्त घरों में रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। यह स्थिति ऐसे प्रश्न उठाती है जो अधिकांश हिमालयी क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक हैं।

विकास परियोजनाओं द्वारा अनैच्छिक विस्थापन की स्थिति में एक उचित पुनर्वास नीति बनाने का उत्तराखंड सरकार द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया है। पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, सरकार के प्रयास `एकमुश्त निपटान' तक ही सीमित हैं। जोशीमठ में तो मुआवजे का भुगतान केवल घरों के लिए ही किया जा रहा है। यह राशि अपर्याप्त है और अधिकांश अभी भी इसका इंतजार कर रहे हैं।

पहला सवाल ये है कि ऐसी आपदाओं के लिए कोई जवाबदेही तय क्यूं नहीं होती? हिमालयी क्षेत्र के पारिस्थितिक, भू-वैज्ञानिक रूप से संवेदनशील और भूकंप की दृष्टि से अत्यधिक सक्रिय होने के बावजूद हिमालयी राज्यों में जलविद्युत परियोजनाओं को बड़ी संख्या में बनाया जा रहा है। अध्ययनों से पता चला है कि इन परियोजनाओं के हरित ऊर्जा के दावे सही नहीं हैं। ये 'जोखिम भरे ढांचे' हैं जो सामाजिक और पारिस्थितिक रूप से अन्यायपूर्ण साबित हुए हैं।

विभिन्न शोध यह भी बताते हैं कि उत्तराखंड में 2013 और 2021 की बाढ़ जैसी आपदाओं को पैदा करने और बढ़ाने में इन परियोजनाओं की भूमिका है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित 'रवि चोपड़ा विशेषज्ञ समिति' ने भी ये पाया था। समिति ने तर्क दिया था कि ग्लेशियरों के घटने से बनी जोशीमठ जैसी कच्ची जमीनों पर ऐसी परियोजनाओं का निर्माण आपदा को निमंत्रण देने जैसा है।

जोशीमठ में 'तपोवन-विष्णुगाड परियोजना' 2005 में अपने शुरू होने के बाद से ही पूरे क्षेत्र में सामाजिक-पारिस्थितिक समस्याओं का कारण बनी है। 2021 की बाढ़ में सैकड़ों श्रमिक इसकी सुरंग में जिंदा दफन हो गए थे। यहां आपदा से आगाह करने के लिए कोई अलार्म सिस्टम तक नहीं लगाया गया था। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह परियोजना जोशीमठ शहर के साथ-साथ आसपास के कई गांवों में भी नुकसान के लिए जिम्मेदार है। वे करीब दो दशकों से इसका विरोध कर रहे हैं।

वर्ष 1976 की 'एमसी मिश्रा समिति' की रिपोर्ट ने यह सिफ़ारिश की थी कि यहां भारी मशीनरी का प्रयोग, ब्लास्टिंग, ड्रिलिंग और पेड़ों की कटाई नहीं होनी चाहिए। फिर भी इस परियोजना ने यहां सुरंगों का एक जाल बनाया, बोरिंग मशीन और विस्फोटकों का उपयोग करके इस नाजुक भूगोल और इलाके की स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। यह परियोजना भूवैज्ञानिक रूप से सही नहीं है। बार-बार आने वाली आपदाओं के कारण इस परियोजना का काम भी खटाई में पड़ता रहा है। यही वजह है कि इसके कार्यान्वयन में एक दशक से भी ज्यादा की देरी हो चुकी है। ऐसी परियोजना से होने वाले विनाश का बोझ स्थानीय लोग क्यों और कब तक झेलते रहेंगे?

दूसरा सवाल, स्थानीय लोगों को इलाके की सुरक्षा के बारे में अंधेरे में क्यों रखा जा रहा है, जबकि वे अपने क्षतिग्रस्त घरों में जागकर रातें काटने को मजबूर हैं। सात महीने के बाद भी जोशीमठ में भूमि धंसाव के कारणों, प्रभावों और भविष्य के खतरों के बारे में कोई व्यापक रिपोर्ट सामने नहीं आई है। सरकार ने जनवरी में सभी विशेषज्ञ संस्थाओं को भूस्खलन के बारे में कुछ भी जानकारी देने पर रोक लगा दी थी और अब तक आपदा का अध्ययन करने के लिए अपने द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट साझा नहीं की है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में आपदा की स्थिति से निपटने का यह तरीका कभी नहीं होता।

तीसरा सवाल, यदि सरकार सभी जोखिमों के बावजूद ऐसी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने पर आमादा है तो उसे प्रभावित लोगों का पुनर्वास सुनिश्चित क्यों नहीं करना चाहिए? हिमालयी राज्यों में ऐसी परियोजनाओं को चलाते बरसों हो गए हैं, लेकिन सरकार ने इनके प्रभावों और प्रभावितों के पुनर्वास के प्रति जिम्मेदारियों को परिभाषित करने के लिए कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी नहीं किए हैं।

पर्वतीय जगहों पर ऐसी परियोजनाओं का प्रभाव तुरंत नहीं दिखता, बल्कि उनके प्रभाव दीर्घकालिक और व्यापक होते हैं। वे कुछ अंतराल के बाद भी प्रकट होते हैं और उन क्षेत्रों को भी प्रभावित करते हैं जो परियोजना से एकदम सटे हुए नहीं होते। इसलिए ऐसी परियोजनाओं के 'प्रभावितों' की पहचान और पुनर्वास के प्रति परियोजना की जिम्मेदारियों को सही ढंग से परिभाषित करना जरूरी है।

विकास परियोजनाओं द्वारा अनैच्छिक विस्थापन की स्थिति में एक उचित पुनर्वास नीति बनाने का उत्तराखंड सरकार द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया है। पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, सरकार के प्रयास 'एकमुश्त निपटान' तक ही सीमित हैं। जोशीमठ में तो मुआवजे का भुगतान केवल घरों के लिए ही किया जा रहा है। यह राशि अपर्याप्त है और अधिकांश अभी भी इसका इंतजार कर रहे हैं। चूंकि लोग कहीं और जाकर बस पाने की स्थिति में नहीं हैं इसलिए अधिकांश लोग असुरक्षित घरों में रहने के लिए वापस आ गए हैं।

सरकार का ज़ोर आपदा के बाद भी यात्रा पर्यटन को सुचारू रूप से चलाने पर ही रहा, इसलिए आपदा को कम करके भी दिखाया जाता रहा। आपदा के बावजूद पर्यटकों की संख्या पर कोई सीमा नहीं रखी गई। इससे बड़ा सवाल उठता है- इस तरह अगर पहाड़ रहने के लिए अनुपयुक्त स्थानों में तब्दील कर दिये जाएंगे तो पहाड़ के निवासी आखिर कहां जाएंगे? ऐसे 'विकास' की उत्तराखंड के लोगों के लिए क्या प्रासंगिकता रह जाती हैं जिसने उनके घरों को रहने लायक नहीं छोड़ा है।

(लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। फिलहाल वे हिमालय की पारिस्थितिकी पर शोध कर रही हैं।)

बेतवा- पार्वती अंचल

सार-समाचार

कुर्मी क्षत्रिय समाज ने नपाध्यक्ष को सौंपा ज्ञापन

सिरोंज, देशबन्धु। कुर्मी क्षत्रिय समाज के प्रतिनिधि मंडल ने नगर पालिका अध्यक्ष मनमोहन साहू को ज्ञापन सौंपकर नगर में सरदार पटेल की प्रतिमा स्थापित करने की मांग की है। इस दौरान कुर्मी क्षत्रिय समाज के जिला अध्यक्ष भैरो सिंह कुर्मी, किन्नर सिंह, रघुवीर सिंह, नवल सिंह, ओम प्रकाश पटेल,तुलसी राम, जिला मीडिया प्रभारी लक्ष्मण सिंह कटियार और युवा कुर्मी क्षत्रिय संगठन के लगभग दो दर्ज़न सदस्य मौजूद थे। नपा अध्यक्ष मनमोहन साहू ने जल्दी कार्यवाही करने का आश्वासन दिया है। कुछ दिन पहले सिरोंज विधायक उमाकान्त शर्मा को भी इस आशय का ज्ञापन दिया जा चुका है। ज्ञापन में नगर के तीन स्थान भी सरदार पटेल की प्रतिमा हेतु सुझाये गए हैं। पहला बासौदा नाके के पास बसन्त पाटीदार की होटल के सामने, दूसरा शासकीय कॉलेज के आगे बाईपास चोराहे पर व तीसरा रोलपुरा चौराहे पर।

नर्स ने प्रभारी डॉक्टर पर लगाए आरोप

भेरुन्दा/नसरुल्लागंज, देशबन्धु। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाड़कुई के सामने शुक्रवार को इसी अस्पताल की एक नर्स ने हंगामा कर दिया। नर्स ने बरसते पानी में बीच सड़क पर बैठकर अस्पताल के प्रभारी डॉक्टर पर गंभीर आरोप लगाए। नर्स का आरोप है कि किसी नेता के कहने पर डॉक्टर ने उसका स्थानांतरण यहां से करा दिया है। नर्स रीना मालवीया का यह भी आरोप है कि प्रभारी डॉक्टर ने मुझसे जूनियर संविदा वालों को पैसे लेकर शासकीय क्वार्टर दे दिए पर मुझे क्वार्टर नहीं दिया। इधर खंड चिकित्सा अधिकारी सिविल अस्पताल भेरूंदा के डॉ.मनीष सारस्वत का कहना है कि मुझे एसडीएम ने कहा है की आप जाकर इस मामले की जांच करें। जांच के बाद जो भी सामने आएगा मामले पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

उमरावगंज में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन बनने से ग्रामीणों को होगी सुविधा: डॉ. चौधरी

- स्वास्थ्य मंत्री और विधायक पटवा ने किया 13 करोड़ से अधिक कार्यों का किया भूमिपूजन और लोकार्पण

रायसेन, देशबन्धु। भोजपुर विधानसभा क्षेत्र के उमरावगंज में आयोजित लगभग 13 करोड़ रू के विकास कार्यो का भूमिपूजन तथा लोकार्पण कार्यक्रम का स्वास्थ्य मंत्री डॉ प्रभुराम चौधरी तथा भोजपुर विधायक सुरेन्द्र पटवा द्वारा कन्यापूजन और दीप प्रज्जवलन कर शुभारंभ किया गया। उन्होंने ग्राम उमरावगंज में तीन करोड़ 6 लाख रूपए लागत से बनने वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का भवन भूमिपूजन किया तथा लगभग 10 करोड़ रूपए लागत से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत निर्मित सड़क मार्ग तथा पुलों का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री डॉ चौधरी ने कहा कि उमरावगंज में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन बनाया जा रहा हैं। इस भवन के साथ एक जी एवं एक एच टाईप आवास गृह, बाउंड्रीवाल एवं पहुंच मार्ग का भी निर्माण कराया जाएगा। इसके बन जाने से ग्रामीणों को गांव में ही इलाज की सुविधा होगी। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में विभिन्न प्रकार जांचे नि:शुल्क की जाएगीं और दवाईयां भी प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि मरीजों को त्वरित और बेहतर इलाज मिले, इसके लिए लगातार स्वास्थ्य सेवाओं तथा सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने आयुष्मान भारत योजना का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम में भोजपुर विधायक सुरेन्द्र पटवा ने उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि आज लगभग 10 करोड़ रू लागत से निर्मित सड़क मार्गो तथा पुलों का लोकार्पण किया गया है। इनके बन जाने से नागरिकों को आवागमन में सुविधा होगी

तथा क्षेत्र के विकास को भी गति मिलेगी। इसके अलावा उमरावगंज में तीन करोड़ 6 लाख रू लागत से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन का भी निर्माण कराया जाएगा। विधायक श्री पटवा ने कहा कि क्षेत्र के चहॅमुखी विकास के लिए वह लगातार प्रयासरत हैं। चाहे शिक्षा, सड़क, रोजगार, स्वास्थ्य हर क्षेत्र में विकास के काम किए जा रहे हैं। उन्होंने क्षेत्र में किए जा रहे विकास कार्यो और सरकार की विभिन्न योजनाओं का भी उल्लेख किया।

इन कार्यो का किया भूमिपूजन और लोकार्पण: स्वास्थ्य मंत्री डॉ चौधरी तथा विधायक श्री पटवा द्वारा गौहरगंज विकासखण्ड के ग्राम उमरावगंज में तीन करोड़ 6 लाख रू लागत से बनने वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन का भूमिपूजन किया गया। इस भवन के साथ एक नग जी एवं एक नग एच टाईप आवास गृह, बाउण्ड्रीवाल एवं पहुंच मार्ग का भी निर्माण कराया जाएगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत 780.93 लाख रू लागत से टी-04 रोजडाचक से गुदावल व्हाया उमरावगंज तक निर्मित 11.40 किमी लम्बे सड़क मार्ग, 107.18 लाख रू लागत से टी-04 रोजडाचक से गुदावल लोकल नाले पर पुल निर्माण चैनेज 5500 मीटर तथा लम्बाई 32 मीटर और टी-04 रोजडाचक से गुदावल लोकल नाले पर 104.38 लाख रू लागत के पुल निर्माण चैनेज 1925 मीटर तथा लम्बाई 40.6 मीटर का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी उपस्थित रहे।

मादक पदार्थों की धरपकड़ के लिए पुलिस ने चलाया अभियान

पुलिस ने की बड़ी कार्रवाई, डेढ़ लाख के गांजे के साथ आरोपी गिरफ्तार

भेरुन्दा/नसरूल्लागंज, देशबन्धु। भैरुंदा पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए डेढ़ लाख रुपए का गांजा और और एक कार कीमत 3 लाख रुपए बरामद कर आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। मादक पदार्थों की धरपकड़ के लिए पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गितेश कुमार गर्ग एवं एसडीओपी दीपक कपूर के मार्गदर्शन में एवं थाना प्रभारी भेरुन्दा गिरीश दुबे के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई। टीम को सूचना मिली की रामनिवास मीणा निवासी ग्राम गुलरपुरा के घर कुछ लोग आए हैं। घर के बाहर ग्रे कलर की हुंडई ईओन कार एपी05 सीए 2649 खड़ी है। जिनके पास गांजा है। सूचना पर पुलिस ने रामनिवास मीणा के घर में दबिश दी गई। जहां चार व्यक्ति पुलिस को आता देख भागने का प्रयास करने लगे जिन्हें पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ लिया। पूछताछ में उन्होंने अपना नाम रामनिवास मीणा निवासी ग्राम गुलरपुरा भैरुंद, अनिल पचौरी निवासी ग्राम पीलीकरार बुधनी, निहाल मालवीय निवासी ग्राम पीलीकरार बुधनी, नीलेश पखरवाल निवासी ग्राम पीलीकरार बुधनी का होना बताया। पुलिस ने उनके पास से एक सफेद प्लास्टिक की बोरी व 3 पालिथीन के पैकेट को चैकिंग करने पर अवैध गांजा होना पाया गया। आरोपियों के पास से कुल 8 किलो 700 ग्राम गांजा कीमती 1 लाख 50 हजार रुपए व आरोपी अनिल पचौरी से एक ग्रे रंग की हुंडई इओन कार एपी 05 सीए 2649 कीमत 3 लाख रुपये कुल कीमती 4 लाख 50 हजार रुपये जप्त किया। आरोपियों की पुलिस रिमांड न्यायालय से प्राप्त कर मामले में लिप्ट अन्य आरोपियों के बारे में वह मादक पदार्थ के लाने व खरीदने को लेकर पूछताछ की जाएगी। बताया जाता है कि आरोपी अन्य व्यक्ति से गांजा अधिक मात्रा में खरीदकर पुड़िया बनाकर फुटकर में बेचने का धंधा करते थे। ज्ञात हो कि 1 अगस्त को भी भेरूंदा पुलिस ने एक क्विंटल गांजा पकड़ा था। जिसका बाजार मूल्य 15 लाख रुपए था। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी भेरुन्दा निरीक्षक गिरीश दुबे, उपनिरीक्षक पूजा सिहं राजपूत, उपनिरीक्षक श्यामकुमार सूर्यवंशी, प्रधानआरक्षक दिनेश जाट, आरक्षक योगेश कटारे, आरक्षक विपिन जाट, आरक्षक पुष्पेन्द्र जाट, आरक्षक राजीव मरापो, महिलाआरक्षक वैशाली तिवारी का सराहनीय योगदान रहा है। पुलिस अधीक्षक द्वारा नगद राशि से टीम को पुरस्कृत करने की घोषणा की गई है।

हमनाम होने का फायदा उठाकर फर्जी रजिस्ट्री कराने वालों को सजा

सिरोंज, देशबन्धु। फर्जी भूमि स्वामी बनकर विक्रय पत्र कराने वाले रामसिंह यादव निवासी सारंगपुर एवं फर्जी प्रमाणपत्र जारी करने वाले पंचायत सचिव ओमप्रकाश यादव निवासी करीगाबाद एवं दस्तावेज लेखक एवं साक्षी अशोक कुशवाह वार्ड नम्बर 17 पंचकुईया सिरोंज एवं पहचानकर्ता लक्ष्मण लखपति निवासी कठालीबाजार सिरोंज को न्यायालय अति. सत्र न्यायाधीश सुरेन्द्र मेश्राम सिरोज जिला विदिशा द्वारा पांच-पांच साल के सश्रम कारावास एवं प्रत्येक को 10-10 हजार रूपये के अर्थदंड से दंडित किया गया है। आरोपियों को न्यायालय द्वारा उपजेल लटेरी भेज दिया गया है।

शासकीय सहायक लोक अभियोजन अधिकारी/ विशेष लोक अभियोजक मनीष वर्मा के अनुसार आरोपी 17/06/14 को ग्राम कल्याणपुर स्थित रामसिंह पुत्र धीरजसिंह यादव निवासी वार्ड नम्बर 17 मालीपुरा सिरोज की जमीन रामसिंह पुत्र मोहरसिंह निवासी ग्राम सारंगपुर ने फर्जी विक्रेता बनकर विक्रय पत्र सिरोंज पंजी कार्यालय में दर्ज कराया। उक्त रामसिंह ने हमनाम होने का फायदा उठाया और पंचायत सचिव ओमप्रकाश से मिलकर फर्जी प्रमाणपत्र बनाया। उक्त फर्जी भूमि स्वामी की पहचान दस्तावेज लेखक अशोक कुशवाह एवं लक्ष्मण लखपति द्वारा की गई थी। जब मूल भूमि स्वामी रामसिंह पुत्र धीरजसिंह की फसल, क्षतिपूर्ति की मुआवजा राशि की सूची में नाम न होने की वजह से वह हलका पटवारी के पास गया तो पता चला कि उक्त जमीन का विक्रय हो चुका है।

फरियादी ने इस संबंध में पुलिस अधीक्षक विदिशा एवं पुलिस एसडीओपी कार्यालय सिरोंज में आवेदन दिया जिसपर से जांचकर थाना सिरोंज द्वारा धारा 420, 467, 468, 471 / 34 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। न्यायालय में चालान प्रस्तुत किया गया। वर्ष 2016 से चली न्यायालयीन कार्रवाई में फर्जी भूमिस्वामी रामसिंह, पहचानकर्ता लक्ष्मण लखपति, दस्तावेज लेखक एवं पहचानकर्ता अशोक कुशवाह एवं फर्जी प्रमाणपत्र जारी करने वाले पंचायत सचिव ओमप्रकाश यादव को दोषी पायाञ इस प्रकरण में सरपंच मुन्नीबाई यादव के खिलाफ साक्ष्य न होने के कारण उसे दोषमुक्त कर दिया गया।

मकानों पर हाईटेंशन लाईन, रहवासियों को खतरे का अंदेशा

गंज बासौदा, देशबन्धु। नगर के जेल रोड पर स्थित 11 के.वी. विद्युत सबस्टेशन से नौलखी रोड, इदगाह रोड, रजोदा रोड, कवीट मोहल्ला, शिवनगर, रघुवर कालोनी, तिरंगा चौक से होकर से गुजरी हाईटेंशन विद्युत लाईन उक्त क्षेत्रों के हजारों रहवासी मकानों के उपर से निकली है जिससे इन क्षेत्रों के रहवासियों को हमेशा खतरे का अंदेशा बना रहता है। कई बार मकानों की छतों पर खेलते बच्चे और लोग इस लाईन की चपेट में आकर करेंट लगने से घायल हो जाते है। यही कारण है कि रहवासी दहशत के साये में जीवन जेने को मजबूर है जिसके चलते यहां के रहवासी अपने मकानों की छतों पर जाने से डरते ह। मकानों के उपर से निकली हाईटेंश्सन लाईन के कारण वह अपने मकानो के

उपर दूसरी मंजीलो निर्माण भी नहीं कर पा रहे है। 11 केवी विद्युत हाईटेंसन लाईन एक तरफ जहां जर जर अवस्था में है तो वही दूसरी तरफ यह जमीन से 8 से 10 फिट ऊपर तक है। यही नहीं यह लाईन जिन विद्युत पोलों से होकर गुजरी है वह भी लंबे समय से क्षतीग्रस्त अवस्था में है जिसके कारण यह हाईटेंशन लाईन और विद्युत पोल कभी भी टूटकर गिर सकते है। रघुवर कॉलोनी में लगा हाईटेंशन विधुत पोल ऊपरी सिरे से क्षतीग्रस्त होकर एक तरफ की ओर झुका हुआ है जिसके गिरने की आशंका यहां के रहवासियों को बनी रहती है उक्त विधुत लाईन को मकानों के ऊपर से हटा कर और नये विधुत पोल लगाने की मांग यहां के रहवासी स्थानीय जन प्रतिनिधियों और जिम्मेदार विद्युत अधिकारियों से कई वर्षो से लगातार करते चले आ रहे हैं लेकिन इसके बाबजूद भी इस दिशा में अभी तक कोई पहल नहीं हुई है।

गणेश जन्मोत्सव समारोह में 10 दिन तक होंगे अनेक आयोजन

सिरोंज, देशबन्धु। नगर के प्राचीन मंदिर श्री गणेश मंदिर गणेश की अथाई पर प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी 19 से 28 सितंबर तक श्री गणेश जन्मोत्सव समारोह उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा। इसकी व्यापक तैयारी के लिए श्री गणेश उत्सव समिति की अत्यावश्यक बैठक गुरूवार को मंदिर परिसर में आयोजित हुई। जिसमें दस दिवसीय परंपरागत धार्मिक आयोजनों एवं कार्यक्रमों के संबंध में विचार-विमर्श किया गया। इस दस दिवसीय आयोजनों में 19 सितम्बर को दोपहर में श्री गणेश जन्माभिषेक, पूजन आरती एवं स्थापना होगी। 20 सितम्बर को रात्रि में श्री गणेश जन्म कथा, 21 सितम्बर को कींगड़ी गायन, 22 सितम्बर को देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता, 23 सितम्बर को श्री अखंड रामायण पाठ प्रांरभ एवं 24 सितम्बर को समापन होगा। 25 सितम्बर को गम्मत, 26 सितम्बर को डोल ग्यारस उत्सव एवं भव्य झाँकी दर्शन, 27 सितम्बर

को महिला मंडल द्वारा संकीर्तन एवं 28 सितम्बर को दोपहर में हवन पूजन एवं श्री गणेश विर्सजन तथा सायं पांच बजे से भव्य चल समारोह का आयोजन होगा। बैठक में मंदिर के प्रधान पुजारी पं. नलिनीकांत शर्मा ने कहा कि इस वर्ष भी यह आयोजन नगर के सभी लोगों के सहयोग से धार्मिक भक्ति भाव से मनाया जाएगा। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष कृष्णविहारी पांडे ने कहा कि आज के युग में समय का बड़ा महत्व है इसलिए हम सभी भक्त इस दस दिवसीय आयोजन में अपना अमूल्य समय प्रदान कर उत्सव में सहयोग कर आयोजन को भव्यता प्रदान करें। बैठक में वरिष्ठ समिति सदस्य संतोष चौरे, रमेश यादव, महेन्द्रसिंह दांगी, जितेन्द्र वघेल, रघुनाथसिंह रघुवंशी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। बैठक का संचालन समिति सचिव शिवकुमार मिश्रा एवं आभार ओमप्रकाश दुवे ने व्यक्त किया। इस दौरान वरिष्ठ समिति सदस्य रघुनंदन शर्मा, फूलसिंह दांगी, डॉ. पी.के. विश्वास, हरबिबाबू भार्गव, मनमोहन साहू, राजेन्द्र गर्ग, के साथ ही बड़ी संख्या में समिति सदस्य उपस्थित थे।

किसान संघ ने 50 सूत्रीय मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

गंजबासौदा, देशबन्धु। भारतीय किसान संघ ने अपनी विभिन्न 50 सूत्रीय मांगों को लेकर शुक्रवार को एक ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम तहसीलदार को सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई कि प्रदेश में तिलहन मिशन लागू किया जाए। किसानों को सम्मान निधि के स्थान पर प्रति हेक्टेयर 20 हजार फसल लागत उत्पादन अनुदान दिया जाए। 2017 में हुए किसान आंदोलन में अनेक निर्दोष किसान फंसे हैं, उनपर लगे केस अविलंब वापस लिए जाए। वर्षा की कमी से सोयाबीन एवं सभी फसल में सभी जगह पर 40 प्रतिशत से 80 प्रतिशत नुकसान हो गया है। उसकी जांच एवं सर्वे करवाकर किसानों को राहत राशि प्रदान की जाए। जैविक प्रमाणीकरण के लिए कृषि विज्ञान केंद्र को अधिकार दिया जाए। किसानी एवं कृषि के विषयों पर विधानसभा का विशेष सत्र एक सप्ताह के लिए चलाया जाए। कर्जे के कारण किसान की मृत्यु होने पर उसका कर्ज समाप्त कर दिया जाए। कर्ज माफी योजना में सभी डिफाल्टर किसानों का ब्याज माफ किया जाए। केसीसी कर्ज में किसानों पर दंड ब्याज नहीं लगाया जाए। बीज में लूटामारी नही हो भाव सुनिश्चित हो । इसके अलावा ज्ञापन में कहा गया है कि बीज की नई प्रजातियां विकसित कर किसानों को उपलब्ध कराई जाए के अलावा अन्य मांगों का जिक्र ज्ञापन में किया गया। ज्ञापन सौंपने वालों में संघ के अध्यक्ष महेंद्र सिंह रघुवंशी सहित सदस्य उपस्थित थे।

रुपयों के विवाद में पार्षद के भाई का अपहरण, आरोपी गिरफ्तार

मुरैना, देशबन्धु। नूराबाद थाना क्षेत्र में घर के बाहर बैठे पार्षद के भाई का कुछ लोगों ने अपहरण कर लिया, जिससे इलाके में सनसनी फैल गई। इस दौरान फायरिंग किए जाने की भी जानकारी मिली है। घटना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और कुछ घंटे की मशक्कत के बाद पार्षद के भाई को मुक्त कराकर अपहरण करने वालों को गिरफ्तार कर लिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मुरैना नगर निगम के पार्षद डॉ योगेन्द्र मावई के भाई सुरेश सिंह मावई शुक्रवार की दोपहर अपने गांव वरेंण्ड में घर के बाहर बैठे थे, तभी कार में सवार आधा दर्जन से अधिक बदमाश आए और उसे गाड़ी में जबरदस्ती बिठालकर ले गए। आवाज सुनकर बाहर निकले परिजनों और ग्रामीणों ने बदमाशों को पकडने की भी कोशिश की, लेकिन बदमाश हथियार दिखाकर भाग गए। इस घटना के बाद इलाके में दहशत फैल गई। बताया जाता है कि बदमाशों ने कुछ राउंड फायर भी किए हैं लेकिन पुलिस इससे इनकार कर रही है। घटना की सूचना मिलने के पश्चात तत्काल पुलिस की टीम अपहरणकर्ताओं को खोजने में जुट गई और कुछ घंटे की मशक्कत के बाद सुरेश सिंह को मुक्त कराकर कुछ आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

हथियार तस्कर के कब्जे से 8 कट्टे, 2 पिस्टल, 10 जिंदा राउंड बरामद

मुरैना, देशबन्धु। जिले की रिठौरा थाना पुलिस ने मोटरसाइकिल से हथियारों की अवैध रूप से तस्करी कर रहे एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से आठ कट्टा, दो पिस्टल एवं 10 राउंड बरामद कर आर्म्स एक्ट का मामला दर्ज किया है। आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अवैध हथियारों की तस्करी करने वाले बदमाशों के विरुद्ध चलाई जा रही मुहिम के तहत रिठौरा कलां थाना प्रभारी जितेंद्र कुमार दौहरे को मुखबिर द्वारा सूचना मिली के पढावली चौराहे पर एक युवक मोटरसाइकिल लेकर अवैध हथियारों की तस्करी करने के लिए ले जा रहा है। सूचना पर पुलिस टीम ने पढावली चौराहे पर चेकिंग पॉइंट लगाकर टेकरी नूराबाद की तरफ से आती हुई एक मोटरसाइकिल को रोककर तलाशी ली तो मोटरसाइकिल के पीछे काले रंग के बैग में 8 कट्टे व दो पिस्टल तथा 10 जिंदा राउंड रखे हुए थे।

पुलिस ने अवैध हथियारों की कीमत करीब 1,10,000 रुपए और मोटरसाइकिल की कीमत करीब 70,000 रुपए बताई है। रिठौरा थाना पुलिस द्वारा आरोपी को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जा रही है और मुख्य सूत्रधारों का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

घर से शराब का जखीरा बरामद, आरोपी गिरफ्तार

मुरैना, देशबन्धु। जिले के बागचीनी थाना अंतर्गत चचिहा गांव में शुक्रवार की सुबह बागचीनी थाना पुलिस ने एक शराब तस्कर के घर पर छापा मारकर शराब का जखीरा बरामद किया है, जिसकी कीमत लगभग एक लाख रुपए बताई गई है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर आबकारी एक्ट का मामला दर्ज किया है तथा उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान के निर्देशन में अवश्य शराब के निर्माण एवं परिवहन पर रोक लगाने हेतु चलाई जा रही मुहिम के तहत बागचीनी थाना प्रभारी भूमिका दुबे को मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम चचिहा में आरोपी प्रवीण सिकरवार के घर पर अवैध शराब का जखीरा रखा हुआ है। उक्त सूचना पर पुलिस टीम ने घर की तलाशी के दौरान अवैध रूप से बिक्री करने के लिये रखी गई 12 पेटी देशी प्लेन मदिरा व 17 पेटी देशी लाल मसाला शराब की बरामद की है। (कुल मात्रा 264.4 बल्क लीटर) जिनकी कुल कीमत 97300 रुपये बताई गई है। पुलिस द्वारा आरोपी के विरुद्ध 34 आबकारी एक्ट का मामला दर्ज करते हुए उसे शराब के संबंध में जानकारी ली जा रही है। उक्त कार्यवाही में निरी. भूमिका दुबे, उनि अभिषेक जादौन प्रभारी सायबर सेल, उनि विवेक शर्मा, उनि, एन. के. गोरसिया, प्रआर अवनीश यादव, सिरदीप सिह आर. मानवेन्द्र, वीनेश सिह, ब्रजेश उच्चारिया एवं सायबर टीम से रामकिशन जादौन, प्रशांत डण्डौतिया एवं कुलदीप भदौरिया का सराहनीय योगदान रहा है।

ताप्ती तीरे

सार समाचार

18 को अशासकीय विद्यालयों रहेंगे बंद

आठनेर, देशबन्धु। 18 सितम्बर को प्रमुख 9 मांगों को लेकप्रदेश के सभी अशासकी स्कूल बंद रहेंगे। आठनेर विकासखंड स्कूल संचालक राजकुमार जायसवाल, मृदुल जायसवाल, रजनीश जैसवाल, रविंद्र झाड़े, गजेंद्र ठाकरे, सुनील पवार, डॉ प्रमोद नरवरे ने बताया की 25 सितंबर तक हमारी मांग नही मानी गई तो 27 सितंबर को भोपाल में शिक्षा स्वाभिमान रैली के साथ शक्तिप्रदर्शन किया जायेगा।

जंगली सुअरों का आंतक, किसानों ने तहसीलदार से की शिकायत

आठनेर, देशबन्धु। थाना क्षेत्र के ग्राम सांवगी में जंगली सुअरों के आंतक से खेत की मक्का फ़सल नष्ट कर दी है। हनुवंराव राने ने शुक्रवार को तहसीलदार को शिकायत दर्ज कराई है। बताया है कि जंगली सुअरों के आंतक से लगातार खेत की मक्का फ़सल नष्ट हो रही है।। किसान ने बताया है कि शासन से सर्वे कार्य करा कर उचित मुआवजा दिया जाए। सांवगी के किसान जंगली सुअरों से आतंक से भयभीत हैं।

स्व. सोनारे की स्मृति में 35 साल से परिवार मना रहा पोला पर्व

मुलताई, देशन्धु। प्रभात पट्टन विकास अंतर्गत ग्राम हिवरखेड़ में सोनारे परिवार द्वारा विगत 35 वर्षो से स्व. साहेबराव सोनारे की स्मृति में पोला पर्व मनाया जा रहा है । उनके परिवार द्वारा मनोनीत 5 सदस्यों के माध्यम से निर्धारित माप दंड केसाहेबराव बैल जोड़ियो का चयन किया जाता है। जिसमें प्रथम द्वितीय तृतीय एवं साज सज्जा को देखते हुए जोड़ियों का चयन किया जाता है। जिसमें सोनारे परिवार द्वारा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र साथ में घड़ी एवं ग्राम पंचायत, जनपद सदस्य , जिला पंचायत सदस्य द्वारा पुरस्कार दिए जाते हैं। गांव के सरपंच विश्वनाथ धोटे ने कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते हुए गोवंश के पालन करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में ग्राम के सभी नागरिको ने उपस्थित होकर बड़े हर्ष उल्लास से यह पर्व मनाया। जिसमें प्रथम पुरस्कार शंकर राव महाजन, द्वितीय पुरस्कार उत्तम राव सराटकर, तृतीय पुरस्कार भीमराव गांवडे, चतुर्थ पुरस्कार तुलसीराम गीद को साजसज्जा के लिए दिया गया।

पाटिल बने प्रदेश सलाकार

मुलताई, देशन्धु। जर्नलिस्ट कांउसिल ऑफ इंडिया ने हिन्दी दिवस के अवसर पर पत्रकारों की समस्याओ पर गहनता से विचार विमर्श करने के उपरांत पत्रकारों की समस्याओ को शासन प्रशासन तक पहुंचाने व उसका निराकरण कराने के लिए मध्यप्रदेश मे एक प्रदेश सलाहकार समिति घोषित की है। इस समिति में वरिष्ठ पत्रकारो के साथ युवा पत्रकारों को भी मौका दिया है। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनुराग सक्सेना के निर्देश पर मध्यप्रदेश के प्रदेश संयोजक हरी शंकर पाराशर की संतुति पर इस समिति को संगठन के राष्ट्रीय संयोजक डा. आर सी श्रीवास्तव ने घोषित किया। इस समिति में मध्य प्रदेश के मुलताई से आशीष पाटिल को प्रदेश सलाहकार समिति मे स्थान दिया गया।

भारी बारिश से नदी-नाले उफान पर, पारसढोह बांध के 4 गेट खोले

तापी सरोवर ओवरफ्लो, तापी वार्ड में फिर भरा पानी, नाले में बहा हम्माल, पानी में डूबी कार

मुलताई, देशबन्धु। क्षेत्र में 2 दिन से हो रही लगातार वर्षा के चलते नदी नाले उफान पर है। क्षेत्र से निकलने वाली नदियां तापी , वर्धा , अंभोरा , चूड़ामणि, छोटी तवा लबालब हो कर बह रही है। सिंचाई अमला अलर्ट पर है। क्षेत्र की प्रमुख सिंचाई परियोजना पारसढ़ोह बांध के भी 4 गेट खोल दिए गए हैं। बांध से लगे ग्रामों में अलर्ट जारी कर दिया गया है। पारेगांव रोड पर तापी से मिलने वाले नाले के तेज बहाव में एक व्यक्ति बह गया। जिसकी तलाश की जा रही है। वहीं अमरावती रोड पर दुर्गा मंदिर के समीप के नाले मे कार डूब गई और उसमें पानी भर गया। बड़े मुश्किल से इसमें सवार लोगों को निकाल कर कार को ट्रेक्टर से खींचकर बाहर निकाला गया। बारिश निरंतर जारी है, मुलताई नगर के तापी वार्ड, पटेल वार्ड में जलभराव की समस्या के कारण नागरिकों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। तापी सरोवर ओवरफ्लो होकर बह रहा है। यह मनोहारी दृश्य देखने के लिए लोग दूर-दूर से तापी तट पहुंच रहे हैं । तापी सरोवर इस वर्षा काल में दूसरी बार ओवरफ्लो हुआ है।

क्षेत्र की बड़ी सिंचाई परियोजनाओं में से एक पारसढ़ोह बांध में जल आवक निरंतर बढ़ती जा रही है। एहतियातन पारसढ़ोह बांध के पहले तीन गेट खोले गए थे बाद में 4 गेट 1-1 मीटर खोले गए हैं । जिसमें से 558.00 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड पानी की निकासी हो रही है । बांध पर तैनात उपयंत्री शिवकुमार नागले ने जानकारी देते हुए बताया कि पारसढ़ोह बांध का फुल टैंक लेवल 639.10 मीटर है और वर्तमान लेवल 639.05 है। बांध में निरंतर जल आवक हो रही है जिसकी आवश्यकता अनुसार निकासी की जा रही है। बांध क्षेत्र के सभी किसानों को अलर्ट जारी कर दिया गया है।

मुलताई नगर के पारेगांव रोड पर स्थित नाले पर शुक्रवार सुबह से हो रही तेज बारिश के कारण सुभाष वार्ड निवासी जीवन पवार बह गया। बताया गया की वह हम्माली का काम करता है, वह नाला पार कर रहा था, कि तभी अचानक उसका संतुलन बिगड़ गया और वह नाले में बह गया। देर शाम तक उसकी कोई जानकारी नहीं मिल पाई, उसकी तलाश की जा रही है। संदीप कामड़ी ने बताया कि जिस पुलिया से व्यक्ति बहा है इसके सीमांकन और अतिक्रमण हटाकर सुधार करने को लेकर अनेक बार वार्ड वासियों ने ज्ञापन दिया और वर्षा काल में दुर्घटना से भी चेताया था। अगर समय रहते प्रशासन ध्यान देता तो यह दुर्घटना नहीं होती।

वहीं दूसरी तरफ मुलताई नगर के प्रभात पट्टन रोड पर दुर्गा मंदिर के पास नाले में पानी भरने के कारण एक कार इस गहरे पानी में डूब गई। उस डूबी कार को निकालने के लिए ट्रैक्टर बुलवाया गया और ट्रैक्टर से खींचकर कार को पानी में से बाहर निकाला गया। गनीमत रही की कोई गंभीर हादसा नहीं हुआ। हालांकि कुछ देर के लिए कार पानी में तैरने लगी और कार में बैठे लोग घबरा गए, जिसे जैसे तैसे ट्रैक्टर के माध्यम से खींचकर पानी से बाहर निकाला गया।

भारी बारिश के चलते नगर के तापी वार्ड के कई घरों में पानी भर गया और सड़क पर भी करीब 2 फीट पानी जमा हो गया। पानी निकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण बनी स्थिति से निपटने के लिए दिनभर नगर पालिका का अमला पानी निकालने के लिए वार्ड में जुटा रहा। वार्ड पार्षद निर्मला उबनारे सीएमओ राजकुमार इवनाती, ब्रांड एंबेसडर सौरभ कड़वे आदि नपा के कर्मचारियों के साथ मौके पर जेसीबी के माध्यम से नाली बनवाकर पानी निकलवाने का प्रयास करते रहे।

सतपुड़ा जलाशय से लगातार छोड़ा जा रहा पानी

सारनी, देशबन्धु। भादो में मानसून के सक्रिय होने से एक बार फिर बारिश में दस्तक दे दी। गुरुवार रात से लगातार हो रही बारिश से सतपुड़ा जलाशय के रात में पांच गेट तीन फीट तक खोले गए लेकिन सुबह 7 से लेकर 9 बजे तक 4 फीट पर 7 गेट को खोलना पड़ा। इसके बाद भी बारिश लगातार तेज होने से शुक्रवार को सुबह 9 बजे से लेकर 11 तक पूरे 14 गेट खोल दिए गए थे। जिससे परसेकंड सतपुड़ा जलाशय से एक लाख 15 हजार 600 क्यूसेक पानी जलाशय प्रबंधन द्वारा गया। शुक्रवार सुबह 11 बजे के बाद 7 गेट ही खुले रहे जिनसे परसेकंड 44 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। बताया जाता है कि 24 घंटे में 51 एमएम बारिश दर्ज की जा चुकी है । समाचार लिखे जाने तक संपूर्ण क्षेत्र में 980 एमएम बारिश दर्ज हो चुकी है।

मुलताई को जिला बनाओ आंदोलन के 15वें दिन शुरू हुआ आमरण अनशन

आमला ब्लॉक की 11 पंचायतों ने दिया लिखित समर्थन

मुलताई, देशबन्धु। मुलतापी जिला बनाओ आंदोलन के 15 वें दिन शुक्रवार से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार के वरिष्ठ सदस्य मोहन सिंह परिहार ने अपना आमरण अनशन मां तापी का विधि विधान से पूजा अर्चना कर शुरू किया। वहीं आमला ब्लाक अंतर्गत आने वाली 11 पंचायतो द्वारा लिखित समर्थन जिला बनाओ आंदोलन को दिया गया। ब्लॉक कांग्रेस सेवादल आमला एवम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार संगठन द्वारा मंच पर पहुंचकर मोहन सिंह परिहार एवं जिला बनाओ आंदोलन का समर्थन किया गया। शुक्रवार भारी बारिश के बीच सुबह 11 बजे मोहन सिंह परिहार अपने परिवार के साथ तापी मंदिर पहुंचे जहां विधि विधान से उन्होंने पूजा अर्चना कर मां तापी का आशीर्वाद प्राप्त कर किया और बस स्टैंड स्थित शहीद किसान स्तंभ धरना स्थल पर पहुंचकर अपना आमरण अनशन शुरू किया।

उनके अनशन पर बैठते ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार संगठन के मनीष चिंटू खन्ना, बैतूल से रमेश भाटिया, अजय मिश्रा, मुलताई नगर पालिका के पार्षद अजय यादव, पिल्लू जैन समाजसेवी कय्यूम चौहान, एडवोकेट राजेश ठाकरे आदि सैकड़ों लोग धरना स्थल पर पहुंचे। मुलतापी जिला बनाओ आंदोलन मुलताई से शुरू होकर आमला क्षेत्र तक पहुंच चुका है। गुरुवार जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार ने मुलताई जिले में आमला के साथ सारणी को भी शामिल करने की मंशा जाहिर की, वही सारणी से कांग्रेस नेता भूषण कांति ने इस बात का समर्थन किया।

बंदरिया घाट पर गिरा पेड़, सारनी - छिंदवाड़ा मार्ग पर 4 घंटे बाधित रहा आवागमन

सारनी, देशबन्धु। सारनी से छिंदवाड़ा मार्ग पर शुक्रवार सुबह बंदरिया घाट के पास बड़ा पेड़ गिर जाने के कारण लगभग 4 घंटे से अधिक समय तक आवागन बाधित रहा। लोगों ने मुख्य मार्ग पर पेड़ गिरने की जानकारी वन विभाग को दी। वन विभाग के अधिकारियोंने मौके पर पोकलेन मशीन से भारी भरकम पेड़ को उठाकर एक तरफ किया। इस कार्य में 4 घंटे से अधिक समय तक सारणी से छिदवाड़ा दमोह मार्ग बंद रहा। गुरुवार से लगातार हो रही बारिश की वजह से पहाड़ी क्षेत्र के जंगलों के मिट्टी कमजोर होने की वजह से मुख्य मार्ग के आसपास लंबे समय से गिरने की कगार पर बने रहे पेड़ गिर रहे हैं। जिससे आवागमन प्रभावित हो रहा है हालांकि पेड़ के गिरने से कोई हताहत नहीं हुआ है लेकिन 4 घंटे से अधिक समय तक आवागमन बंद रहा। लोगों ने बताया कि बंदरिया घाट के आसपास लगभग आधा दर्जन से अधिक ऐसे पेड़ है जो इस तरह लगातार होने मुसलाधार बारिश में गिरकर दो पहिया चार पहिया वाहन चालकों को नुकसान पहुंचा सकते हैं ऐसे पेड़ों को चिन्हित करके गिरने से पहले वन विभाग के माध्यम से काटने का कार्य किया जाना चाहिए ताकि इस मार्ग से आवागमन करने वाले लोगों को इसी तरह की जनहानि ना हो सके।

हिंदी दिवस: हिंदी भाषा में कार्य करने के लिए किया प्रोत्साहित

सारनी, देशबन्धु। श्रम कल्याण संस्था के तत्वाधान में हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य अभियंता उत्पादन सारनी के सभागृह में सतपुड़ा ताप विद्युत गृह के अधिकारी कर्मचारी ठेकेदारों एवं ठेका श्रमिकों की उपस्थिति में हिंदी भाषा पर व्याख्या माला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अभियंता व्ही.के.कैथवार द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर मुख्य अभियंता व्ही.के.कैथवार ने कार्यालय कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए कर्मचारियों अधिकारियों को प्रोत्साहित किया है। उन्होंने कहा कि हिंदी शब्द ऐसा है हर किसी को समझ में आ जाता है इसलिए कार्यालय कार्य को भी अब अधिक से अधिक हिंदी शब्दों के उपयोग के साथ किया जाना चाहिए। सेवानिवृत्ति अधीक्षण अभियंता एस.के.वागद्रे ने हिंदी दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कक्षा 12वीं तक पढ़ने वाले भी हिंदी शब्द के माध्यम से कार्य किए जाने पर सभी कार्य को बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। कार्यक्रम को संजय त्रिपाठी,विवेक कोस,नितिन भागवत, भोजराज परमार,कु.सपना आंवलेकर, दीपिका आवालेकर, ठेका श्रमिक द्वारा हिंदी भाषा के उन्नयन एवं प्रचार प्रसार पर प्रकाश डाला इस अवसर पर मुख्य अभियंता द्वारा उक्त अधिकारी कर्मचारी एवं ठेका श्रमिकों को प्रसंसनिक पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अभियंता व्ही.के.कैथवार,पियूष गुप्ता,ज्योति गायकवाड, मनीष कुमार शर्मा,संजय त्रिपाठी,विवेक कोसे, नितिन भागवत,गोपाल राम अरोड़ा,डीके शर्मा सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी अधिकारी मौजूद रहे।

घर में निकला जहरीला रसल वाइपर

मुलताई, देशबन्धु। रामनगर में एक घर के छपरी में शुक्रवार सांप दिखाई दिया, जो कुकर की सिटी जैसी आवाज़ निकाल रहा था। इस की सुचना सर्प मित्र मोनू तायवाड़े को दी गई । सर्प मित्र द्वारा मौके पर पहुंच कर सांप को सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया गया। इसे घर मैं मौजूद वक्ति द्वारा प्रवेश करते हुऐ देखा गया था। यह सांप पटे के नीचे जा छुपा था, जिसे रेस्क्यू करने में करीब आधे घंटे का समय लगा। सर्पमीत्र ने बताया कि यह सामान्य सांप नहीं है । एक बहुत विषैला सांप है। भारत के चार बड़े विषैले सांपों में से एक है। यह सांप रसल वाइपर हैं। यह सांप 4 फीट लम्बा सांप था। इस सांप मैं हीमोटोक्सीन विष पाया जाता है। यह सांप बड़े ही आक्रामक होते है। इस सांप को हिंदी मैं डाबोइया और मराठी में घोनस कहा जाता है। इस सांप का विष बहुत ही खतरनाक होता हैं। इस के बाइट करने पर व्यक्ति को इंटरनल ब्लीडिंग होती है और 45 मिनट के भीतर इलाज नहीं हुआ हो तो मृत्यु भी हो सकती है। शरीर के उस हिस्से में गैंगरीन भीं हो सकता हैं । अक्सर देखा गया है कि इस के इलाज के बाद भी लोगो की जान भीं चली जाती है। यह सांप बच्चो को जन्म देता हैं। सांप पर्यावरण का अभिन्न अंग है जिसे बचाने में सहयोग करें।

त्योहारों को लेकर हुई शांति समिति की बैठक

तापी परिक्रमा क्षेत्र, विसर्जन स्थलपर व्यवस्था निर्माण को लेकर हुई चर्चा

मुलताई, देशबन्धु। आगामी त्योहारों को देखते हुए शांति समिति की बैठक थाना परिसर में नगर पालिका अध्यक्ष नीतू प्रहलाद परमार, एसडीओ पुलिस सुरेश पाल सिंह, थाना प्रभारी प्रज्ञा शर्मा, तहसीलदार अनामिका सिंह एवम् सीएमओ राजकुमार इवनाती की उपस्थिति में संपन्न हुई। इस बैठक में गणेश मंडल एवं अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े गणमान्य नागरिक एवं पत्रकार शामिल हुए । बैठक में पार्षदों एवं भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश साहू, हाजी शमीम खान, शेख जाकिर सहीत अन्य लोगों ने गणेश चतुर्थी को लेकर तापी परिसर क्षेत्र में व्यवस्थाओं को लेकर अपने सुझाव दिए। बैठक में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए एसडीओ पुलिस सुरेश पाल सिंह ने कहा कि गणेश चतुर्थी पर एवं गणेश प्रतिमा विसर्जन के समय झूलते विद्युत तारों से कोई दुर्घटना ना हो इसके लिए विद्युत विभाग को लिखा जाएगा और व्यवस्था सुधार कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि मुलताई में ट्रैफिक व्यवस्था बहुत अवस्थित है इसे सुधारा जाना चाहिए । उन्होंने नगर वासियों से अपील की है कि यह नगर आपका है अगर सुविधा लेना है तो आप लोगों को सुविधा देना भी होगी। हम लोग मिलकर ही एक अच्छी व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आगामी त्यौहारों को देखते हुए सभी विभागों को व्यवस्था बनाने कि जवाब देही सौपी जाएगी और सभी के साथ मिलकर अच्छी व्यवस्था निर्माण हो इसके प्रयास किए जाएंगे।नगर पालिका अध्यक्ष नीतू परमार ने नगर पालिका की ओर से विसर्जन स्थल बूकाखेड़ी पर बेहतर व्यवस्थाएं बनाए जाने की बात कही और तापी परिक्रमा स्थल पर भी सुधार कार्य कराने जानकारी।

दुर्घटना की सूचना पर भाई को देखने जा रहे भैया-भाभी को पिकअप ने मारी टक्कर

रेलवे पुलिया के पास सड़क दुर्घटना में 4 लोग घायल

मुलताई, देशबन्धु। नगर के छिंदवाड़ा रोड पर चिखली खुर्द रेलवे पुलिया के पास गुरुवार देर रात दो बाइक की आपस में भिड़ंत में चार लोग घायल हो गए। सड़क दुर्घटना की सूचना पाकर भाई को देखने जा रहे हैं भैया भाभी को भी चिखली के पास अज्ञात पिकअप ने टक्कर मार दी। जिसके चलते वे दोनों भी घायल हो गए।

प्राप्त जानकारी अनुसार ग्राम चिखली खुर्द निवासी सागर विट्ठल राव, राजेंद्र सहदेव और दिनेश तीनों एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर जा रहे थे, कि तभी सामने से आ रहे पारडसिंगा निवासी मयूर मुन्नालाल के साथ उनकी भिड़ंत हो गई। जिसके चलते चारों गिरकर घायल हो गए। जिन्हें 108 एंबुलेंस की मदद से मुलताई के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया। सागर के घायल होने की सूचना पाकर उनके भाई धर्मराज अपनी पत्नी के साथ उन्हें देखने के लिए घर से निकले ही थे, की मुख्य मार्ग पर एक अज्ञात पिकअप ने उन्हें टक्कर मार दी। जिसके चलते वे दोनों पति-पत्नी भी घायल हो गए। उन्हें भी नगर के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें परिजन निजी अस्पताल ले गए।

जलाराम मंदिर के पास सड़क दुर्घटना में 2 घायल

मुलताई, देशबन्धु। नगर के छिंदवाड़ा रोड पर स्थित जलाराम मंदिर के पास दो मोटरसाइकिलों की भिड़ंत में दो लोग घायल हो गए। जिसमें से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे मुलताई अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद बैतूल जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। वहीं दूसरे घायल को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। प्राप्त जानकारी अनुसार मुलताई नगर के अंबेडकर वार्ड निवासी संतोष पुत्र चंदनराव पहाडे उम्र 45 वर्ष जो की टाइल्स लगाने का काम करते हैं, मकान मालिक को टाइल्स दिलवाने के लिए जलाराम मंदिर के पास जा रहे थे, तभी अचानक विपरीत दिशा से आ रहे इंदिरा गांधी वार्ड निवासी अक्षय पुत्र यशवंत उम्र 30 वर्ष ने उन्हें टक्कर मार दी। जिसके चलते वे दोनों गिर गए। टक्कर इतनी जोरदार थी कि संतोष के सर में गंभीर रूप से चोट आई, और उनकी गाड़ी बुरी तरह से छतिग्रस्त हो गई। जिन्हें टाइल्स दुकान संचालक ने नगर के सरकारी अस्पताल पहुंचाया। जहां पर उनका प्राथमिक उपचार कर उन्हें बैतूल जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया। प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा बताया गया कि अक्षय पुत्र यशवंत शराब के नशे में तेज रफ्तार में गाड़ी चला रहा था, जिसके चलते दोनों बाइक आपस में गिर गई। अस्पताल प्रबंधन द्वारा तहरीर बनाकर पुलिस थाने भेज दी गई।

सार समाचार

भोजशाला में देवी सरस्वती की मूर्ति पुन: स्थापित करने दिया ज्ञापन

इटारसी देशबन्धु। अखिल भारत हिंदू महासभा जिला अध्यक्ष उमेश कुमार चौधरी के नेतृत्व में इटारसी एसडीएम कार्यालय में ज्ञापन देकर धार स्थित भोजशाला से सरस्वती की मूर्ति हटाने का विरोध दर्ज किया है। ज्ञापन में कहा गया कि हिंदू महासभा पिछले कई वर्षों से धार भोजशाला में मंदिर के लिए लड़ाई लड़ता आ रहा है और 10 सितंबर को मां सरस्वती की मूर्ति धार भोजशाला में प्रकट हुई जिसे प्रशासन ने बलपूर्वक हटा दिया। अखिल भारत हिंदू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव देवेंद्र पांडे, मध्य प्रदेश उपाध्यक्ष शिव कुमार भार्गव, प्रदेश संगठन मंत्री रोहित दुबे एवं अनेक पदाधिकारी पर गैर जमानती धाराओं में मामला दर्ज कर पदाधिकारी को फंसाने का प्रयास किया। इसके विरोध में प्रदेश अध्यक्ष शिवनारायण चौहान के आदेश पर मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले से हिंदू महासभा ज्ञापन के माध्यम से मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल से धार भोजशाला में मां सरस्वती जी की मूर्ति को पुन: स्थापित कर समस्त आम जनों को पूजा अर्चना दर्शन करने की अनुमति देने को मांग की है। भोजशाला में मां बागेश्वरी सरस्वती जी की मूर्ति पुन: स्थापित नहीं की जाती है तो अखिल भारत हिंदू महासभा पूरे मध्य प्रदेश में इसका पुरजोर विरोध करेगा।

खेलो एमपी यूथ गेम्स के तहत वेट लिफ्टिंग का ट्रायल आज

इटारसी देशबन्धु। खेलो इंडिया यूथ गेम्स की तर्ज पर खेलो एमपी यूथ गेम्स 2023 का आयोजन, मुख्यमंत्री की घोषणा के आधार पर, संचानालय खेल एवं युवा कल्याण विभाग भोपाल के निर्देशानुसार किया जाएगा। अंडर 18 वर्ष से कम आयु वाले वेट लिफ्टर खिलाड़ियों की ब्लॉक नर्मदापुरम में ब्लॉक स्तरीय वेट लिफ्टिंग (भारोत्तोलन) ओपन चयन ट्रायल 17 सितंबर, रविवार को वेस्ट सेंट्रल रेलवे मजदूर संघ रेलवे स्टेशन के सामने इटारसी में सुबह 09 बजे से रखी गई है। जिला पॉवर लिफ्टिंग एसोसिएशन के सचिव जगदीश जुनानियों ने कहा कि सभी खिलाड़ियों को आयु प्रमाण पत्र हेतु, ग्राम पंचायत/नगर पालिका/नगर निगम द्वारा जारी जन्म प्रमाण पत्र अथवा अध्यनरत विद्यार्थी बोर्ड परीक्षा की मूल अंक सूची व आधार कार्ड लेकर आना अनिवार्य है। सभी खिलाड़ी खेल यूनिफॉम (राउंड नेक टी शर्ट/हाफ एस्नेकर/शॉक्स व शूज में आएं।

भारी वर्षा को देखते हुए आज स्कूलों में अवकाश

नर्मदापुरम देशबन्धु। जिले में भारी बारिश की दृष्टिगत नर्मदापुरम कलेक्टर नीरज कुमार सिंह के निर्देश पर जिले के सभी स्कूलों में 16 सितंबर को अवकाश घोषित किया गया है। जिला शिक्षा अधिकारी शत्रुंजय सिंह बिसेन ने आदेश जारी कर बताया कि जिले के सीबीएसई आईसीएसई, केन्द्रीय विद्यालय तथा समस्त प्रकार के शासकीय/ अशासकीय विद्यालयों में 16 सितंबर को केवल विद्यार्थियों के लिए अवकाश घोषित किया।

बारिश से जलमग्न हुआ शहर, जिले में भारी बारिश का अलर्ट

नर्मदापुरम देशबन्धु। शुक्रवार सुबह से जिले में छाए बादलों के कारण दिन में भी शाम जैसा प्रतीत होता रहा। बारिश भी रुक-रुककर कभी तेज तो कभी हल्की बारिश हो रही है। दरअसल, बंगाल की खाड़ी में बने मानसूनी सिस्टम के एक्टिव होने का असर जिले में भी देखने को मिल रहा है। नर्मदापुरम के अलावा माखननगर, सोहागपुर, इटारसी में भी तेज बारिश हो रही है। तवा बांध में पानी की लगातार वृद्धि हो रही है। सीजन में पहली बार तवा डैम के सभी 13 गेट 20 फीट तक खोले गए हैं। जिनसे 4 लाख 8265 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। जिससे नर्मदा और तवा दोनों नदी में ऊफान आएगी। तवा के पानी को सेठानी घाट पहुंचने में करीब 7-8 घंटे लगते है। सेठानी घाट पर करीब 20 से

25 फीट पानी बढ़ने की संभावना है। निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को अलर्ट कर दिया गया है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे में भारी बारिश की संभावना जताई है। भारी वर्षा को देखते हुए कलेक्टर नीरज कुमार सिंह के निर्देश पर जिले के सभी स्कूलों में 16 सितंबर को अवकाश घोषित किया गया है। जिला शिक्षा अधिकारी शत्रुंजय सिंह बिसेन ने आदेश जारी कर बताया कि जिले के सीबीएसई, आईसीएसई, केन्द्रीय विद्यालय तथा समस्त प्रकार के शासकीय-अशासकीय विद्यालयों में 16 सितंबर को केवल विद्यार्थियों के लिए अवकाश घोषित किया गया है। इस बार मौसम की बेरुखी के कारण एक-दो पखवाड़े के अंतर से बारिश हो रही है। जिससे अब तक औसत से भी कम बारिश हुई है। जिले में अब तक औसत 37 इंच ही बारिश हो पाई है। जबकि औसत बारिश 54 इंच होती है। मौसम की विदाई नजदीक है। ऐसे में बारिश होने से उम्मीद है कि औसत पूरा हो जाएगा। अगले 24 घंटे में भारी बारिश होने की संभावना बनी हुई है।

किसानों ने राहत की सांस

लगभग एक पखवाड़े से अच्छी बारिश ने होने से किसानों की चिंताएं बढ़ती जा रहीं थी। किसानों की धान की खेती पर्याप्त पानी नहीं मिलने से प्रभावित हो रही थी। शुक्रवार को हुई तेज बारिश से धान के खेतों में पानी आ गया है। किसानों को खेती कार्य में आसानी हुई है। फसल बेहतर होने की उम्मीद भी जगी है, किसानों ने इस बारिश को धान के लिए बेहतर बताया है। साथ ही सोयाबीन की फसलों में कीट का प्रकोप बढ़ रहा था और फसल पीली होकर सूखने लगी थी। फसलों को तेज बारिश का इंतजार था। अचानक तेज बारिश शुरू होने से किसानों के चेहरे खिल गए हैं।

जगह जगह भरा पानी

बारिश पूर्व हर साल नगर पालिका लाखों रुपए खर्च कर नाली नालों की साफ सफाई कराती है। जल निकासी की व्यवस्थाएं दुरुस्त करने जिले के आलाधिकारी आदेश पर आदेश देते रहते हैं, लेकिन एक दो दिन अच्छी खासी बारिश होने से ही नपा की तमाम व्यवस्थाओं की पोल खुल जाती है। जब बारिश के कारण जगह जगह पानी भर जाता है। नालों की गंदगी सड़कों पर बह जाती है। आम लोगों का कहना है कि हर साल जिम्मेदार अधिकारी कर्मचारी आखिर यह कैसी जिम्मेदारी निभाते हैं।

नर्मदा का बढ़ेगा जलस्तर

कार्यपालन यंत्री तवा परियोजना वीके जैन ने बताया कि तवा डैम के कैचमेंट में लगातार भारी वर्षा हो रही हैं। जिसके चलते तवा डैम के 13 गेट 20-20 फीट तक खोले गए हैं। जिससे लगभग 4 लाख 8265 क्यूमेक्स पानी छोड़ा जाएगा। यह यह पानी लगभग 12 बजे नर्मदापुरम के सेठानी घाट पहुंचेगा। जिससे सेठानी घाट पर नर्मदा नदी का जलस्तर अधिकतम 962 फीट बढ़ने की संभावना हैं। इसी प्रकार बरगी बान्ध जबलपुर का वर्तमान लेवल 422.85 मीटर है। जो एफआरएल से अधिक है और निरंतर ब? रहा है। बान्ध के कैचमेंणट एरिया मे विगत 48 घण्टे में 79 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है। शुक्रवार शाम 5 बजे 3288 क्यूमेक जल की निकासी 13 गेटों औसत उँचाई 1.65 मीटर से की जायेगी। जिसका पानी लगभग 36 घंटे में नर्मदापुरम पहुंचेगा। सभी से नर्मदा के तटों से उचित दूरी बनाए रखने की अपील की गई है।

कलेक्टर-एसपी ने सेठानी घाट एवं शहर के निचले इलाकों का किया निरीक्षण

लगातार भारी वर्षा को ध्यान में रखते हुए सभी अधिकारी कर्मचारी अलर्ट रहें। कोई भी अधिकारी मुख्यालय से बाहर न जाए। आपदा प्रबंधन से संबंधित सौंप गए दायित्वों पूरी तत्परता से क्रियान्वन करें। मां नर्मदा तट के ग्रामों में तटों से सुरक्षित दूरी बनाए रखने की मुनादी कराएं। यह निर्देश कलेक्टर नीरज कुमार सिंह ने राजस्व ,नगरपालिका, जनपद, होमगार्ड एवं अन्य आपदा प्रबंधन से संबंधित अधिकारियों को दिए हैं। शुक्रवार को कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक डॉ गुरकरण सिंह ने लगातार भारी वर्षा एवं तवा बांध से पानी छोड़े जाने के दृष्टिगत नर्मदापुरम नगर के सेठानी घाट एवं अन्य ग्वालटोली , संजय नगर आदि निचले इलाकों का निरीक्षण किया। उन्होंने एसपीएम स्थित राहत पुनर्वास केंद्र का भी अवलोकन किया। उन्होंने नगर पालिका को निर्देश दिए की चिन्हित राहत पुनर्वास केंद्रों में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं रहें। आवश्यकता पड़ने पर निचले इलाकों से लोगों को इन केंद्रों में शिफ्ट किया जाए। निचले इलाकों के रहवासियों को सतर्क करने के लिए मुनादी भी की जाए। होमगार्ड एवं एसडीआरएफ का बल भी मुस्तैद रहें। उन्होंने सेठानी घाट स्थित कंट्रोल रूम एवं कलेक्ट्रेट स्थित कंट्रोल रूम का प्रभावी क्रियान्वन करने के भी निर्देश दिए।

कलेक्टर एवं एसपी ने लेंडीया नाले स्थित पंप हाउस का भी निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को तैनात करने और आवश्यकता पड़ने पर पंप का व्यवस्थित संचालन करने के निर्देश दिए। ताकि शहर के निचले इलाकों में जलभराव की स्थिति निर्मित न हों। बता दे कि लेंडीया नाले स्थित पंप हाउस पर 100 -100 हॉर्स पावर के 4 पंप और 75 -75 हॉर्स पावर के 4 पंप इस प्रकार कुल 8 पंप सक्रिय हैं। जिनके जल प्रवाहित करने की क्षमता 420 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड है। जिससे भारी वर्षा के दौरान शहर का जलस्तर 954 फिट होने की स्थिति में सतरस्ता चौक , हलवाई चौक , जिला चिकित्सालय सहित अन्य प्रमुख स्थानों से होकर आने वाली पानी को नर्मदा में प्रभावित किया जाएगा। जिससे जलभराव की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। निरीक्षण के दौरान अपर कलेक्टर देवेंद्र कुमार सिंह, सिटी मजिस्ट्रेट संपदा सराफ, एसडीओपी पराग सैनी, नायब तहसीलदार कीर्ति प्रधान, नगरपालिका से प्रशांत जैन, प्रतिमा बेल्झिया सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहें। वहीं कलेक्ट्रेट कार्यालय नर्मदापुरम में बाढ़ कंट्रोल रूम सुचारू रूप से संचालित हैं। जिसका दूरभाष क्रमांक 07574251292 हैं। कंट्रोल रूम 24 घंटे सक्रिय है, जिसके लिए तीन शिफ्ट में अधिकारी कर्मचारी की ड्यूटी लगाई गई हैं।

आत्मा योजना: पवारखेड़ा में कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा का हुआ आयोजन

नर्मदापुरम देशबन्धु। सबमिशन आन एग्रीकल्चर एक्स्टेंशन आत्मा अंतर्गत कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केंद्र पवारखेड़ा में शुक्रवार को कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा खरीफ इंटरफेस का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में उप संचालक सह परियोजना संचालक आत्मा जेआर हेडाऊ द्वारा कृषकों को वर्तमान फसल स्थिति अनुसार वैज्ञानिकी एवं प्रक्षेत्र अधिकारी कर्मचारियों से निरंतर समन्वय कर समस्याओं के समाधान हेतु प्रेरित किया गया। फसलों की वर्तमान स्थिति अनुसार कृषि विज्ञान केंद्र, बनखेड़ी से आये कृषि वैज्ञानिक डॉ ब्रजेश नामदेव द्वारा खरीफ फसलों में कीट व्याधि के प्रबंधन के रासायनिक, जैविक उपाय बताये गये एवं डॉ देविदास पटेल द्वारा प्राकृतिक खेती में उपयोगी घटक बीजामृत, घनजीवामृत, जीवामृत, नीमास्त्र, दशपर्णी घोल, छाछ के उपयोग एवं फसलों की नवीन किस्मों की विस्तृत जानकारी दी गई।

कृषि महाविद्यालय पवारखेड़ा से उपस्थित हुए सहायक प्राध्यापक डॉ विकास जैन द्वारा भूमि संरक्षण, नरवाई प्रबंधन एवं फसलों के पैकेज आफ प्रेक्टिस संबंधी जानकारी कृषको को दी गई एवं सहायक प्राध्यापक डॉ विनोद बेड़ा द्वारा फसलों की उन्नतशील किस्मों एवं फसल उत्पादन तकनीक विषय पर विस्तृत विवरण दिया। कृषि वैज्ञानिक डॉ दीपक खांडे, द्वारा पौषक तत्व प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण आदि विषयों से कृषकों को जागरुक किया गया। उन्नतशील कृषक श्री गोपाल कुशवाहा द्वारा खेती में नवाचार अंतर्गत किये गये कार्यो का अनुभव कृषको से साझा किया गया।

जीनियस प्लानेट स्कूल में हिंदी सप्ताह का समापन

इटारसी देशबन्धु। जीनियस प्लानेट सीनियर सैकंड्री स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर जीनियस के सभागार में विद्यार्थियों एवं शिक्षक शिक्षिकाओं ने हिंदी भाषा पर अपने विचार रखे। विद्यार्थियों ने बड़े ही रोचक तरीके से अपनी बात सदन में रखीद्य कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना के साथ हुई। संचालन कर रहे आलोक शुक्ला ने विद्यार्थियों को अपनी बात सदन में रखने के लिए आमंत्रित किया। इसी क्रम में शिक्षिकाओं ने भी हिंदी की खूबियां को बताते हुए विद्यार्थियों से कहा कि अंग्रेजी के साथ-साथ आपको हिंदी में भी दक्ष होना आवश्यक है। आने वाला समय हिंदी का होगा, क्योंकि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें एक शब्द में अनेक अर्थ शब्द समाहित होते हैं। क्योंकि हिंदी बहुत सरल सहज और एक वैज्ञानिक भाषा है। विद्यार्थी अरमान सिद्दीकी ने कहा कि हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में अपना पूरा उद्बोधन हिंदी में दिया था। हिंदी की महत्वता को विद्यार्थियों ने अन्य क्षेत्रीय भाषाओं मैं भी व्यक्त किया कार्यक्रम के समापन अवसर पर हिंदी शिक्षिका अर्चना पटेल ने संचालक जाफ़र, मनीता सिद्दीकी, प्राचार्य विशाल शुक्ला एवं उपस्थित सभी शिक्षक शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार पर प्राचार्य सम्मेलन में हुई चर्चा

इटारसी देशबन्धु। केंद्रीय विद्यालय संगठन भोपाल के संभागीय स्तर के तीन दिवसीय वार्षिक प्राचार्य सम्मेलन -2023 के दूसरे दिन की शुरुआत उपायुक्त आर सेंथिल कुमार के साथ ही अन्य उच्च अधिकारियों एवं उपस्थित सभी प्राचार्यों द्वारा प्रात: वंदन एवं प्रार्थना से हुई। सहायक आयुक्त श्रीमती रानी डांगे ने कार्यशाला के पहले दिन के मुख्य- मुख्य बिंदुओं की संक्षिप्त आवृत्ति द्वारा नवीन उद्देश्यों की तरफ कदम बढ़ाया। विशेष उद्देश्य प्राप्ति की अगली कड़ी में मासिक परीक्षा परिणाम, उस पर निगरानी एवं कक्षा 12 वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम का विश्लेषण, उसमें गुणवत्तापूर्ण सुधार हेतु योजना, विद्यालय में लगातार अनुपस्थित होने वाले विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के कारणों की खोज कर उनकी अनिवार्य रूप से नियमित उपस्थिति हेतु कारगर कदम उपायुक्त ने सुझाए।

हिंदी दिवस पर मानसरोवर ने मनाया स्थापना दिवस

इटारसी देशबन्धु। मानसरोवर साहित्य समिति के तत्वावधान में हिंदी दिवस के अवसर पर संस्था ने अपना 49 वॉ स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया। ईश्वर रेस्टोरेंट में आयोजित इस भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम की अध्यक्षता मानस मर्मज्ञ संतोष सरवरिया ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार टीआर चौलकर तथा सुप्रसिद्ध गीतकार रामवल्लभ गुप्त विशेष रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम समाज सेवी कवयित्री राधा मैना के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। शुभारंभ अतिथियों ने मां सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्वलन के साथ हुआ। मानसरोवर साहित्य समिति के अध्यक्ष राजेश दुबे ने अपने स्वागत उद्बोधन में अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मानसरोवर के आगामी स्थापना दिवस पर स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया जाएगा। संस्था की ओर से सर्वश्री मदन बड़कुर तन्हाई, विनय चौरे, कमल पटेल कमल, ब्रजमोहन सोलंकी, विकास उपाध्याय,

आशीष दुबे बबलू, हनीफ खान आदि ने आमंत्रित अतिथियों का भावभीना स्वागत किया। पावस गीत बहार में आमंत्रित कवियों जफरुल्लाह खान जफर, टीआर चौलकर, रामवल्लभ गुप्त, रामकिशोर नाविक, मोहन झलिया, नर्मदाप्रसाद मालवीय, स्वर्णलता छेनिया, बीबीआर गांधी, मदन तन्हाई, सुनील जनोरिया, विकास उपाध्याय, गुलाब भूमरकर, विनय चौरे, कमल पटेल कमल, अविनेश चंद्रवंशी, राजेन्द्र भावसार, मोहम्मद आफ़ाक, हनीफ खान की प्रस्तुति से श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राधा मैना ने कहा कि इस कार्यक्रम ने उनके मन पर अमिट छाप छोड़ी है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संतोष सरवरिया ने हिन्दी के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम में उनकी सहभागिता से वे स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

5 सूत्री मांगों को लेकर पटवारी 18 दिन से कलमबंद हड़ताल पर

हड़ताली पटवारियों ने वृद्धाश्रम में बुजुर्गों को कराया भोजन

इटारसी देशबन्धु। मध्यप्रदेश पटवारी संघ भोपाल के आह्वान पर तहसील इटारसी में पांच सूत्री मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी है। आज हड़ताल का 18 दिन है। इटारसी तहसील के समस्त 41 पटवारी टेंट लगाकर कलम बंद अनिश्चितकालीन हड़ताल पर बैठे हैं। पटवारियों की प्रथम मांग वेतनमान को लेकर है, वर्ष 2008 से अभी तक किसी प्रकार का वेतन सुधार नहीं किया गया है। ग्रेड पे 2100 ही चल रहा है, वर्तमान में पटवारी की मांग है कि 2800 ग्रेड पर किया जाए। दूसरी मांग में समयमान वेतनमान की मांग है। समय मान वेतन पद के सापेक्ष ना होकर पे ग्रेड के सापेक्ष में दिया जाता है पद के सापेक्ष में समय वेतनमान दिया जाना चाहिए। तीसरी मांग में पदोन्नति है, पटवारी को राजस्व निरीक्षक, नायब तहसीलदार, के पद पर पदोन्नति किया जाना चाहिए, पदोन्नति नहीं दी गई है। चौथी मांग में भत्ते में बढ़ोतरी की है। 10 वर्षों से अधिक समय हो गया है, पटवारी के वेतन के भत्तों में किसी प्रकार की बढ़ोतरी नहीं की गई है। फिक्स टीए 300 के स्थान पर 3000 रुपए दिया जाना चाहिए, आवास 258 रुपए के स्थान पर 3000 दिया जाना चाहिए। अतिरिक्त हल्का का कार्य करने पर 500 रुपए दिया जाता है, जबकि 10000 रुपए अतिरिक्त हल्के का दिया जाना चाहिए। मोबाइल एवं डाटा भत्ता 1000 रुपए, कार्यालय भत्ता 2000 देने की मांग की है। पांचवी मांग में अन्य संसाधनों की उपलब्धता कराया जाना, नया मोबाइल जिससे आनलाइन गिरदावरी की जा सके, एटीएस मशीन, रोवर मशीन से सीमांकन किया जा सके।

विधायक डॉ सीतासरन शर्मा, नपाध्यक्ष पंकज चौरे ने किया फूल मालाओं से स्वागत

द्वारिकाधीश के दर्शन के लिए रवाना हुए 146 तीर्थ यात्री

इटारसी देशबन्धु। श्री द्वारिकाधीश भगवान के दर्शन के लिए गुजरात में मौजूद द्वारिका नगरी के लिए नर्मदापुरम जिले से 146 यात्रियों का जत्था आज रेलवे स्टेशन से रवाना हुआ। इसके पूर्व यहां रेस्ट हाउस परिसर में सभी यात्री एकत्र हुए। यहां मप्र विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं नर्मदापुरम विधायक डॉ सीतासरन शर्मा, नगरपालिका अध्यक्ष पंकज चौरे, सीएमओ रितु मेहरा ने सभी तीर्थ यात्रियों को फूलमाला पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि राजा तिवारी, पार्षद जिमी कैथवास, शहबाज बेग, शुभम गौर, कुंदन गौर, भाजयुमो जिला अध्यक्ष दीपक महाला, नगर मंडल भाजपा महामंत्री राहुल चौरे, मंडल अध्यक्ष अभिषेक निर्मल सहित अन्य मौजूद थे। इस अवसर पर तीर्थ यात्रियों को संबोधित करते हुए विधायक डॉ सीतासरन शर्मा ने कहा कि हमारे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान श्रवण कुमार बनकर बुजुर्गों को तीर्थ दर्शन करा रहे हैं, अब हवाई जहाज तक से तीर्थ दर्शन के लिए बुजुर्गों को भेजा जा रहा है, यह सिर्फ भाजपा की सरकार ही कर सकती है। डॉ शर्मा ने कहा कि कांग्रेस की सरकारों ने कभी कुछ नहीं सोचा। वे तो भगवान राम तक को सुप्रीम कोर्ट में काल्पनिक पात्र बता चुके हैं। जब कमलनाथ पंद्रह महीने सरकार में थे तो तीर्थ दर्शन योजना तक बंद कर दी। विधायक डॉ शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार हर वर्ग के लिए कार्य करने वाली सरकार है। इस अवसर पर नगरपालिका अध्यक्ष पंकज चौरे ने कहा कि तीर्थ यात्रा कराने से बड़ा कोई पुण्य जीवन में नहीं है, आप सबकी यात्रा के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रबंध किया है। आप सभी की यात्रा सुखमय हो। इस अवसर पर अवसर पर एमजीएम कॉलेज जनभागीदारी समिति अध्यक्ष डॉ नीरज जैन, सामाजिक कार्यकर्ता मनीष ठाकुर, भाजपा मंडल अध्यक्ष पुरानी इटारसी मयंक मेहतो, भाजपा मंडल महामंत्री राहुल चौरे, भाजयुमो जिला मंत्री गोपाल शर्मा, युवा मोर्चा महामंत्री शुभम सिंह राठौड़, आर्यन पटेल व अन्य मौजूद थे। द्वारिकाधीश के दर्शन के लिए इटारसी, नर्मदापुरम, सोहागपुर, पिपरिया, बनखेडी व अन्य क्षेत्र के यात्री गए हैं।

अगले 15 घंटों में प्रदेश के कई जिले अत्यधिक भारी वर्षा के रेड अलर्ट पर

इटारसी देशबन्धु। आगामी 15 घंटे मध्यप्रदेश के कई जिलों में भारी बारिश वाले रहेंगे। मौसम विभाग के अनुसार 16 सितंबर 2023 की सुबह 08:30 बजे तक छिंदवाड़ा, सिवनी, रायसेन नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, बुरहानपुर, खरगोन जिलों में अलग-अलग स्थानों पर गरज और बिजली के साथ अत्यधिक भारी बारिश (कम से कम 204.4 मिमी) होने की संभावना है। इसी तरह से जबलपुर, नरसिंहपुर, मंदसौर, बालाघाट, सागर, टीकमगढ़, निवाड़ी, विदिशा, सीहोर, राजगढ़, बुरहानपुर, खंडवा, बड़वानी, अलीराजपुर, झाबुआ में अलग-अलग स्थानों पर आंधी और बिजली के साथ बहुत भारी बारिश होने की संभावना है। धार, इंदौर, में कल 16 सितंबर की प्रात: 0830 बजे तक रतलाम, उज्जैन, देवास, शाजापुर, आगरमालवा, मंडला जिले में 105.5 मिमी से 204.4 मिमी तक वर्षा होने की संभावना है। **यहां है रेड अलर्ट:-** मध्यप्रदेश मौसम विभाग ने छिंदवाड़ा, सिवनी, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, बुरहानपुर तथा खरगोन जिलों में अत्यधिक भारी वर्षा की संभावना जतायी है। यहां रेल अलर्ट जारी किया है। **आरेंज अलर्ट वाले जिले:-** जबलपुर, नरसिंहपुर, मंडला, बालाघाट, सागर, टीकमगढ़, निवाड़ी, विदिशा, सीहोर, भोपाल, राजगढ़, खंडवा, बड़वानी, अलीराजपुर, झाबुआ, धार, इंदौर, रतलाम, उज्जैन, देवास, शाजापुर, आगर और मंदसौर। **मध्यम से भारी वर्षा:-** सीधी, सतना, शहडोल, उमरिया, डिंडोरी, कटनी, पन्ना, दमोह, छतरपुर, नीमच, गुना, शिवपुरी, अशोकनगर, दतिया, भिंड, तथा श्योपुरकलॉ जिलों में मध्यम से भारी वर्षा का यलो अलर्ट है। **गरज-चमक की संभावना:-** सिंगरौली, रीवा, अनपूपुर, ग्वालियर तथा मुरैना जिलों में गरज-चमक के साथ वज्रपात की संभावना है। आगामी कुछ घंटों में पूर्वी मध्यप्रदेश में वर्षा की गतिविधियों में कमी आने की संभावना मौसम विभाग ने जतायी है। **यहां भी होगी वर्षा:-** भोपाल, नर्मदापुरम, इंदौर, जबलपुर, सागर संभागों के जिलों में तथा रतलाम, उज्जैन, देवास, शाजापुर, आगर जिलों में अधिकांश स्थानों पर, रीवा एवं शहडोल संभागों के जिलों में तथा मंदसौर, नीमच, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी जिलों में अनेक स्थानों पर, चंबल संभाग के जिलों में तथा ग्वालियर, दतिया जिलों में कुछ स्थानों पर वर्षा होने की संभावना जतायी है।

वंचित वर्गों के उत्थान प्रयासों में योगदान का किया आह्वान

राज्यपाल पटेल लंदन में अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित

भोपाल, देशबन्धु। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा है कि उत्कृष्ट एवं असाधारण कार्य का अभिनंदन ही मानवता के विकास का आधार है। मानव जीवन की बेहतरी के लिए सकारात्मक प्रयासों और उत्कृष्ट कार्यों की सराहना समाज की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा उत्कृष्टता के सम्मान की पहल मानव जाति की भलाई के लिए शांति और सद्भाव के प्रयासों को मजबूत करने का सराहनीय प्रयास है।

राज्यपाल श्री पटेल वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा लंदन में ब्रिटिश पार्लियामेंट आयोजित सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह में राज्यपाल श्री पटेल को अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संपूर्ण विश्व के सामाजिक, शैक्षिक, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण, आध्यात्मिक, पुरातात्विक, ऐतिहासिक, अनुसंधान और विकास और सांस्कृतिक गतिविधियों में अतुलनीय योगदान करने वाली 20 विशिष्ट विभूतियाँ सम्मानित हुईं। समारोह में राज्यपाल की पत्नी श्रीमती नर्मदाबेन पटेल, केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री रामदास अठावले भी उपस्थित थे।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा कि उत्कृष्टता के लिए किसी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि किसी भी क्षेत्र का उत्कृष्ट कार्य महान प्रयासों और दक्षता का परिणाम होता है, लेकिन व्यवहारिक जगत में उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए कीर्तिमानी प्रतिभाशाली लोगों को सम्मानित करना जरूरी है।

उत्कृष्ट कार्यों का सम्मान विजेताओं के उत्कृष्ट कार्यों के अनुसरण के लिए युवाओं और अन्य को प्रेरित और नये कीर्तिमान स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों के असाधारण कार्यों को मान्यता देना एक सराहनीय प्रयास है। श्री पटेल ने विश्व भर में उत्कृष्ट कार्यों की पहचान और उनका दस्तावेजीकरण करने के गहन प्रयासों के लिए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के पदाधिकारियों को बधाई दी। श्री पटेल ने सम्मानित विभूतियों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि वे गरीब एवं वंचित वर्ग के कल्याण के लिए निरंतर और बेहतर प्रयास करते रहेंगे। कार्यक्रम में मेम्बर ऑफ़ पार्लियामेंट यू.के. वीरेंद्र शर्मा, आध्यात्मिक नेता राज राजेश्वर गुरूजी, मनोविज्ञानी डॉ. दिवाकर सुकुल, अनुरुद्ध, डिप्टी मेयर लंदन राकेश अग्रवाल, वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स के प्रेसीडेंट संतोष शुक्ला, पुरस्कार विजेता एवं गणमान्य जन उपस्थित थे।

कमलनाथ ने फिर दोहराया, सर्वे के आधार पर ही तय होंगे प्रत्याशी

भोपाल, देशबन्धु। पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने एक बार फिर दोहराया है कि राज्य में कांग्रेस के उम्मीदवार सर्वे के आधार पर ही तय होंगे, पैराशूट वाला कोई नहीं होगा। अशोकनगर में पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि कोई पैराशूट नहीं होगा, जो दूसरी पार्टियों से कांग्रेस में आ रहे हैं, जब तक स्थानीय संगठन उन्हें स्वीकार नहीं करता है, तब तक कोई भी नहीं आता है। अभी जिन्होंने ज्वाइन किया, उनके साथ मंच पर हमारा स्थानीय संगठन भी बैठा था। स्थानीय संगठन को सबसे पहले उन्हें स्वीकार करना है। टिकट के लिए हमने सर्वे कराया है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने सर्वे कराया है, उसी हिसाब से टिकट दिए जाएंगे। राज्य की वर्तमान स्थिति का जिक्र करते हुए कमलनाथ ने कहा, हमारे सामने प्रदेश की तस्वीर है, ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं है कि भ्रष्टाचार की क्या सीमा है। आज भ्रष्टाचार का क्या रिकॉर्ड है। घोटाले का क्या रिकॉर्ड है, ये घोटालों की सरकार, आम जनता ने यह बात समझ ली है और पहचान लिया है। उन्होंने कहा कि आज मध्य प्रदेश का हर वर्ग परेशान है, हमारे नौजवान हों, किसान हों, छोटे व्यापारी हों। अस्पतालों की बात हो तो अस्पतालों में डॉक्टर नहीं, स्कूल में शिक्षक नहीं, खंभों में कहीं तार नहीं और तार में बिजली नहीं।

जनआशीर्वाद यात्रा में शामिल हुए केंद्रीय मंत्री तोमर ने कहा-

प्रदेश में भाजपा सरकार के आने से खुले विकास के रास्ते

भोपाल, देशबन्धु। केंद्रीय मंत्री एवं चुनाव प्रबंधन समिति के प्रदेश संयोजक नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि नवम्बर माह में चुनाव होगा और दिसम्बर में रिजल्ट आएगा। उन्होने मतदाताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि इतनी बारिश में आप सभी यात्रा के स्वागत के लिए आए और सभा में शामिल हुए इससे यह साबित हो रहा है कि छिंदवाड़ा की जनता निश्चित रूप से मध्यप्रदेश और केंद्र में सरकार बनाने के लिए भाजपा को अपना आशीर्वाद देगी और हम एक बार फिर स्पष्ट बहुमत वाली सरकार बनाने में सफल होंगे। विंध्य क्षेत्र की जन आशीर्वाद यात्रा के दौरान जुन्नारदेव में आयोजित रथ सभा को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि जी-20 की अध्यक्षता करना भारत के किए गौरव की बात है, जिसके कारण मोदी जी की लोकप्रियता का ग्राफ पूरी दुनियां में बढ़ता ही जा रहा है। इससे घबराकर ही विपक्षी दल एक हो रहे हैं, गठबंधन बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों का यह गठबंधन स्वार्थपूर्ति के लिए है और इस गठबंधन में बिखराव ही दिखाई देता है। इस दौरान श्री तोमर ने 20 साल पहले की कांग्रेस सरकार की कमियां गिनाई। उन्होंने कहा कि 2003 से पहले मध्यप्रदेश में हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा था। सड़कें खराब पड़ी हुई थी। पूरे प्रदेश का बड़ा बुरा हाल था। लेकिन जब से मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकार आई है, विकास के रास्ते खुल गए हैं। जहां भाजपा की सरकारें होती हैं, वहां विकास तो होता ही है। रथ सभा को सांसद उदयप्रताप सिंह एवं श्रीमती सुमित्रा वाल्मीकि ने भी संबोधित किया।

उपन्यास कीर्तिगान का सम्मान के लिए चयन

चन्दन पांडेय को स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान

नई दिल्ली, देशबन्धु। 15 सितंबर 2023 साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत संस्थान 'स्वयं प्रकाश स्मृति न्यास' ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्वयं प्रकाश की स्मृति में दिए जाने वाले वार्षिक सम्मान की घोषणा कर दी है। न्यास द्वारा जारी विज्ञप्ति में डॉ दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर के इस सम्मान में इस बार उपन्यास विधा के लिए सुपरिचित कथाकार चन्दन पांडेय के उपन्यास कीर्तिगान को दिया जाएगा।

सम्मान के लिए तीन सदस्यी निर्णायक मंडल ने सर्वसम्मति से इस संग्रह को वर्ष 2023 के लिए चयनित करने की अनुशंसा की है। निर्णायक मंडल के वरिष्ठतम सदस्य काशीनाथ सिंह (वाराणसी) ने अपनी संस्तुति में कहा कि यह उपन्यास एक युवा कथाकार की बड़ी संभावनाओं को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि उनका लेखन हमारे देशकाल के जटिल और मनुष्यविरोधी यथार्थ का सम्यक उद्घाटन करता है। निर्णायक मंडल के दूसरे सदस्य कवि-कथाकार राजेश जोशी (भोपाल) ने संस्तुति में कहा कि चन्दन पांडेय का गद्य लेखन स्वयं प्रकाश के सरोकारों और संकल्पों की याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि कहानी के बाद अपने दो उपन्यासों से चन्दन ने अपने लेखन की प्रतिबद्धता दर्शाई है। तीसरे निर्णायक कवि-गद्यकार प्रियदर्शन (दिल्ली) ने चन्दन पाण्डेय के उपन्यास कीर्तिगान की अनुशंसा में कहा कि हमारे समकालीन मुद्दों और विडम्बनाओं को यह उपन्यास सम्बोधित करता है।

डॉ अग्रवाल ने बताया कि मूलतः राजस्थान के अजमेर निवासी स्वयं प्रकाश हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में मौलिक योगदान के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने ढाई सौ के आसपास कहानियाँ लिखीं और उनके पांच उपन्यास भी प्रकाशित हुए थे। इनके अतिरिक्त नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और बाल साहित्य में भी अपने अवदान के लिए स्वयं प्रकाश को हिंदी संसार में जाना जाता है। उन्हें भारत सरकार की साहित्य अकादेमी सहित देश भर की विभिन्न अकादमियों और संस्थाओं से अनेक पुरस्कार और सम्मान मिले थे। उनके लेखन पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हुआ है तथा उनके साहित्य के मूल्यांकन की दृष्टि से अनेक पत्रिकाओं ने विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं। 20 जनवरी 1947 को इंदौर में जन्मे स्वयं प्रकाश का निधन कैंसर के कारण 7 दिसम्बर 2019 को हो गया था। लम्बे समय से वे भोपाल में निवास कर रहे थे और यहाँ से निकलने वाली पत्रिकाओं 'वसुधा' तथा 'चकमक' के सम्पादन से भी जुड़े रहे।

डॉ अग्रवाल ने बताया कि जनवरी में आयोज्य समारोह में उपन्यासकार चन्दन पांडेय को सम्मान में ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र और शॉल भेंट किये जाएंगे। इस सम्मान के लिए देश भर से बड़ी संख्या में प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई थीं जिनमें से प्राथमिक चयन के बाद पाँच उपन्यासों को निर्णायकों के पास भेजा गया। साहित्य और लोकतान्त्रिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए गठित स्वयं प्रकाश स्मृति न्यास में कवि राजेश जोशी (भोपाल), आलोचक दुर्गाप्रसाद अग्रवाल (जयपुर). कवि-आलोचक आशीष त्रिपाठी (बनारस), आलोचक पल्लव (दिल्ली), इंजी अंकिता सावंत (मुंबई) और अपूर्वा माथुर (दिल्ली) सदस्य हैं।

कांग्रेस की जनआक्रोश यात्रा 19 से, घर-घर बांटा जाएगा आरोप-पत्र

भोपाल, देशबन्धु। विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस 19 सितम्बर से जनआक्रोश यात्राएं निकालने जा रही हैं। इन यात्राओं के माध्यम से प्रदेश की ज्वलंत समस्याओं और चुनावी मुद्दों को उठाया जाएगा। हर विधानसभा क्षेत्र में नुक्कड़ सभाएं भी इस दौरान रखी जाएंगी। यात्रा की तैयारियों के मद्देनजर एक बैठक शुक्रवार को कांग्रेस महासचिव और राष्ट्रीय महासचिव और प्रदेश प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में एक बैठक आयोजित की। यात्रा प्रभारी, जिला अध्यक्ष, प्रभारी और संगठन मंत्रियों के साथ बैठक में उन्होंने पूरी एकजुटता के साथ काम करने की हिदायत दी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं के बीच जाकर उनसे सम्पर्क करें और भाजपा सरकार के खिलाफ कांग्रेस द्वारा जारी किए गए आरोप पत्र की प्रतियां बांटे। बैठक में इस जानकारी को साझा किया गया कि यह यात्रा एक साथ 7 स्थानों से शुरू होगी। यात्रा के जिम्मेदारों से यह भी कहा गया कि मंहगाई, बेरोजगार, भ्रष्टाचार और महिला अत्याचार और अजा, जजा सहित अन्य लोगों के उत्पीड़न के मुद्दों को मतदाताओं के समक्ष मुखर होकर तर्कपूर्ण ढंग से रखें।

सुरजेवाला बोले- भाजपा में दिख रही सिर फुटौव्वल

भोपाल, देशबन्धु। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव और प्रदेश प्रभारी प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ने कहा, भाजपा में सिंधिया को लेकर सिर फुटौव्वल हर रोज देखने को मिल रही है।' सिंधिया को कहा जाता है कि आप ग्वालियर-चंबल में मत जाइएगा। सुरजेवाला ने यहां मीडिया से कहा, राकेश सिंह को यात्रा का प्रभारी बनाकर 3 दिन से मंच पर चढ़ने की इजाजत नहीं दी जा रही है। उन्होंने इस दौरान वीडी शर्मा के बैरियर से कूदकर स्टेज तक आने की घटना यह दर्शाती है कि इनके नेता किस तरह से अपमानित हो रहे हैं। क्या यह नहीं दर्शाता कि भाजपा हार का मुंह सामने देखकर बौखलाई हुई है। वहीं सुरजेवाला के बयान पर सुरजेवाला का बयान सामने आने के बाद मंत्री विश्वास सारंग ने सुरजेवाला को चेतावनी भरे लहजे में कहा कि वे इस तरह की शब्दावली का उपयोग न करें।

चंद्रयान-1 के आंकड़ों का अध्ययन कर वैज्ञानिकों का दावा

चंद्रमा पर पानी बना रहे पृथ्वी के उच्च ऊर्जा वाले इलेक्ट्रॉन

नई दिल्ली/वॉशिंगटन, एजेंसी। चंद्रयान-1 के डेटा की स्टडी कर रहे अमेरिका की हवाई यूनिवर्सिटी के साइंटिस्ट्स ने दावा किया है कि पृथ्वी के हाई एनर्जी इलेक्ट्रॉन चांद पर पानी बना रहे हैं। ये इलेक्ट्रॉन पृथ्वी की प्लाज्मा शीट में हैं, जो मौसमी प्रक्रिया के लिए जिम्मेदार है, यानी इनके होने से ही पृथ्वी के मौसम में बदलाव होता है।

साइंटिस्ट्स का दावा है कि ये इलेक्ट्रॉन चांद पर मौजूद चट्टानों और खनिजों को तोड़ या घोल रहे हैं। इससे चांद के मौसम में भी बदलाव आ रहा है। नेचर एस्ट्रोनॉमी जर्नल में पब्लिश स्टडी में कहा गया कि इन इलेक्ट्रॉन्स ने चांद पर पानी बनाने में मदद की होगी। इससे पहले 2008 में लॉन्चिंग के बाद चंद्रयान-1 मिशन ने चंद्रमा की सतह पर पानी की मौजूदगी का संकेत दिया था। उस मिशन की एक रिसर्च के आधार पर चांद पर बर्फ होने का दावा किया गया था। इसके बाद साइंटिस्ट्स ने अनुमान लगाया कि चांद के पोलर रीजन में सूरज की रोशनी नहीं पहुंचने से वहां का तापमान -200 डिग्री सेल्सियस से नीचे हो सकता है, जो बर्फ के फॉर्म में पानी की मौजूदगी की ओर इशारा करता है। इसलिए पानी की खोज के लिए 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान-3 लॉन्च किया गया।

सौर हवाएं हो सकती हैं पानी का कारण

शोध के अनुसार सौर हवा जो प्रोटॉन जैसे उच्च ऊर्जा कणों से बनी है, चंद्रमा की सतह पर बमबार्डिंग करती है और इसे चंद्रमा पर पानी का प्रारंभिक कारण माना जा सकता है। टीम ने सतह के अपक्षय में परिवर्तन की जांच की क्योंकि चंद्रमा पृथ्वी के मैग्नेटोटेल से गुजरता है, एक ऐसा क्षेत्र जो सौर हवा से तो चंद्रमा को लगभग पूरी तरह से बचाता है लेकिन सूर्य के प्रकाश फोटॉन से नहीं। यूएच मनोआ स्कूल ऑफ ओशन के सहायक शोधकर्ता शुआई ली ने कहा, यह चंद्र सतह के पानी की निर्माण प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए एक आधार प्रदान करता है। चांद पर 14 दिन तक रात और 14 दिन तक उजाला रहता है। यानी 14 दिन ही यहां पर सूरज की रोशनी होती है। जब यहां सूरज की रोशनी नहीं होती तो सोलर विंड की बौछार होती है। इसी दौरान पानी बनने का दावा किया गया है।

हैदराबाद में जुटेंगे कांग्रेस नेता

- खड़गे, सोनिया, मनमोहन सिंह व राहुल गांधी समेत कई वरिष्ठ नेता होंगे शामिल
- लोकसभा व विधानसभा चुनावों की रणनीति पर होगा जोर

रंगारेड्डी/तेलंगाना, एजेंसी। कांग्रेस की नई कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की पहली बैठक शनिवार को होगी जिसमें आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर आगे की रणनीति, विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) की एकजुटता को आगे ले जाने, आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों तथा कई अन्य विषयों पर चर्चा होगी।

कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने सीडब्ल्यूसी बैठक की जानकारी देते हुए कहा हैदराबाद में पहली सीडब्ल्यूसी की बैठक करेंगे जिसमें आगामी चुनावों की तैयारियों पर चर्चा की जाएगी। 90 लोगों को आमंत्रित किया है, जिनमें से 84 लोग शामिल होंगे। कांग्रेस ने गत 20 अगस्त को अपनी कार्य समिति का पुनर्गठन किया था जिसमें पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के साथ पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और राहुल गांधी समेत कई वरिष्ठ नेता शामिल हैं। कार्य समिति में 39 सदस्य, 32 स्थायी आमंत्रित सदस्य और 13 विशेष आमंत्रित सदस्य शामिल किए गए हैं। इस कार्य समिति में सचिन पायलट और शशि थरूर जैसे नेताओं को पहली बार जगह मिली है।

विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर होगा मंथन

सूत्रों का कहना है कि कार्य समिति की बैठक में 'इंडिया' गठबंधन को और मजबूत करने को लेकर चर्चा हो सकती है। कार्य समिति की इस बैठक में कुछ महीने बाद पांच राज्यों-मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर भी मंथन होगा। कांग्रेस की कोशिश है कि इन राज्यों के विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करके लोकसभा चुनाव के लिए अपनी दावेदारी को और मजबूत किया जाए। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस कार्य समिति की इस बैठक में महंगाई, बेरोजगारी, अर्थव्यवस्था की स्थिति, चीन के साथ सीमा पर तनाव और कथित भ्रष्टाचार के मुद्दों पर सरकार को घेरने की रणनीति पर भी चर्चा हो सकती है। सूत्रों ने यह भी बताया कि 'भारत जोड़ो यात्रा के दूसरे चरण को लेकर भी इस कार्य समिति में चर्चा हो सकती है। माना जा रहा है कि कार्य समिति की बैठक, जनसभा और मार्च के जरिए कांग्रेस तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिए अपने प्रचार अभियान का विधिवत आगाज करेगी। राज्य में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित है। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक ऐसे समय होने जा रही है जब उसने और दो दर्जन से अधिक विपक्षी दलों ने मिलकर विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' का गठन किया है। 'इंडिया' के घटक दलों ने फैसला किया है कि वे अगला लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ेंगे और जहां तक संभव हो सकेगा सीटों पर तालमेल करेंगे।

तेलंगाना के लिए पांच गारंटी के साथ रैली

बैठक के बाद हैदराबाद के पास कांग्रेस की एक विशाल रैली होगी, जहां तेलंगाना के लिए पांच गारंटी की भी घोषणा की जाएगी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सीडब्ल्यूसी सदस्यों, पीसीसी अध्यक्षों और सीएलपी नेताओं के काफिले को भी हरी झंडी दिखाएंगे जो तेलंगाना के 119 विधानसभा क्षेत्रों में से प्रत्येक का दौरा करेंगे। 18 सितम्बर को कांग्रेस कार्यकर्ता बीआरएस सरकार के खिलाफ अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में घर-घर अभियान चलाएंगे। नेता प्रभावशाली लोगों के साथ सामुदायिक दोपहर के भोजन में भाग लेंगे, जिसके बाद भारत जोड़ो मार्च होगा। रेवंत रेड्डी ने पहले पार्टी के लिए अधिकतम प्रचार हासिल करने के लिए हैदराबाद में कार्यक्रम आयोजित करने की वकालत की थी, जब उसे भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के 9 साल के शासन के बाद वापस आने की बेहतर संभावनाएं दिख रही हैं। कांग्रेस को आंतरिक सर्वेक्षणों पर भरोसा है, जिन्होंने उसके लिए बहुत सकारात्मक तस्वीर पेश की है, जबकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने पिछले चार महीनों में लोकप्रिय समर्थन में गिरावट देखी है, खासकर प्रदेश अध्यक्ष बंदी संजय के बदलाव के बाद। उनके प्रतिस्थापन से पार्टी कैडर में गलत संकेत गया, जो अब महसूस करते हैं कि बीआरएस पर हमला करने में पार्टी की मारक क्षमता गायब है।

इन विषयों पर होगी चर्चा

कांग्रेस कार्य समिति की बैठक 16 सितम्बर को होगी और फिर इसके अगले दिन विस्तारित कार्य समिति की बैठक होगी। विस्तारित कार्य समिति की बैठक में कार्य समिति के सभी सदस्यों के अलावा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और कई अन्य वरिष्ठ नेता भाग लेंगे। कार्य समिति की बैठक के बाद 17 सितम्बर को हैदराबाद के निकट एक जनसभा भी होगी जिसे पार्टी के शीर्ष नेता संबोधित करेंगे। सूत्रों का कहना है कि इसमें आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सरकार को घेरने की रणनीति, विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' की एकजुटता को आगे ले जाने, संगठन को मजबूत करने तथा कई अन्य विषयों पर चर्चा होगी।

ग्रेटा नोएडा में बड़ा हादसा

निर्माणाधीन इमारत की लिफ्ट गिरी, 4 की मौत

ग्रेटर नोएडा, देशबन्धु। बिसरख कोतवाली क्षेत्र के ड्रीम वैली प्रोजेक्ट ग्रेनो वेस्ट में शुक्रवार को सुबह निर्माणाधीन बिल्डिंग में पैसेन्जर लिफ्ट गिरने से उसमें फंसे 9 लोग गम्भीर रूप से घायल हो गए जिनमें से चार मजदूरों की उपचार के दौरान मौत हो,जबकि पांच व्यक्तियों का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है।

मरने वालों में इस्ताक अली पुत्र इरशाद अली निवासी ग्राम फतेहजोर बिसरोलिया थाना बलरामपुरजिला बलरामपुर बिहार उम्र 23 वर्ष, अरुण तांती मंडल पुत्र रुदल मंडल निवासी हुश्यारी थाना खौसी जिला बांका बिहार उम्र 40 वर्ष, विपोत मंडल पुत्र दीनू मंडल निवासी ग्राम भागूडीह थाना अहमदाबाद जिला कटिहार बिहार उम्र 45 वर्ष और आरिस खान निवासी गांव सियाली जागीर थाना हसनपुर जिला अमरोहा उम्र 22 वर्ष।

घायल होने वालों में असुल मुस्तकीम निवासी बिहार, अब्दुल मुस्तकीम, कुलदीप पाल पुत्र जसरथ पाल निवासी ग्राम दीपकपुर जिला थाना छिबरामऊ कन्नौज उम्र 20 वर्ष, कैफ निवासी गांव अजराना जिला मेरठ, अरबाज अली निवासी गांव सियाली थाना हसनपुर जिला अमरोहा। दुर्घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस और प्रशासन के आला अधिकारियों में हड़कंप मच गया। जिसके बाद पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर घटनास्थल पर पहुंचकर जांच में जुटी हुई है। काम करने वाले मजदूर निर्माण सामग्री के साथ ऊपर से नीचे की तरफ जा रहे थे। इसी दौरान अचानक लिफ्ट टूट गई। अचानक हुए हादसे से लिफ्ट में सवार चारों मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए। उधर, हादसा होते ही मौके पर अफरा-तफरी मच गई। वहां मौजूद अन्य कर्मियों ने सूचना पुलिस और सोसाइटी वालों को दी। जिसपर ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण के सीईओ रवी कुमार एनजी, डीएम मनीष कुमार वर्मा और पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंच गए। फ्लिहाल पुलिस निर्माणाधीन इमारत में लिफ्ट के टूटने की वजह का पता लगा रही है।

योगी ने घटना पर जताया दुख

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना पर शौक जताया और जिलाधिकारी मनीष वर्मा को आदेश दिए हैं की मामले की जांच करें और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर में दर्ज एफआई पर बढ़ाई सुरक्षा

एडिटर्स गिल्ड के 4 सदस्यों को राहत

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर के एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के चार सदस्यों की गिरफ्तारी पर दो हफ्ते तक रोक लगा दी। इस मामले में शुक्रवार 15 सितम्बर को सुनवाई हुई। साथ ही कोर्ट ने शिकायतकर्ता से जानना चाहा कि एडिटर्स गिल्ड के सदस्यों के खिलाफ समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने का अपराध कैसे बनता है। एडिटर्स गिल्ड ने छह सितम्बर को सुप्रीम कोर्ट से दंडात्मक कार्रवाई से सुरक्षा की मांग करते हुए याचिका दायर की थी। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला, जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच सुनवाई कर रही है।

एफआईआर रद्द कराने की मांग

मणिपुर सरकार ने एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के सदस्यों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। इसी को लेकर एडिटर्स गिल्ड ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। ईजीआई ने अपने सदस्यों के खिलाफ दर्ज कराई गई एफआईआर रद्द कराने की मांग की थी। बता दें कि हाल ही में एडिटर्स गिल्ड ने दावा किया था कि मणिपुर की जातीय हिंसा पर एक पक्षीय मीडिया रिपोर्टिंग हुई है। साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री पर पक्षपात करने का भी आरोप लगाया। एडिटर्स गिल्ड के जिन सदस्यों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है, उनमें एडिटर्स गिल्ड की अध्यक्ष सीमा मुस्तफा और तीन सदस्य सीमा गुहा, भारत भूषण और संजय कपूर का नाम शामिल है। सीमा गुहा, भारत भूषण और संजय कपूर ने बीते हफ्ते मणिपुर का दौरा कर यहां हुई मीडिया रिपोर्टिंग का अध्ययन किया था। वहीं, एडिटर्स गिल्ड के सदस्यों की रिपोर्ट को मणिपुर सरकार ने फर्जी और स्पॉन्सर बताया था। एफआईआर में बताया गया कि रिपोर्ट में गलत तथ्य बताए गए। जुलाई में भी मणिपुर सरकार ने तीन महिलाओं के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की थी। इन महिलाओं की फैक्ट फाइंडिंग टीम ने भी राज्य में जारी हिंसा को सरकार द्वारा स्पॉन्सर बताया था।

मणिपुर में अब तक 175 की मौत, 1108 जख्मी

मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदाय के बीच तीन मई से हो रही सामुदायिक हिंसा में अब तक 175 लोगों की मौत हो चुकी हैं। राज्य में 1108 घायल हैं, 32 अभी भी लापता है, जबकि 96 लावारिस लाशें शवगृह में रखी हैं। इंफाल में शुक्रवार को यह जानकारी दी।

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए गिरिराज चाचा द्वारा श्री सिद्धि विनायक प्रिंटर्स, प्लाट नं. 26 बी देशबन्धु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल म.प्र. 462011 से मुद्रित एवं प्रकाशित, संपादक: पलाश सुरजन, कार्यकारी संपादक: ज़ाकिर अली* फोन 0755-4222971, ई-मेल deshbandhubpl1@yahoo.co.in प्रेस पंजीयन-प.स. 45096/85 * समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।